राष्ट्र मंदिर

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए

राष्ट्र मंदिर

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

राष्ट्र मंदिर

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ISBN: 978-93-5680-575-0

दाम : 300 रूपया

पहिल संस्करण :2022

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

राष्ट्र मंदिर

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य स्वर्गीय प्रो.(डा.)जयकान्तमिश्रक स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

आभार

हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत ।

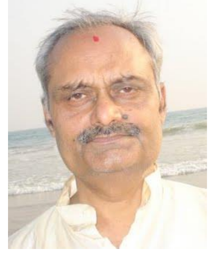
हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल।

हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ) सेवानिवृत्त प्राध्यापक,आर.एम.कालेज सहरसाक अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

15/08/2022



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६९ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृत्ति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निवंध), ३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग), ४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह) ५. `नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध) ७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)
११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

22. राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

In English: -
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

राष्ट्र मंदिर

1

गामसभसँ थोड़बे फटकी बागमतीक धार छल । धारकेँ ओहिपार जेबाक हेतु बनाओल गेल कठपुलिआसँ जेना-तेना लोक ओहिपार चलि जाइत छल । कठपुलिआक ओहिपार आमक बड़का-बड़का गाछीसभ छल । आम,जामुन,कटहर, ततेक फरैत छल जे लोकसभ अपने तँ खेबे करितए,आसपासक लोकसभकेँ सेहो कोनो कमी नहि रहि जाइक । तकर बाद अबैत छल इलाकाक दूटा प्रमुख गाम-धीरपुर आ नाजिरपुर। दुनूगामक बीचमे मोसकिलसँ आधा माइलक दूरी रहल होएत ।

धीरपुर आ नाजिरपुर गामक चारूकात प्रकृतिक सौंदर्य देखैत बनैत छल । बीघाक-बीघा तरह-तरहक तरकारीक खेती होइत छल । खेतीक हेतु पानिक व्यवस्था बहुत वैज्ञानिक ढ़गसँ कएल गेल छल। वर्षा होअए,नहि होअए मुदा ओहि इलाकामे किसानसभकेँ खेतीक हेतु पानि भेटिए जाइत छलनि । एहिमे हिमेश बाबूक जबरदस्त योगदान छल । चारूकात पानिक नाला बनाओल गेल छल । पातालसँ पानि निकालबाक हेतु आधुनिक चापाकलसभ धँसाओल गेल छल । ई बात सही छैक जे बेसी जमीन हुनके छलनि ,मुदा यदि बीचमे अनको जमीन रहैक तँ ओकरो पानि भेटबे करितए । ओकरो जमीनमे खाद देले जाइत । परिणामतः छोटो-छोटो किसानसभ सुखी छल । ककरो अन्न-

वस्त्रक कष्ट नहि रहैत छलैक । सालमे तीन फसिल होएब तँ आम बात छल । किसानसभ फाजिल उपजकेँ हाटपर बेचि लैत छल । ताहि एबजमे टाका भेटि जाइत छलैक जाहिसँ पारिवारिक आवश्यकताक हेतु ककरो मुँहतक्की नहि होइत छलैक ।

दुनूगाममे बहुत सौहार्दपूर्ण संबंध रहैक। दुनूगामक लोक साँझमे धारक कातमे जमा होइत । गप्प-सप्प करैत। कनीके हटिक चाह-पानक दोकान रहैक । जकरा मोन होइक चाहो-पान करए । निचैन आपसमे बतिआइत । रातिमे जखन आठ बजैक तखन सभ अपन-अपन घर वापस चलि जाइत।

दुनूगाममे सभधर्मक,सभ जातिक लोकक बास छल । धीरपुरक लोकक बहुत रास जरूरति नाजिरपुरगामक लोक पूरा करैत छल । तहिना नाजिरपुरक लोक धीरपुर गामक बिना जीबाक कल्पनो नहि कए सकैत छल । दुनूगामक लोक एक-दोसरक पाबनिमे हर्षपूर्वक भाग लैत छल । जखन नाजिरपुरसँ दाहा धीरपुर गामक सड़कपर पहुँचैत छल तँ सौंसे गामक लोक बेराबेरी अपन-अपन कबुलाक बद्धी चढ़बैत छल। यथासाध्य चंदा सेहो दैत छल। चौबटिआपर कैकगामक दाहासभक मिलान होइत छल । तकरबादसभ दाहा धारक ओहिपार बनल गेनखेलीक मैदानमे जमा होइत छल । की हिन्दू,की मुसलमान सभ ओहिमे अपन्-अपन जोरक अजमाइस करैत छल,लाठी भजैत छल । साँझमे लाइ-मुरही,झिल्ली,जिलेबी कीनि गाम वापस चलि जाइत छल ।

सएह हाल फगुआ दिन रहैत छल । नाजीरपुर,धीरपुरक लोक तँ ओहिदिन अबिते छल,आन-आन गामक लोकसभ सेहो एकठ्ठा भए जाइत छल । तकर बाद शुरु होइत होली समारोह । कठपुलिआक ओहिपार मैदानमे कैक गामक लोक जमा भए

जाइत छल । जाँति-पाँति के पुछैए? जे चाहए जकरा रंग,अबीर लगा दितए । तरह-तरहक हँसी-ठठ्ठा तँ होइते रहए । डाफक थापपर पर नचैत लोकसभ जोगिरा गबितए-

"जोगीजी सर र र ...सर र र... । नब्बे मनकेँ कछुआ गिद्ध लेइ उड़ि जाइ...सर र..र.... । तरह तरहक फकरासभ सुनबामे अबैत । के कोन हालमे छल से के देखैत? गरीब-अमीरसभ पीने बुत्त । जे नहिओ पीबैत छल सेहो जेना फगुआ दिन निसाँमे स्वतः माति जाइत छल । ओहिठाम घंटो चलैत एहि कार्यक्रमक समापन हिमेश बाबूक दरबाजापर होइत छल ।

पहिने नाजिरपुरोमे मुसलमानक अतिरिक्त आनो जातिक लोकसभ रहैत छल । गामक शुरुएमे डोमसभक घर छल। ओ सभ दिनराति अपन काजमे लागल रहैत छल। जखन जे कहलक तकरा लेल बाँसक समानसभ बना दैत छल। कनीक आओर आगू बढ़लापर दूटा तेली जातिक लोकक घर रहैक । ओ सभ शुद्ध तेल पेरि इलाकाक लोकसभकेँ बेचैत छल । गामक अंतमे धोबी रहैत छल । तकरबाद मस्जिद रहैक , टुटल-फूटल । मुदा बहुत श्रद्धासँ मुसलमान लोकनि ओहिमे नमाज पढ़थि । कैकटा मुसलमान संतसभसँ इलाकाक लोकसभ झरबैत छल , भूत बाधासँ मुक्ति पबैत छल ।

हिमेश बाबूक पिताक बनाओल इसकूलमे ओहि इलाकाक लोकक बच्चासभ पढ़ैत छल। धीरपुर,नाजिरपुरक बच्चासभ तँ जाइते छल । संगहि दू-तीन कोस फटकीसँ सेहो बच्चासभ ओहि इसकूलमे पढ़ैत छल । इसकूलक पढ़ाइ आ अनुशासनक चर्चा दूर-दूर धरि होइत छल । ताहिमे हिमेशबाबूक सेहो बहुत योगदान रहनि । ओहि इसकूलमे जकर नाम लिखा गेल

तकरा फेर कोनो वस्तुक कहिओ अभाव नहि रहैत छल । कोनो गरीब विद्यार्थीकेँ इसकूलक फीस नहि लगैत छल । इसकूल अएलाक बाद दिनुका भोजन छात्रावासक मेसमे निःशुल्क भेटि जाइत छलैक । किताब-काँपीसभ मंगनीमे भेटि जाइत छलैक । ततबे नहि,यदि केओ मेधावी विद्यार्थी रहथि,तिनका आगूक शिक्षाक हेतु सभटा प्रवंध सेहो कएल जाइत छलनि । एहिसभक व्यवस्था हिमेश बाबूक पिता एकटा ट्रस्ट बना कए कए गेल रहथि। संयोगसँ हिमेश बाबूकेँ सेहो बहुत उदारवादी रुखि रहनि । ओ इसकूलक व्यवस्था आओर नीक करबाक प्रयास करैत रहलाह । इसकूलक नाम बढ़ैत रहल । लगपासक लोकक संतानसभ गामेमे नीक इसकूली शिक्षा प्राप्त कए लैत छल । जाहिसँ ओकरसभक भविष्य बहुत नीक बनि जाइत छलैक । परिणाम भेल जे धीरपुर गाममे डाक्टर,इंजिनीयर,अफसरसभ भरि गेल । गामक संपन्नतामे निरंतर श्रीवृद्धि होइत रहल ।

अफसोचक बात जे नाजिरपुर गामक नेनासभ एहि सुविधाक उचित फएदा नहि उठा सकल । तकर कैकटा कारण छल। एक तँ नाजिरपुरक बासीलोकनिक परिवारमे जनसंख्या बहुत छलैक । सरकार कतबो प्रचार करए मुदा ओकरासभपर कोनो असरि नहि पड़लैक । ओ सभ एतबे कहितए जे ई सभ ऊपरबलाक मरजीसँ होइत छैक । एक-एक आदमीकेँ तेरह-तेरहटा बच्चा रहैक। ककरो-ककरो तँ बीसोटा आ ओहूसँ बेसी । सौंसे गाम लगैत जेना बच्चासँ भरल अछि । माए-बापक जन्म देबाक अतिरिक्त आओर कोनो मतलब नहि रहि जाइक । परिवारक आर्थिक स्थिति ततेक खराब रहैत छलैक जे ओहि बच्चासभकेँ पालन-पोषण करबाक कोनो व्यवस्था नहि भए पबैक । नान्हिटा बच्चासभ

चरबाही करैत,केओ बकरी चरबैत,केओ खेतमे काज करैत । सभगोटे गामेमे ओझराएल रहितए ।

2

हिमेश बाबू इलाकाक मानल जमिंदार छलाह । हुनकर जमीन कैकगाममे पसरल छलनि । हिमेश बाबूक बागीचाक की वर्णन कएल जाए? साइते कोनो एहन फल होएत जे ओतए नहि रहैक । जतए कतहु कोनो नव गाछ भेटितनि ओ अपन बगीचामे जरूर लगबितथि । हुनकर कर्मचारीसभ दिन-राति ओहि बगीचामे काज करिते रहैत छल । करवनहु काल ओ अपनहु बगीचामे घुमि जाइत छलाह । बगीचाक बीचो-बीचमे विश्रामालय बनल छल, जतए कहिओ -कहिओ ओ सभ सपरिवार विश्राम करैत छलाह ।

चारूकात पसरल एतेक संपत्ति हिमेश बाबू असगर कतेक सम्हारि सकितथि? तेँ सभगाममे किछुगोटे हुनकर प्रतिनिधि जकाँ काज करैत छल । हुनकर ई प्रयास रहैत छलनि जे अन्न बिना ककरो प्राण नहि जाइक । भुखल केओ नहि सुतए । ककरो पाहुन कष्टमे नहि रहैक । राति-बिराति जे केओ हुनका लग जाइत ओकरा सभटा ओरिआन भए जाइत छलैक । सोचल जा सकैत अछि जे हिमेश बाबूक की प्रतिष्ठा रहल होएत? लोकसभ हुनका कतेक मानैत रहल हेतनि ?

हिमेश बाबू बेर-कुबेर अपन खजाना खोलि दैत छलखिन। फगुआ-दीयाबातीमे तँ खास कए ओ बहुत उदारतापूर्वक सभक स्वागते नहि करैत छलाह अपितु, सभकेँ उत्तम भोजन करबैत छलाह आ तकर बाद सभकेँ किछु-ने-किछु बिदाइ सेहो भेटिते

छलैक । ई परंपरा हुनकर खानदानमे बहुतदिनसँ आबि रहल छल । बादमे जखन जमीनदारी व्यवस्था समाप्त भइओ गेल तखनहु ओ अपन कौलिक परंपराक निर्वाह करिते रहलाह । सभ पाबनि ओहिना मनाओल जाइत रहल । गाम-गामक लोक ओहिना करमान लगैत रहल । हिन्दू-मुसलमानसभ भाइ-भाइ जकाँ एकहिठाम बैसि कए नचैत,गबैत । ककरो कोनो पाबंदी नहि रहैत छलैक ।

देश स्वतंत्र भेलाक बाद समाजमे बहुत तरहक परिवर्तन भेलैक । जमींदार सभक जमींदारी चलि गेलैक । बहुत रास जमीन बिका गेलैक । पैघ-पैघ जमींदारसभ फुटहा फाँकि कए गुजर करए लगलाह । ओहूमे जिनकर बच्चासभ पढ़ि लिखि सहरमे काज पकड़ि लेलक,हाकिम भए गेल,किंवा नेतागिरी लाइन पकड़ि एमएलए,एमपी भए गेल तकरसभक धाख तँ बनल रहि गेलैक । मुदा बँकिएक स्थिति गड़बड़ाइते चलि गेलैक । कारण आदति रहि गेलैक पूरनके आ आमदनीक कोनो आधार नहि रहि गेलैक । चास-बास बिका गेलैक । मुदा किछुगोटेक हालतिमे बहुत तीव्रतासँ सुधार भेलैक । कैकगोटे एम.एल.ए,एम.पी.,कलक्टर,एस.पी बनि गेल । गाम-गाम नव कोठा बनए लागल । जकरा किछु नहि छलैक,जकर कोनो मोजर नहि रहैक से सभ बाबू कहबए लागल ।

एहि तरहें समाजमे बहुत उठा-पटक भेलैक । तकर प्रभाव सभक जीवनपर पड़लैक । आपसी संबंधपर पड़लैक । लोकसभक सोच-बिचार बदलए लागल । नाजिरपुरमे तँ पहिनोसँ बेसी पढ़ल-लिखल लोक नहि छल । ओकरसभक जीविकाक श्रोत तँ हिमेश बाबू आ ओहने-ओहने धकगर लोकसभ छलाह जे आब स्वयं दिन गनि रहल छलाह । तेँ ओसभ जीविकाक हेतु सहरक रस्ता

पकड़लक । ओतए केओ जूता पालिस करए,केओ साइकिल मरम्मति करए । एहि तरहें ओकरसभक गुजर भए जाइक । सहरसँ संपर्क बढ़लासँ किछु गड़बड़ी सेहो होबए लागल । किछुगोटे चोरी-चकारी सेहो करए लागल । केओ-केओ कुसंगतिमे पड़ि कए समाजविरोधी गतिविधिमे सेहो लागि गेल ।

जँ जँ समय बीतैत गेल, गाममे बहरिआ लोकक आवागमन बढ़ैत गेल । बाहरी लोकसभ आबि-आबि गामक माहौल बदलि देलक ।

3

ओहने समयमे इलाकामे सलीम ऊपर भेल। ओकर पिता नाजिरपुर गामेमे लटगेनाक दोकान करैत छल । ओकरा चौदहटा संतान छलैक । पारिवारिक कारणसँ सदिखन मोन औंट तँ रहबे करैक । एकदिन कोनो बातपर ओकर बाप सलीमकेँ दूचमेटा मारि देलकैक । एहन मारि धिया-पुताकेँ लगिते रहैत छलैक । बच्चाकेँ यदि कोनो गलती नहिओ अछि तखनो ओकर पिटाइ भए जाइ,किएक तँ ओकर माए-बापक मोन बेचैन रहैक । कोनो परेसानी होइक तकर इलाज बच्चेपर भए जाइक । बात फेर सामान्य भए जाइक । मुदा सलीम ओहिदिन मारि खा कए घरसँ भागि गेल । कतए गेल,कहाँ गेल कोनो पता नहि चललैक । बहुत दिनक बाद जखन ओ वापस आएल तँ ओ दोसरे रूपमे छल । कहि नहि कतएसँ ओकरा टाकाक वर्षा होइत छलैक । सलीम देखिते-देखिते बेस धनीक भए गेल । अबिते देरी गाममे दस कठ्ठा जमीन

कीनि बड़ीटा घर बनओलक । ओकरा मोनमे सहरक बड़का घरसभ गड़ल रहैक । ओ सदिखन सोचैत रहैत-

"हमरो जे एहने घर होइत?"

आ से ओ जेना-तेना कइए लेलक । आब गाममे ओतेकटा घर ककरो नहि रहैक ।

बात एतहि नहि रूकल । सलीम गाम लगक सहर राधानगरमे जमीन कीनए लागल। शुरुमे तँ लोकसभ एहिसभपर ध्यान नहि देलक । मुदा जखन सालक-साल ओ राधानगरक जमीन कीनिते चलि गेल तँ लोकक कान ठाढ़ भेलैक । किछुगोटे एमहर-ओमहर करबाक प्रयासो केलक । मुदा ताबे तँ सलीम बहुत शक्ति संपन्न भए गेल छल । नीचाँसँ ऊपर धरि ओकर वर्चस्व स्थापित भए गेल रहैक । केओ किछु बिगाड़ि नहि सकल । सलीमक प्रभुता बढ़िते गेल । जे कोनो नव जमीन-मकान बिकाइत,ओहिपर सलीम अपन आदमीकेँ लगा दैत आ जेना-तेना ओकरा कीनि लैत । थोड़बे दिनमे लगैक जेना सौंसे राधानगर ओकरे छैक।

"जे दाम लेबह से लएह, मुदा जमीन सलीमेकेँ हेबाक चाही ।"

ई बात ओकर सिपहसलारसभ कहैक । सलीमक प्रभुत्व बढ़लासँ नाजिरपुर गामक लोकक माथा सेहो पलटए लगलैक । सभकेँ होइक जे सलीमक संपत्ति ओकरे छैक । भले ओकरा फएदा होइ वा नहि होइ । आ फएदा होइ कोना नहि?

नाजीरपुरक जे केओ आन सहर चलि गेल छल,सलीमसभकेँ वापस अपना लग बजा लेलक । सभकेँ रस्ताक रेल किराया सेहो ओएह देलकैक । ओकरासभकेँ राधानगरमे

रहबाक ओरिआन,खेबाक ओरिआन सेहो ओएह कए देलकैक । ततबे नहि,ओकरासभकेँ अपना ओहिठाम कोनो-ने-कोनो काजो धरा देलकैक जाहिसँ सभकेँ मासिक आमदनी होमए लगलैक ।

राधानगरेमे ओकरा ततेक असार-पसार छलैक जे एहिठाम रहलापर भरिदिन ओकरे सोझराबएमे लागल रहए । कैकटा इसकूल,कालेज,अस्पताल आ आब तँ सुनैत छी मेडिकल कालेजो खोलि लेने छल । स्थानीय लोकसभ ओकरासँ उपकृत छल । कतेको लोककेँ ओ अपन संस्थासभमे नौकरी देने रहैक । ततबे नहि,मुँहगर लोकसभकेँ अपन कब्जामे लेबाक हेतु ओकरासभक मनमाफिक चीज-वस्तु दए दैत छलैक । कर्मचारीसभकेँ घर बनबए लेल एककठ्ठा जमीन देने रहैक । बिना सूदिक गृहऋण देने रहैक। बहुत हल्लुक किस्तमे ओकरा सधेबाक रहैक । तेहन व्योंत केने छल जे भरि जिनगी ओ सभ एकर चाङुरमे फँसल रहि जाइक । समय-समयपर दरमाहासे बढ़ा दैक । ओकरसभक नेनासभकेँ अपन इसकूलमे निःशुल्क शिक्षाक ओरिआन कए देने रहैक । एहनमे केओ किएक ओकर संग छोड़ैत । सभ पूर्ण निष्ठासँ ओकर संस्थासभमे काज करैत छल आ संतुष्टो छल ।

जखन सलीमक आर्थिक स्थितिमे चमत्कारिक परिवर्तन भेल आ ओ अपन धंधामे बहुत व्यस्त रहए लागल तँ परिवारक हेतु ओकरा साइते समय रहैक । घरक सभटा काज मनेजर देखैत छल। मनेजर संगे आओर नौकर-चाकर सेहो लगले रहैत छल ।

मनेजर देखबामे पहलबान सन हृष्ट-पुष्ट छल । बेस नमगर-पोरगर धुआ रहैक । सदिखन हाथमे एकटा लाठी रखबे करए । बेस घनगर मोछ रखैत छल । ठेहुन धरि धोती आ हाफ कमीज पहिरए । ओकर पिता सेहो नामी पहलबान रहथि । कैकबेर

डंकाक चोटपर कुश्ती जितने रहथि । मनेजर पढ़बा लिखबामे भुसकौल छल । मुदा रहए बहुत चौकस लोक । कोनो समस्याक धर दए समाधान करितए । ओकर एही गुणसभसँ प्रभावित भए सलीम ओकरा अपन मनेजर बना लेलक । अनका प्रतिए ओ जेहन रहल होअए मुदा सलीमक प्रति ओकर निष्ठा अटूट छल । यदि दूपहर रातिमे सलीम ओकरा कोनो काज अढ़ा दितैक तँ ओ से करबाक हेतु सहर्ष तैयार भए जइतए । कोनो अगर-मगर नहि करितए। तेँ सलीम ओकरापर बहुत विश्वास करैत छल । मुदा मनेजर बनलाक बाद ओ नसेड़ी भए गेल । लोकसभक काज करबा दितए आ तकर एबजमे एक बोतल दारू चाहबे करी । जे से नहि केलक तकर बनलो काज ओ बिगाड़ि दैत छल ।

गामसँ केओ-ने-केओ अबिते रहैत छल । ककरो किछु चाही तँ ककरो किछु । बेसीगोटे वा तँ टाका लेबाक हेतु अबैत छल वा अपन बेटाक नौकरीक हेतु । सलीम ककरो निराश नहि करैक। ओ मनेजरकेँ सख्त चेतौनी देने रहैक –

“ककरो खाली हाथ नहि लौटेबाक छैक । यथासंभव प्रयास कएल जाए जे लोक, खास कए नाजिरपुर गामक लोक केओ निराश नहि होअए ।”

सलीमक ओहिठाम लोकक करमान लगले रहैत छल । एहि भीड़मे कैकबेर गलत आदमीसभ सेहो ओकर कारबारमे सामिल भए गेल । एहि कारणसँ ओकर कारबारोपर प्रतिकूल प्रभाव पड़ल । कैकबेर गलत काज केनिहारसभ पकड़लो गेल । मुदा सलीम ओकरासभकेँ डाँटि कए छोड़ि दैत ,ककरो नौकरीसँ नहि हटबैत । एहि तरहें नाजिरपुरक लोकसभक स्थितिमे चमत्कारिक परिवर्तन भेलैक । मुदा ताहि संगे बहुत रास अधलाह

बातसभ सेहो होमए लगलैक जे ओहि इलाकामे कहिओ नहि सुनल गेल रहैक ।

4

असलमे दुनू गेनखेलीक मानल खेलाड़ी छलाह । सलीम आ हिमेश बाबू जखन गेन पकड़ि लेथि तकर बाद ककर मजाल जे हुनका दुनूगोटेक बीचमे पैसि सकत । सौंसे मैदानमे दर्शक थपड़ी पिटए लगैत छल । दुनूगोटेक आपसी तालमेलक प्रशंसा करैत लोक थकैत नहि छल । हिमेश बाबूक अवगुण छल जे ओ गेन लए अपने लग घुरिएने रहतथि । ककरो गेन देबे नहि करतथि । एतबहिमे गेन हुनकासँ छिना जानि । एहि तरहें बनैत खेल खराब भाए जाइत छल । मुदा सलीम गोल करबामे माहिर छल । यदि ओकरा गेन पकड़ा गेल तँ गोल हेबे करत । तेँ विरोधीसभ सलीमसँ बहुत डराइत छल । क्रमशः हिमेश बाबू आ सलीम इलाकाक नामी खेलाड़ीमे गनल जाए लगलाह। सभ केओ दुनूगोटेक चर्चा करैत । जहिआ कहिओ गेनक मैच होइत लोकसभ सभसँ पहिने हिनकेसभकेँ तकैत । यदि ई दुनू जोड़ी मैदानमे पहुँचि गेल तँ बूझि लिअ जे खेल जमि गेल ।

ओहिदिन साँझमे हिमेश बाबूक घर दिस हम जाइत रही तँ ओ हमरा इसारा कए बजओलथि । साँझ पड़ैत रहैक । हमरा किछु जरूरी काजसँ अपन घर वापस जेबाक रहए । मुदा हुनकर आग्रह कोना टारल जा सकैत छल । हम सहटि कए हुनका लग पहुँचि गेलहुँ । हम हिमेश बाबू लग पहुँचले छलहुँ कि ओ भोकासी

पाड़ि कए कानए लगलाह । रच्छ भेल जे तखन लगपासमे आओर केओ नहि छल। हमरा बूझेबे नहि करए जे बात की छैक ? एकाएक हिनका की भए गेलनि जे एना बच्चा जकाँ कानि रहल छलाह । हम चुप्पे रहि गेलहुँ । फेर ओ कनीकालमे अपने शांत भेलाह । हम दुनूगोटे ओसारापर राखल चौकीपर बैसलहुँ । ओ कहए लगलाह-

“पता छह?”

“की?”

“हद भए गेल । गाममे बच्चा-बच्चाकेँ जे बात बूझल छैक से तोरा पते नहि हेतह से नहि मानि सकैत छी।”

“असलमे हम कैकदिनसँ गामसँ बाहर रही ।”

“कतए गेल रहह?”

“मामा गाम चलि गेल रही । ओहिठाम अकस्मात हमर नानाक देहान्त भए गेलनि । तैँ सभगोटेकेँ जाए पड़ल । काल्हिए साँझमे ओहिठामसँ वापस अबैत गेलहुँ । माए अखनहु ओतहि अछि ।”

“आ बाबू?”

“ओ तँ आबि गेलाह । मुदा अस्वस्थ छथि ।”

“की भेलनि?”

“की कहू?”

“वापस अबैत काल धार लग एकटा गाए बेहोस पड़ल छल। ओ ओकरा दुलार करए लगलाह कि ओ बड़ी जोरसँ लथार मारलकनि । ठामहि खसलाह । बचि गेलाह नहि तँ...”

“से की?”

“माथ दू खंड भए जइतनि । ताबतेमे किछुगोटे सामनेसँ दौड़ल आ हिनका पाथरपर खसबासँ बचा लेकनि । तइओ गाएक सिंघसँ हिनकर आँखि लग चोट लागिए गेलनि ।”

हिमेश बाबूसँ गप्प करैत काल एकाएक हमर ध्यान अपन वाल्यावस्था दिस चलि गेल । कोना ने जाइत? जखन हम नेना रही तँ साइते कोनो दिन रहल होइत जे हुनका ओहिठाम मालभोग चाउरक भात,राहड़िक दालि,आलू कोबीक तरकारी,आ गम-गम करैत घी हुनका ओहिठाम लोहितक संगे नहि खेने होएब ।

लोहित आ हम एक्के किलासमे पढ़ी। ओ इसकूल हिमेश बाबूक भले रहल होनि मुदा शिक्षकसभ लोहित आ आन विद्यार्थीमे कोनो फरक नहि करथि? ओहि समयक शिक्षक लोकनिक बाते किछु आओर रहैक। कनीको डर नहि जे लोहितकेँ कम नंबर देबैक तँ की होएत? हम जहिना गणितमे नीक नंबर आनी तहिना लोहित गणितमे सामान्यतः फेल कए जाइत । कलाक विषयसभमे ओकरा नीक नंबर अबैक । मुदा विज्ञानक विषयमे ओ कहिओ नीक नहि कए पाबए । ई बात शिक्षकसभ नीकसँ बूझथि जे ओ विज्ञानक विद्यार्थी नहि अछि । ओकरा कला लेबाक चाही । मुदा हिमेश बाबूक अभिलाषा रहनि जे हुनकर एकमात्र संतान लोहित विज्ञान राखए,डाक्टर बनए आ लोकसभक सेवा करए । मुदा से संभव नहि बुझाइत छल । दिन-दिन ओकर परीक्षाफल खराबे होइत गेलैक। मैट्रिकमे हमरा प्रथम श्रेणीमे बहुत नीक नंबर आएल छल। मुदा लोहित कहुना कए तृतीय श्रेणीमे पास केने रहए ,ओहो गणितमे पाँच नंबर कृपांक भेटि गेल रहैक तेँ । मुदा हिमेश बाबू शिक्षक लोकनिकेँ किछु नहि कहलखिन । ओ नीकसँ बूझथि जे गलती हुनके छनि ।

एक समयमे हिमेश बाबूक इलाकामे नाम छल । जकरे देखू ओएह हुनकर जयकारा लगबैत रहैत छल । अपना भरि ओहो लोकक मदति करबामे कोनो कसरि नहि रखैत छलाह । मुदा सभक जड़ि तँ होइत अछि टाका । जीवनसँ मृत्यु पर्यन्त टाका चाही । तकर बिना तँ मनुक्ख ओहिना व्यर्थ भए जाइत अछि जेना बिजलीक बिना ओहिसँ जुड़ल तमाम संयंत्र । बिजली गेल कि टेलीवीजन गुम भए जाएत,पंखा चलनाइ रूकि जाएत ,चारूकात अन्हार भए जाएत । देखिते-देखिते एहन भए जाएत जेना प्रलय भए गेल । सएह हाल भए गेलनि हिमेश बाबूक ।

आर्थिक हालत गड़बड़ाइते सभ हुनकासँ फराक रहए लागल । हुनकर एकमात्र संतान लोहित समाजसेवी भए गेल छल । आइ एतए तँ काल्हि कतहु आनठाम । घरक कोनो भार ओकरा हिमेश बाबू कहिओ देबे नहि केलखिन । परिवारक आर्थिक स्थिति सुद्दढ़ रहबाक कारणसँ पढ़ाइ-लिखाइ केलाक बाद नौकरीक कोनो प्रयोजन नहि बुझेलैक । जहिआसँ आँखि-पाँखि भेलैक,समाजसेवामे लागि गेल । देखबा-सुनबामे ओ गजबके सुंदर छल । गोर-नार छओफूटसँ बेसीए रहल होएत । जेहने देखबामे सुन्नर ,तेहने मधुर स्वभाव ।

जखन सलीमक वर्चस्व इलाकामे बढ़ए लगलैक तँ लोहित सेहो हुनकर संपर्कमे आएल । क्रमशः दुनूगोटेकेँ पसिंद करए लगलाह । फेर ओ रहबो करए तँ एकहिठामक । धीरपुर आ नाजिरपुर कतेक फटकी रहबे करए? सभ एक-दोसरकेँ जनिते रहए। एहनमे आपसी विश्वास आ मित्रता होएब तँ स्वभाविके थिक। क्रमशः लोहितक सलीमक ओहिठाम आवागमन बढ़ैत गेलैक। ओहीक्रममे लोहितक संपर्क सलीमक बेटी फातिमासँ भए

गेलैक । केना की भेलैक से तँ आगू बूझबे करबैक । मुदा सलीम आ फातिमाक खिस्सा ओकरासभक लाख प्रयासक अछैत गुप्त नहि रहलैक । धीरपुर आ नाजिरपुरक लोकसभक जबानपर ई बात आबि गेलैक । ककरो किछु बूझल रहैक तँ ककरो किछु । सभटा बात सही-सही साइते ककरो पता रहल हेतैक । मुदा केओ चटकार लेबासँ पाछू नहि रहए। एहि तरहें बात पसरैत गेल ।

5

हमर पिता धीरपुर रेलवे टीसनक स्टेशन मास्टर रहथि । टीसनक कातेमे सरकारी घर भेटल रहनि । हमसभ सालक-साल ओही घरमे रहलहुँ। बाबू ओहिठाम बहुत दिन धरि काज करैत रहलाह आ ओतहिसँ सरकारी सेवासँ निवृत्त भए गेलाह । ओ ततेक दिन ओहिठाम रहि गेलाह जे लगपासक गामक लोकसभ हुनका अपन गौंवा बूझए लागल । सभ कहए हमरे गाममे घर बना लिअ । बाबू आ हमसभगोटे ओहि इलाकासँ ततेक हिलि-मिलि गेल रही जे आब ओकरा छोड़ब संभव नहि लगैत छल । नौकरीमे रहैत ओ टीसनसँ कनीके फटकी दस कठ्ठा जमीन कीनि लेने रहथि। ओ जमीन जतबे दूर धीरपुरसँ छल,ततबे दूर नाजिरपुरोसँ । तेँ सेवानिवृत्तिक बाद बाबू अपन कीनल जमीनपर आठ कोठरीक मकान बनओलथि । कहबाक माने जे ओ एहि संगे दुनू गामक बासी भए गेलाह । हुनका ओहिठाम दुनूगामक लोकसभ निधोख आबि जाइत छल । यदि किछु काज रहलैक सेहो हुनका कहि दैत छल । एहि तरहें टीसनबाबूक रूपमे ओ इलाकामे चर्चित भए गेल

रहथि। हम हुनकर पुत्र रहबाक कारणसँ सेहो आ अपन वाल्यावस्थाक दोस्तसभक कारणसँ सेहो ओहिठाम बहुत आफियतमे रहैत छलहुँ। नाजिरपुर आ धीरपुर दुनू गामक लोक हमरासभक गौंवे लगैत छल। ततबे नहि,आनो-आनो गामक लोकसभक आबाजाही हमरासभक ओहिठाम लगले रहैत छल । केओ कुमहर लेने अबैत,तँ केओ सजमनि लेने । ककरो हाथमे कहिओ रहु माँछ देखि कए तँ बाबूक प्रसन्नताक अंते नहि रहि जाइत छलनि ।

हुनका सभदिनसँ ई बात मोनमे गड़ल रहनि जे एकटा अइल-फइल घर होअए। हुनकर गामक पैतृक घरसभ भदवारिमे अस्त-व्यस्त भए जाइत छल । यदि बेसी पानि भेल तँ कोनो-ने-कोनो देबाल खसिओ पड़ैत छल । तकरबाद हमरसभक जे हाल होइत छल से सोचल जा सकैत छल । जहाँ वर्षा भेल की ऊपरसँ खपराक छतसँ पानि खसए लगैत छल । कैक राति हमसभ जगले रहि जाइत छलहुँ । बाबू एतबे कहतथि जे जल्दीए बड़ीटा घर बनेबैक। ई करबेक,ओ करबैक । हुनकर बात सुनि कए माए हँसि दैत छलि। कारण ओ जनैत छलीह जे हुनकर स्थिति अखन केहन छलनि । नव घर बनाएब तँ दूरक बात भेल,परिवारक गुजरो बहुत मोसकिलसँ होइत छल । से जे छल,मुदा हमरा लोकनिक परिवारमे सभ प्रसन्न रहितए । सदिखन हँसी ठठ्ठा होइत रहितए । घरक माहौल बहुत आनंददायी रहैत छल । तेँ सभटा कष्ट अछैतो,हमसभ बहुत नीक जीवन जीबैत छलहुँ । जखन बाबूकेँ नौकरी लागि गेलनि,हमसभ गोटे हुनका संगे सरकारी मकानमे रहए लगलहुँ । मकानक कष्ट खतम भेल । बाबूकेँ सभमास नियमित रूपसँ गुजर

जोकर दरमाहा भेटि जाइत छलनि । तकर बाद हमरा लोकनिक समय बहुत नीकसँ कटि जाइत छल ।

एक रातिक बात छैक । हम अपना कोठरीमे पड़ल किछु पढ़ैत रही । माए गाम गेल रहए । बाबू भोजन कए सुति गेल रहथि। खिड़की लगमे केओ फुसुर- फुसुर करैत सुनाएल । कनी कालक बाद खट-खटक आबाज सेहो भेल । हम पढ़नाइ छोड़ि खिड़की दिस तकैत छी । ओतए लोहित ठाढ़ बुझाएल । ओकरा पाछू केओ आओर छल । मुदा ओ अपन मुँह झपने रहए । चिन्हएमे नहि आबि सकल । हम सहटि कए खिड़की लग गेलहुँ । पुछलिऐक-

“बात की छैक?”

“केबार खोलह?”

“पाछूमे के अछि?”

“पहिने केबार खोलह ।”

हम पछिलका केबार खोलि देलिऐक । लोहित सहटल - सहटल हमरा कोठरीमे पहुँचि गेल ।

“तोरा संगे केओ आओर छल?”

लोहित खिड़की दिस इसारा करैत अछि । मुदा हम किछु नहि देखि सकलिऐक । आकाशमे मेघ लागल रहैक । ऊपरसँ अन्हरिआ राति । चारूकात अन्हार गुज्ज । एतबहिमे बिजलौका चमकल । खिड़कीक सामने एकटा केओ मुँह झपने ठाढ़ बुझाएल।

“ओएह अछि ।”-से कहि लोहित हँसि देलक ।

“तँ ओकरो किएक ने लेने एलहक?”

लोहित किछु नहि बाजल ।

“मौसम एतेक खराब छैक । कखनहु वर्षा शुरु भए सकैत अछि । एहनमे ओ बाहर कोना रहि सकत । सभसँ पहिने ओकरा भीतर लए आनह ।”

“ठीक छैक ।”-से कहि लोहित दबले पैरे बाहर गेल। कनीके कालमे ओ दुनूगोटे हमरा कोठरीमे आबि गेल । बगलक कोठरीमे बाबू सुतल रहथि । यदि हुनकर निन्न टुटि गेलनि, तखन की करब? ई प्रश्न बेरि-बेर हमर मोनमे उठि रहल छल । ताबतेमे बाहर किछु खसबाक आबाज भेल ।

“ई आबाज कतएसँ आबि रहल अछि?”-हम एहि चिंतासँ परेसान रही । मुदा लोहितक लेल धनसन ।

6

फातिमाक लोहित संग ओतेक राति कए अपन घर छोड़ि देब बड़का बात भेलैक । ओना लोहित ओकरा संगे बहुत दिनसँ परिचित छल । सलीमकेँ लोहितपर अटूट विश्वास रहैक । जहिआ सलीम फातिमाकेँ नाम लिखाबए गामक इसकूलमे गेल रहए,तहिए हिमेश बाबू सेहो लोहितक नाम इसकूलमे लिखेबाक हेतु गेल रहथि। जाड़क समय रहैक । शिक्षकसभ बाहरमे रौदमे बेंचपर बैसल रहथि । हिमेश बाबूकेँ देखिते सभ ठाढ़ भए गेलथि । हुनकर हार्दिक स्वागत केलथि । ओ सभ एहिबातसँ बहुत प्रसन्न रहथि जे हुनकर पुत्र लोहित ओही इसकूलमे पढ़त । ओना तँ हिमेश बाबू इसकूलक काजमे पूरा ध्यान दैते छलाह । मुदा जखन लोहित ओहि इसकूलक विद्यार्थी भए जेताह तखन तँ बाते कोन । शिक्षकसभ

नामांकन पुस्तिकामे लोहितक नाम लिखि रहल छलाह । नाम,गामसभ तँ लिखा गेलैक । आब जन्म तिथि लिखबाक रहैक। शिक्षक साहेब हिमेश बाबूकेँ पुछलखिन-

"बच्चाक जन्म तिथि की छैक?"

"से हम की जाने गेलिऐक? हम तँ ओहि समयमे बाहर रही। अहाँसभ अपने अंदाजसँ जन्म दिन लिखि दिऔक ।"

"ठीक छैक ।"

"एक जनवरी लिखि दिऔक ।"-एकटा शिक्षक बजलाह।

"मुदा एक जनवरी तँ छुट्टी होइत छैक ।"

"तँ दू जनवरी लिखि दिऔक ।"

सभगोटेकेँ एहिपर सहमति भए गेलनि । लोहितक जन्म दिन दू जनवरी भए गेलनि । एहि तरहें हुनकर नाम इसकूलमे लिखा गेल ।

शिक्षक नामांकन बहीमे लोहितक नाम लिखिए रहल छलाह कि ओही समयमे सलीमक संग फातिमा पहुँचलि । ओकरो नाम हमरे किलासमे लिखाओल गेल । ओकरो जन्म तिथि हमरे जकाँ शिक्षके तय केलनि । ओना ओहि समयमे ई आम बात छलैक। इसकूलमे नाम लिखेबाक समयमे विद्यार्थीसभक जन्मदिन शिक्षक तय कए देथि ।

ओहिदिन इसकूलमे हिमेश बाबूकेँ देखि कए सलीम बहुत खुस भेल रहए ।

ओहिदिन इसकूलमे दुनूगोटेकेँ भेंट होइतहि गेनखेलीएक चर्चा होमए लागल । शिक्षकसभ बेर-बेर सलीमसँ किछु-किछु

जानकारी मांगथि । मुदा ओकरा फुरसतिए कहाँ रहैक? शिक्षक लोकनि अपने अंदाजसँ खानापुरी कए देलनि । आखिर फातिमाक नाम सेहो लिखा गेल । दुनूगोटेक नामे सोझे पाँचमामे लिखाओल गेल छल । ओहो शिक्षके लोकनिक निर्णय छलनि । चौथा धरि ओ सभ घरेमे पढ़ने छल । तकर बाद एकहि बेर पाँचमामे पहुँचि गेल।

पहिल बेर लोहित आ फातिमाक भेंट किलासेमे भेल रहैक। कैकसाल धरि दुनूगोटे ओही इसकूलमे पढ़ने रहए । संगे-संग मैट्रिक केने रहए । तकर बाद लोहित आ फातिमा एकहि कालेजमे नाम लिखओने रहए । एहि प्रकारें पढ़ाइ-लिखाइ तँ हेबे करैक,दुनूगोटेक दोस्ती सेहो गहींर होइत गेलैक।

फातिमा आ लोहित एकदिन चुपचाप आर्यसमाज मंदिरमे बिआह करबाक हेतु पहुँचि गेल । अस्तव्यस्ततेक कारण सलीमकेँ पतो नहि चललैक । मंदिरमे आर्यसमाजक पद्धतिसँ बिआहक विधि आब अंतिम चरणमे छल कि अचानक किछुगोटे आर्यसमाज मंदिरकेँ घेरि लेलक । ओहीमे सँ किछुगोटे अंदर दिस बढ़ल। ओ सभ “फातिमा”-“फातिमा” चिचिआ रहल छल । हल्ला सुनितहि लोहित आ फातिमाकेँ पंडितजी गुप्त मार्गसँ बाहर कए देलथि । दुनूगोटे जेना-तेना भागल आ दूपहर रातिमे जान बचा कए हमरा लग पहुँचि गेल ।

7

ओहिदिन कैक दिनपर जखन सलीम अपन घर वापस आएल तँ गेटेपरसँ फातिमाकेँ आबाज देलक । मुदा कोनो उत्तर

नहि भेटलैक । ओ आगू बढ़ल ,भीतर घरमे सौंसे ताकि लेलक । मुदा फातिमाक किछु पता नहि चललैक । आखिर एतेक राति कए सेहो एहन मौसममे फातिमा गेलि कतए? कोनो अंदाज नहि लगैक। लोहितकेँ फोन लगओलक । ओकर फोन “नाट रिचेबल,नाट रिचेबल” करैत रहि गेलैक । आब तँ ओकरा आओर चिंता भेलैक। ककरासँ पुछितैक? घरमे केओ आओर नहि रहैक । सलीमक पत्नी तँ कहिआने एहि दुनिआकेँ छोड़ि देने रहैक । तकर बादो ओ दोसर बिआह नहि केने रहए । फातिमेकेँ देखि ओ संतोष कए लेने रहए। ओना ओकर बिआहक बएस बीति गेल रहैक से बात तँ नहि छल। ओ चाहैत तँ कैकटा बिआह कए लैत । देखबामे ओ अखनहु आकर्षक छल । कतेको जबान ओकरासँ पाछू भए सकैत छथि । ओ फुर्तिगर आ स्वस्थ तँ छलहे । कोनो चीजक कमी नहि रहैक । मुदा फातिमाक माएक अकालमृत्युक बाद बिआहक नामेसँ ओकरा तामस भए जाइक ।

जखन फातिमाक कोनो पता नहि चललैक आ लोहितक फोनो नहो लगलैक तखन सलीमक कान ठाढ़ भेलैक । कारण एहिसँ पूर्व कैकबेर एहि प्रसंगमे फातिमा ओकरा किछु-ने-किछु संकेतसँ कहबाक प्रयास केने रहैक । सलीम संकेत बूझबो करैक। मुदा तेहन सन कए लैत जेना ओ किछु बुझिए नहि रहल अछि । हाव-भाव तेहन बना लैत जे फातिमाकेँ डर भए जइतैक । बेसक ओ लोहितक बहुत लगीच पहुँचि गेल छल,मुदा ओकरा अपन पितासँ बहुत लगाव रहबे करैक । ओ कदापि नहि चाहए जे सलीमकेँ ओ कोनो तरहसँ कष्ट दैक । मुदा दुनू बात कोना होइतैक ?

फातिमा सलीमक बहुत दुलारू बेटी छलि । सलीम सभकिछु एही लेल करैत छल जे ओहिसँ फातिमाकेँ सुख

हेतैक,ओकर भविष्य उज्ज्वल हेतैक । इएह सोच ओकर दुखक कारण रहैक । एहि संसारमे केओ ककरो सुखी नहि कए सकैत अछि । सभ अपन-अपन कर्मचक्रमे फँसल अछि । जे जेहन करैत अछि,तेहन ओकरा भोगहि पड़ैत छैक । एहिमे दोसर-तेसर आदमी किछु नहि कए सकैत अछि । मुदा संतानक मोह होइते छैक ततेक जबरदस्त जे एक सँ एक विद्वान,ज्ञानी,पंडित एकर चक्करमे पड़ि जाइत छथि आ की की ने करैत रहि जाइत छथि । इएह संसार थिक । सलीम तकर अपवाद कोना होइत ? नहि तँ ओ ततेक उपार्जन तँ कइए चुकल छल जे ओकर एक-दू पुस्त निश्चिन्त भए जीवन बीता लैत । मुदा एतेक सोचबाक पलखति ककरा रहैत छैक? बस करैत चल । कोनो प्रकारसँ धन एकट्ठा हेबाक चाही । दुनिआकेँ जे हेबाक छैक से हेतैक । अपन काज निकलबाक चाही ।

ओहि राति सलीम घरमे एमहर-ओमहर बौआ रहल छल कि ओकरा फातिमाक पलंग लग एकटा डायरी भेटलैक ।

“ई तँ फातिमाक डायरी बुझा रहल अछि ।”

ओ डायरीकेँ उल्टा-पुल्टा कए देखैत अछि। सौंसे डायरी फातिमा सुंदर हस्तलिपिमे लिखल गेल छल । ओकरा बेटीक डायरी पढ़बामे संकोचो होइक । मुदा करितए की? अंतिम पृष्ठ उलटओलक । ओहिमे लिखल छल-

“आब बहुत भए गेल । हम हिन्दूसँ बिआह नहि कए सकैत छी । ओ मुसलमानसँ बिआह नहि कए सकैत अछि । हमर नाम फातिमा रहत तँ लोहित हमरा संग बिआह कोना करत? ई सभ प्रश्न बेकार अछि । मनुक्खक जाति एक अछि । सभ मनुक्खक सोनित लाल अछि । भगवान ककरोसँ कोनो फरक नहि केलथि । सभ

मनुक्खकेँ दूटा हाथ,दूटा पैर,एकटा दिमाग, दूटा आँखि देलनि। मुदा मनुक्ख सोझ जिनगी जीबिए नहि सकैत अछि । समाजमे अपन पशुप्रवृतिक कारण सभकेँ तंग केने रहैत अछि । जेना-तेना अपन वर्चस्व बनओने रहबाक हेतु दस तरहक कुकर्म करैत अछि। अनकर न्यायपूर्ण अधिकारकेँ दबा दैत अछि आ से सभ भगवानक नामपर करैत अछि । स्वार्थपूर्तिक हेतु तरह-तरहक भगवानक रचना कए समस्त मानव समाजकेँ ओझरओने चलि जाइत अछि। हम एहिसभ चक्करमे पड़ए नहि जा रहल छी । लोहितो सएह कहैत अछि । हमसभ आर्यसमाज मंदिरमे आजुक राति बिआह कए लेब। हम फातिमे रहब,ओ लोहिते रहत । कोनो परेसानी ककरो होइक तँ ओ जानए ।"

डायरीमे ई सभ पढ़ि कए सलीमकेँ जेना करेंट मारि देलकैक । ओ तुरंत अपन विश्वस्त लठैतसभकेँ आर्य समाज मंदिर दिस बिदा कए देलक । जाइत-जाइत नीकसँ बुझा देलकैक- "ओकरा दुनूगोटेकेँ किछु क्षति नहि करबाक छैक । बस पकड़ि कए हमरा सामने अनबाक छैक ।"

लठैतक सरदार कहलकैक-

"जे हुकुम सरकार!"

सलीमक पठाओल लठैतसभ फातिमाकेँ आर्य समाज मंदिरमे सौंसे ताकि लेलक। मुदा ओ कतहु नहि देखेलैक । रातुक समय छलैक। मौसमसे गड़बड़ रहैक । टिपिर-टिपिर पानि पड़ि रहल छल । एहन समयमे ओ सभ गुप्त सूचनाक आधारपर आर्यसमाज मंदिर धरि पहुँचिए गेल सएह कोन कम । मुदा लक्ष्य हासिल नहि भए सकलैक। कनीके लेल ओ सभ चुकि गेल ।

8

लठैत खधिआमे सँ निकलबाक जतेक प्रयास करए ततेक धसले जाए । ओकर संगी सभ आगू बढ़ि गेल छल । संयोगसँ एकटा लठैत लघुसंकाक हेतु ठाढ़ भेल । ओकर ध्यान अकस्मात ओमहर गेलैक । ओ पुछैत अछि-

“की भेलह?”

“हम फँसि गेल छी?”

“से कोना?”

“अन्हारमे देखि नहि सकलिऐक । सड़कक कातमे खधिआमे पैर पड़ि गेल । निकलबाक जतेक प्रयास करैत छी, धसले जा रहल छी।”

“रे ओ खधिआ नहि छैक, चभच्चा छैक, सेहो बहुत गहींर ।”

“से हम नहि बूझि सकलिऐक।”

“दिन-राति तँ पीने बुत्त रहैत छह तँ खधीआ आ चभच्चामे फरक कोना बुझेतह?”

“से तँ जे भेल से भेल, मुदा आब कोनो उपायसँ हमरा बाहर करह। नहि तँ अरड़ी खेतमे प्राण चलि जाएत ।”

“तोरा नीकसँ बूझल छह जे हमसभ बहुत जरूरी काजपर निकलल छी । एहनमे सभकाज छोड़ि कए तोरेमे कोना लागि जाएत लोक?”

"ई कोनो बात भेलैक? हमहु तँ ओही काज लेल तोरासभक संगे छी। हमरा निकालि दएह,फेरसभ गोटे संगे फातिमाकेँ तकबाक हेतु चलब ।"

"ठीक छैक । प्रयास करैत छी । तूँ अगुताह नहि । गलती ककरोसँ भए सकैत छैक । अन्हारमे तोरा चभच्चा देखबामे नहि आएल हेतह।"

तकर बाद ओ लठैत अपनसंगी सभकेँ आबाज देलकैक । सभक कान ठाढ़ भेल । लगेमे एकटा बांस रहैक । ओकरा चभच्चा दिस बढ़ओलक । ओहि बांसकेँ पकड़ि कए जेना-तेना ओ लठैत चभच्चासँ थालसँ लथपथ बाहर भेल । बाहर तँ भए गेल,मुदा ओकरा स्थिति एहन नहि रहैक जे दौड़-भाग करितए । देहसँ थाल निकालब जरूरी रहैक । मुदा तकर कोनो साधन ओहिठाम नहि देखाइक ।

आखिर ओकरा ठामहि छोड़ि लठैतसभ आगू बढ़ि गेल । थालसँ लथपथ ओ सड़कक कातमे अपन देह साफ करबाक प्रयास करैत रहए कि ओकरा एकटा पुरुख कोनो महिलाक हाथ पकड़ने जाइत देखेलैक । लठैत ओहनो हालमे आबाज देलक-

"खबरदार! जँ आगू बढ़लह । गोली मारि देबह ।"

"लठैतक कड़क आबाज सुनि ओ दुनूगोटे ठमकि गेल । डरो भेलैक जे कहीं सचमुचकेँ ने गोली चला दैक । लठैतकेँ मुखातिब भए लोहित पुछलकैक-

"तूँ के छह आ एहि स्थितिमे एना किएक ठाढ़ छह?"

"हम सलीम बाबूक लठैत छी।"

“तँ एहिठाम एतेक राति कए एहि हालमे किएक छह?”

“पहिने अपन बात बाजह जे तूँसभ के छह आ केमहर जा रहल छह?”

“हमसभ केओ छी ताहिसँ तोरा मतलब?”

“मतलब अछि कोना ने? हमरासभकेँ सलीम बाबू एही काजसँ पठओलाह अछि ।”

“की काज?”

“जे लोहित आ फातिमा जतए कतहु होअए ओकरा पकड़ने आनह। हम तोरासभकेँ नीकसँ चिन्हि गेल छी । तेँ गोली नहि चला रहल छी । मुदा हम जे कहैत छिअह से करह । तखनहि तोहरसभक कल्याण अछि ।”

“कहह की कहैत छह?”

“देखहक, आगू गाछ तरमे हमरे संगीसभ ठाढ़ अछि । ओ सभ तोरे तकबाक हेतु आएल अछि । तेँ हमरा असगर बूझबाक गलती नहि करिअह ।”

अपना भरि लोहित लठैतकेँ पड़ताड़बाक बहुत प्रयास केलक । मुदा बात बनैत नहि बूझेलैक । आर-आर लठैतसभ सेहो एकरेसभ दिस अबैत बूझेलैक । तकर बाद तँ दुनूगोटे इएह-ले,ओएह-ले ओहिठामसँ भागल।

लठैतसभ चभच्चा लग पहुँचि गेल छल । मुदा अन्हार रातिमे आगू बढ़ि कए लोहित आ फातिमाकेँ पछोड़ करब मोसकिल भए रहल छल । देखिते-देखिते दुनूगोटे पता नहि कहाँ बिला गेल। लठैतसभ तैओ आगू बढ़ैत गेल । ओ सभ रेलवे टीसन टपि कए

हमरा घर दिस बढ़ल । कारण ओकरासभकेँ सक रहैक जे भए सकैत अछि लोहित आ फातिमा हमरेसभक घर दिस गेल होअत ।

लठैतसभक अनुमान सही रहैक । मुदा जाबे ओ सभ हमर घरक बाहर पहुँचल ताबे लोहित आ फातिमा घरक अंदर पहुँचि गेल छल। ओ सभ जोर- जोरसँ लोहित आ फातिमाक नाम लए कए हल्ला करए लागल । ओतेकगोटेकेँ घरक बाहर चिकरैत सुनि हमर बाबूक निन्न टुटि गेलनि । ओ घरक दरबाजा खोलैत छथि । सामनेमे थालसँ लथपथ लठैत केँ देखि ओ चिचिआ उठलाह- "भूत!भूत!"

पाछूसँ दोसर लठैतसभ आबाज दैत अछि-

"टीसन बाबू! टीसन बाबू!"

"की बात छैक? तूँसभ के छह आ एहन मौसममे एतेक रातिमे एहिठाम की करए आएल छह? "

"हमसभ सलीम बाबूक आदमी छी । हुनके कहलापर हमसभ हुनकर बेटी फातिमाकेँ ताकि रहल छी ।"

"फातिमाकेँ की भेलैक?"

"से हमसभ की जाने गेलिऐक जे बात की छैक? मुदा ओ अपन घरसँ गायब अछि । एहिबातसँ सलीम बाबू बहुत परेसान छथि ।"

"मुदा एहिठाम तँ ओ अछि नहि?"

"से अहाँ कोना जनैत छी?"

"हद भए गेल। हमरा घरमे के अछि, के नहि अछि से हम नहि जानब तँ के जानत?"

"इएह तँ आश्चर्यक बात छैक । फातिमा लोहितक संगे अहींक घरमे नुकाएल अछि । हमसभ बहुत दूरसँ ओकरासभक पछोड़ केने आबि रहल छी । हमरासभकेँ मौका दिअ जाहिसँ ओकरासभसँ भेंट कए सकी ।"

"तूँसभ गेटेपर रहह । पहिने हम अपन घरमे देखैत छी जे सही बात की छैक?"

"कोनो हरजा नहि ।"

टीसन बाबू घरमे अन्दर गेलाह । ताबे ओ सभ बाहरे ठाढ़ रहल ।

9

एमहर टीसन बाबू अपन घरसँ निकलि ओसारापर आएले हेताह कि मेघ बड़ी जोरसँ ढनढनाएल । लागल जेना कतहु लगेमे ठनका खसल होइक । बिजलौका सेहो चमकल छल । तकर बाद भयानक वर्षा होमए लागल । लठैतसभकेँ घरसँ बाहर ठाढ़ रहब मोसकिल भए गेलैक । ओ सभ जोर-जोरसँ केबार ठकठकबए लागल ।

"केबार खोलू । हमसभ बाहर भिजि रहल छी ।"

मुदा कोनो उत्तर नहि भेटलैक । टीसन बाबू भकुआएल ओसारापर ठाढ़ छलाह । फुरेबे नहि करनि जे की करू । एक तँ ओहन खराब मौसम आ ताहिपरसँ बिजली सेहो फेल छल । ओमहर लठैतसभ चिचिआ रहल छल । दोसर कोठरीमे लोहित,हम आ फातिमा

छलहुँ । बाहर लठैतसभक आबाज सुनि हमरासभक परेसानी बढ़िते जा रहल छल ।

“आब की करी? ओ सभ तँ करवनहु घरोमे पैसि जाएत। पता नहि तकर बाद की होएत?”-लोहित हमर कानमे फुसफुसाएल ।

“बात तँ ठीक कहि रहल छह । मुदा कएल की जाए? एहन मौसममे बाहरो तँ नहि जा सकैत छी ।”

“मुदा घरोमे तँ सुरक्षित नहि छी ।”

“तखन?”

“हमरा दुनूगोटेकेँ खिड़की बाटे निकालि दएह । तखनहि बचबाक किछुओ प्रयास कए सकैत छी ।”

“ठीक छैक ।”

हम खिड़की खोलि देलिऐक । पलंगकेँ खिड़कीसँ सटा देलिऐक । पलंगपर कुर्सी राखि देलिऐक । हम दुनू हाथसँ कुर्सी पकड़ने रहलहुँ आ दुनूगोटे बेरा-बेरी खिड़कीसँ बाहर कुदि गेल ।

ओमहर लठैतसभक आबाज आओर जोर भेल जा रहल छल । ओकरसभक धैर्य चुकि गेल रहैक । आखिर सभगोटे मिलि कए केबारपर जोरसँ धक्का मारलक । केबार ठामहि खसि पड़ल । हल्ला सुनि कए टीसनबाबू ओमहरे बढ़लाह । परिणाम भेल जे केबार हुनके ऊपर खसि पड़ल।

“मरि गेलहुँ, मरि गेलहुँ ।”- ओ चिचिआ रहल छलाह ।

लठैतसभ घरमे पैसि गेल। टीसन बाबूकेँ चिचिआइत सुनि ओ सभ केबार उठाबक प्रयास केलक । मुदा अन्हारमे किछु देखा नहि रहल छलैक । एकटा लठैतक पैर हुनकर दहिना बाँहिपर पड़ि गेलैक ।

ओ चेहा उठलाह । पाछूसँ आबि रहल लठैतसभ हुनका जेना-तेना केबार तरसँ बाहर केलक । मुदा ताबे तँ ओ बेहोस भए चुकल छलाह । टीसन बाबूक दहिना पैर केबारसँ थकुचा गेल छलनि । लठैतसभ हुनका पानिक छिट्टा देलक । संयोगसँ ताबे बिजली सेहो आबि गेलैक । पंखाक हवा लगलासँ कनी कालक बाद टीसन बाबूकेँ होस आबि गेलनि । मुदा ओ अखनहु दर्दसँ बफारि तोड़ि रहल छलाह ।

"साइत हिनकर हड्डी टुटि गेलनि अछि ।"

"हमरो सएह बूझाइत अछि । मुदा एहि मौसममे कएल की जाए? कतहु लओ नहि जा सकैत छी ।"

"फेर हमसभ तँ दोसर काजपर निकलल छी ।"

"तूँ कहिओ मनुक्ख नहि हेबैं । सामनेमे आदमी आहत पड़ल अछि। तेहनमे तोरा किछु आओर बात कोना फुरा रहल छौ?"

लठैतसभ आपसमे गप्प कइए रहल छल कि एकटा लठैतक मोबाइलमे घंटी बाजल-

"की हाल छौ? ओकरसभक किछु पता लगलौ कि नहि?"

"की कहू मालिक। पकड़ाइत, पकड़ाइत बाँचि गेल ।"

"से की?"

"ओ सभ टीसन बाबूक घरमे नुकाएल छल । हमसभ पछोड़ केने हुनकर घर धरि पहुँचिओ गेल रही । टीसन बाबूकेँ उठेबो केलिअनि। ओ उठबो केलाह । तकरबाद ओ अंदर पता करए गेलाह । ताबेमे..."

"ताबेमे की भेलैक?"

"केबार खसि पड़लैक आ टीसन बाबू ओकर तरमे दबि गेलाह।"

"ई तँ बहुत जुलुम भेल । हुनकर आब की हाल छनि?"

"बहुत कष्टमे छथि । साइत हुनकर दहिना पैर टुटि गेल छनि ।"

"हम जीप पठा रहल छी । दूगोटे हुनका लेने राधानगर अस्पताल चलि आबै । बंकिए गोटे फातिमाकेँ ताकबाक प्रयास करह। पता नहि एहन मौसममे ओ कतए आ कोना अछि? बहुत चिंतामे पड़ि गेल छी "।

टीसन बाबूकेँ चिकरैत सुनि हम ओहि कोठी दिस बढ़लहुँ । हुनका लठैतसभ घेरने छल।

"तूँ सभ ई की केलह?"

"कोनो जानि कए थोड़े केलिऐक?"

"हमसभ हुनका केबार खोलबाक हेतु कहलिअनि । मुदा ओ किछु जबाबे नहि देथि । अहूँ किछु करितहु से कहाँ केलहुँ? हमरासभकेँ केबार तोड़बाक हेतु मजबूर होअए पड़ल ।"

बाबूक स्थिति देखि हम बहुत चिंतामे पड़ि गेलहुँ । ताबतेमे सलीमक पठाओल जीप आबि गेल । हम, बाबू आ दूटा लठैत जीपसँ तुरंत बिदा भए गेलहुँ । जीप आगू बढ़ले छल कि ओकर लाइट सामनेक मकानपर पड़ल । मुदा लोहित आ फातिमा कतहु नहि देखाएल ।

10

लठैतसभ लाख प्रयास केलक,मुदा फातिमाक किछु पता नहि लगलैक । असलियत तँ ई रहैक जे ओ सभ एक बेर तँ

फातिमाक लगेसँ गेल मुदा ताबे फातिमा आ लोहित सतर्क भए गेल छल । ओहन मौसममे दुपहर रातिमे दुनूगोटे फेर अपन जगह बदललक । तकर बाद तँ कतए गेल,कहाँ गेल किछु पता नहि चलि सकलैक ।

लठैतसभ निराश भए गेल छल । सलीमक चिंता बढ़िते जा रहल रहैक। ओ रहि-रहि कए लठैतसभकेँ फोन करैत छल,मुदा ओहो सभ की करितए? की उत्तर दितैक? ओहनो मौसममे जहाँ-तहाँ बौआइत रहल । मुदा हाथमे किछु नहु अएलैक । ओ सभ वापस आर्य समाज मंदिर लग पहुँचल । सभगोटे थाकि कए चकनाचूर भए गेल छल । मंदिरमे चापाकलसँ पानि पीबैत गेल। आबाज सुनि पंडितजी बाहर निकललाह-

“के थिक?”

“तोहर काल?”

“एना किएक बाजि रहल छह?”

“जेहने काज करबह तेहने ने सुनबह?”

“हम कोन अधलाह काज केलहुँ अछि?”

“चुपचाप फातिमाक बिआह लोहित संगे जे करा रहल छलहक से की भेलैक? नीक की अधलाह? तूँही बाजह ।”

“एहिमे हमर की दोष अछि? एहिठाम जे अबैत अछि ,हमसभ ओकर यथासाध्य मदति कए दैत छिऐक । ई एहिठामक व्यवस्था छैक ।”

“तकर माने जे तूँ मुसलमान लड़कीक बिआह हिन्दूसँ करा देबहक? तोरा पता छह जे एकर की परिणाम भए सकैत छैक? ”

“बेसी फटर-पटर नहि करैत जाह । चुपचाप एहिठामसँ घसकि जाह ।”

“नहि तँ तूँ की कए लेबहक?”

“ई बहुत बाजि रहल अछि। पकड़ एकरा आ बाहर लए चल ।”- लठैतसभक सरदार बाजल । लठैतसभ पंडितजीक हाथ-पैर बान्हि देलक, मुँहमे टेप साटि देलक । तकरबाद चारिगोटे मिलि कए हुनका उठा लेलक आ मंदिरसँ बाहर निकलि गेल । पंडितजी छटपटाइत रहि गेलाह । केओ बाहर नहि आएल । मंदिरमे रहि रहल आनलोकसभ घत काढ़ि लेलक जेना कि ओ सभ किछु देखबे नहि केलक ।

लठैतसभ पंडितजीकेँ धारक कातमे लए गेल । हुनकर हाथ-पैर खोलि देलकनि । पंडितजी भागबाक प्रयास केलाह कि ताबतेमे गोली चलबाक आबाज भेल । पंडितजी ठामहि खसलाह। देखिते-देखिते हुनकर शरीर निष्प्राण भए गेल । लठैतसभ हुनका ठामहि छोड़ि पुलपर चढ़ि धारक पार चलि गेल । तकर बाद ओ सभ ओतए ठाढ़ जीपपर चढ़ि आगू बढ़ि गेल ।

पौ फाटि रहल छलैक । वर्षा बंद भए गेलैक। राति भरि चलल अन्हड़ सेहो बंद भए गेल छल । थाकल-ठेहिआएल लठैतसभ राधानगर स्थित सलीमक घर पहुँचल । ओ बहुत उत्सुकतासँ ओकरसभक प्रतीक्षा कए रहल छल । ओकरा पूरा उमीद रहैक जे लठैतसभ फातिमाकेँ वापस आनि लेत। मुदा से भेल नहि देखि सलीमक तामस आकाश छुबि रहल छल ।

“तूँसभ निकम्मा भए गेलैं । बैसल-बैसल खाली खाइत रहैत छैं । नान्हिटा काज देल गेलौक सेहो कएल नहि भेलौक । आब तूहींसभ बाज जे तोरा संगे की कएल जाए?”

केओ किछु नहि बाजल । बजबो की करितए? ओना अपना भरि तँ राति भरि बौआइते रहि गेल । मुदा परिणाम भेल उल्टे। टीसनबाबूक टांग टुटि गेलनि । आर्यसमाज मंदिरक पंडितजीक जान सेहो चलि गेलनि । रच्छ अछि जे ई बात अखन धरि सलीमकेँ पता नहि चलल अछि,मुदा कतेक काल? समस्याक समाधान करबाक बदलामे लठैतसभ नव-नव समस्या ठाढ़ कए देने छल।

भोरे मौसम ठीक भए गेलाक बाद नाजिरपुर आ धीरपुरक लोकसभ अपन-अपन घरसँ निकलि धार दिस गेल । किछुगोटेक ध्यान टीसन बाबूक खुजल केबारपर गेल । ओ सभ अंदर गेल तँ देखैत अछि जे केबार टुटल खसल पड़ल अछि । सौंसे घर खाली छल । दोसर कोठरीक खिड़की सेहो खुजले छल । पानिक झट्कसँ सौंसे घरमे पानि लागि गेल छल । धरफरीमे हमर मोबाइल सेहो ओछाओनेपर छुटि गेल छल । ई बातक पता हमरा अस्पताल पहुँचलाक बाद चलल । तकर बाद तँ कैकबेर घंटी बजबिऐक,मुदा ओतए केओ रहितए तखन ने ओकरा उठाबैत । तेँ हमर फोनक उत्तर नहि आबि रहल छल । तथापि रहि-रहि कए हम कैक बेर घंटी बजबैत रहि गेलहुँ । ओहिबेर केओ फोन उठओलक ।

“के छी?”

“हम छी पार्थ?”

“अहाँ के छी?”

"हम नाजिरपुर रहैत छी। हमरा ई फोन अहींक घरमे पड़ल देखाएल। केबार खुजले छल । हमसभ भोरमे टहलए निकलल रही तँ देखलहुँ । अहाँक घरक हाल देखि गुम्म पड़ि गेलहुँ । किछु फुरेबे नहि करए जे आखिर ई सभ भेल कोना?"

"हम बाबूक संगे अस्पतालमे छी । अहाँ हमर फोन रखने रहू । हम वापस आएब तँ लए लेब ।"

"कोनो हरजा नहि ।"

हम दुनूगोटे गप्प कइए रहल छलहुँ कि बड़ी जोरसँ हल्ला सुनबामे आएल । ओकर तीव्रता बढ़िते जा रहल छल । हम पुछलिऐक-

"की भेलैक? एतेक हल्ला केमहर भए रहल अछि?"- मुदा किछु उत्तर नहि भेटल। फोन कटि गेल ।

11

ओहि राति फातिमाकेँ निपत्ता भए गेलाक बाद सलीमक हेतु एक-एक मिनट समय बिताएब मोसकिल भए रहल छल । ऊपरसँ ओकर पठाओल गेल लठैतसभ सेहो अपन प्रयासमे सफल नहि भए सकल। ओ बहुत परेसान छल । आब ओकर धैर्य टुटि रहल छल। राति भरि ओ एहि आशामे समय कटलक जे आब फातिमा अबिते होएत । मुदा फातिमाकेँ केओ चोरा थोड़े लेने रहैक? ओ तँ स्वेच्छासँ लोहितक संगे बिआह करबाक हेतु आर्यसमाज मंदिर गेलि। ओकर बिआहमे भांगठ करबाक हेतु सलीम अपन लठैतसभकेँ पठओलक । मुदा ओ सभ फातिमाकेँ

वापस नहि आनि सकल । ई बात अलग छैक जे फातिमा आ लोहितक बिआह होइत-होइत अपूर्ण रहि गेल । मुदा तेँ की? जखन दुनू अड़ले रहए तँ केओ कतेक काल रोकि सकतैक? मुदा सलीम ई बात मानए हेतु तैयार नहि रहए। ओ एहि पार कि ओहि पारक हेतु मोनकेँ मना लेने छल । ओकरा संगे एक सँ एक गुंडा छलैक । सभकेँ पूरा छूट दए देलक जे राधानगर आ लगपासमे विध्वंस कए दिअए ।

एमहर सलीम इसारा देलक आ ओमहर चारूकात फसाद शुरु भए गेल । मिनटोमे ई समाद नाजिरपुर सेहो पहुँचि गेल । आसपासक गामसभमे सेहो ई बात पसरि गेल । तकर बाद तँ जे हाल भेल से की कहल जाए? आगिमे घीक काज केलक पंडितजीक हत्या । धीरपुरक लोक भोरे जखन हुनकर लास ओहि हालतमे देखलक तँ चारूकात सनसनी पसरि गेल । मंदिरमे नुकाएल आर लोकसभ सभटा बात लोकसभकेँ कहलकैक । तकर बाद तँ धीरपुरक लोकक हुजुम बाहर निकलि पड़ल । जकरा जएह भेटलैक तकरे हथिआर बना लेलक । किछुगोटे पंडितजीक लासकेँ लदने आगू-आगू चलि रहल छल । पाछू-पाछु इलाका भरिक लोक जे -से बजैत,चिकरैत-भोकरैत आगू बढ़ि रहल छल । एहि तरहें दुनू पक्षकक लोक करवनहु आपसमे टकरेबाक स्थितिमे पहुँचि गेल छल। गामक-गाम जरि रहल छल । राधानगर सहर सेहो जरि रहल छल । चारूकात भयंकर अव्यवस्था पसरि गेल छल । के ककरा सम्हारैत?

एकटा व्यक्तिगत घटना एहन भयानक रूप लए लेत से के सोचि सकैत छल? मुदा आब जे स्थिति भए गेल छल से ककरो बसक बात नहि लागि रहल छलैक । कहल नहि जा सकैत अछि

जे एहन नीक माहौलकेँ एतेक जल्दी केना खराब कए देल गेल । लगैत छल जेना एकर तैयारी कतेको साल पहिनेसँ कएल गेल होइक । सड़कसभपर पाथरक वर्षा भए रहल छल । मकानसभपर पेट्रोल बंम फेकल जा रहल छल । देखिते-देखिते कतेको मकान स्वाहा भए गेल । कैकटा निर्दोष लोक कोनो-कोनो काजसँ अपन घरसँ बाहर गेल छल से वापस नहि आबि सकल । ओकरसभक लास लेनिहार केओ नहि छल । पुलिस प्रशासन फेल छल । सौंसे आकाश धुँआसँ कारी भए गेल छल । राधानगर सहर आ लगपासक क्षेत्रमे कर्फ्यु लगा देल गेल छल । यदि रस्तामे केओ एहि आदेशक अवहेलना करैत देखल जाएत तँ ओकरा गोली मारि देल जेतैक । तथापि,किछु इलाकामे रहि-रहि कए मकानसभसँ आगिक लाबा निकलि रहल छल । कतहु-कतहु हल्ला सेहो सुनाइत छल ।

एहन परिस्थितिमे लोहित फातिमा संगे जहाँ-तहाँ नुकाएल फिरि रहल छल । मुदा कतेक काल बाँचल रहत आ यदि पकड़ल गेल तँ की हाल रहतैक से सोचि लोहितकेँ बहुत परेसानी होइक । मुदा उपाये की छलैक? एहनो स्थितिमे सभकिछु सहैत जान बचा कए जेना-तेना राधानगर पुलिस टीसन लग ओ सभ पहुँचि गेल । ताबतेमे केओ पाछूसँ पाथर वर्षा करए लगलैक । संयोग छलैक जे एकटा पुलिसक जीप ओतहिसँ गुजरि रहल छल। एकरसभक हाल देखि जीप ठाढ़ भेल ।

“तूँसभ कर्फ्युमे कतए जा रहल छह?”

“की कहैत छी? बड़का विपत्तिमे पड़ि गेल छी ।”

ओ सभ गप्प कइए रहल छल कि कैकटा पाथर फातिमाकेँ लगलैक। एकटा पाथर तँ माथेपर खसलैक । फातिमा जोर-जोरसँ

कानए लागलि । लोहितकेँ सेहो बहुत चोट लागल रहैक । पुलिस जल्दीसँ ओकरासभकेँ जीपमे बैसा कए अस्पताल लेने चलि गेल।

ओहि समयमे संयोगसँ हम अस्पतालक गेटेपर बाबूक लेल किछु दबाइ आनए गेल रही । ओतहि पुलिसक जीपसँ लोहित आ आ फातिमाकेँ अस्पतालमे अबैत देखलिऐक । हम ओहि जीपक पाछू-पाछू आपातकालीन विभाग पहुँचैत छी । ओहीठाम हमर बाबूओक इलाज चलि रहल छलनि । जीपसँ फातिमाकेँ उतारल गेल । ओ चिन्हा नहि रहल छलि । फातिमाक स्थिति देखि बहुत कष्ट भेल ।

लोहितकेँ सेहो चोट लागल रहैक । मुदा ओ तैओ होसगर रहए । हमरा इसारा केलक । हम सहटि कए ओकरा लग अबैत छी ।

“ईसभ केना भेल?

“से तोरा पता नहि छह?

“हम तँ बाबूक इलाजमे बाझल छी। की जाने गेलिऐक जे बाहर की “भए रहल अछि?

“बाहर जरि रहल अछि।

“से किएक?”

ताबतेमे डाक्टरसभ फातिमाकेँ जाँच करए लगलथि । ओकर एक्सरे कएल गेल । माथक खून रूकिए नहि रहल छलैक । माथमे गहींर चोट लागल छलैक । देहमे आनो-आनो ठाम पाथरसँ चोट लागल छलैक । डाक्टरसभ फातिमाक सीटीस्कैन करबाक

हेतु अस्पतालक भीतर चारिम मंजिलपर लए गेल । नीचाँ रहि गेलहुँ हम आ लोहित।

एतबहिमे बाहर बहुत रास लोकसभ अस्पतालक बाहर पहुँचि गेल । ओ सभ बहुत उत्तेजित छल । लगैत छल जेना ओ सभ किछु कइए कए रहत? क्रमशः ओ सभ अस्पतालक गेटसँ भीतर दिस बढ़ल ।

“आब की करू?”

“की भेल?”

“लगैत अछि ओ सभ एमहरे आबि रहल अछि।”

“तखन?”

“मुदा हमसभ एहि हालतमे कइए की सकैत छी?”

“बात तँ सही अछि । मुदा जान बचेबाक प्रयास तँ करबाक चाही।”

“हे मानि लिअ जे हम-अहाँ एहिठामसँ भागि जाएब । अपन-अपन जानो बचा लेब । मुदा एकरसभक की हेतैक? ई सभ तँ अपन-अपन सीटपरसँ उठिओ नहि सकैत अछि,भागबाक तँ चर्चे कोन?”

“हनुमान चालीसा पढ़ैत रहू। ओएह किछु चमत्कार करथिन । जीबाक होएत तँ सएटा रस्ता निकलि जाएत । यदि हमरा लोकनिक आयु समाप्त भए गेल होएत तखन हमसभ चिंता कइए कए की कए लेब? जे हेबाक होएत से होएत? कोनो हमरे-अहाँक समस्या अछि से बात तँ छैक नहि ।”

“ताबे हमसभ एतहि कतहु नुका जाइत छी ।”

"ठीक छैक ।"

हम आ लोहित अस्पतालक आपातकालीन वार्डमे आलमीराक पाछू नुका गेलहुँ ।

अस्पतालक बाहर रहि-रहि कए विभत्स नारासभ लागि रहल छल। आबाज क्रमशः बढ़िते जा रहल छल । ककरो हाथमे लाठी छल तँ ककरो हाथमे नग्न तरुआरि । केओ-केओ तँ हवाइ फायरिंग सेहो कए रहल छल । घटनाक्रम कोन रूप धए लेत तकर कोनो ठेकान नहि छल । पुलिसक कतहु अता-पता नहि छल । लगैत छल जेना ओ सभ करवनहु अस्पतालमे पैसि जाएत । हे भगवान! आब की होएत? के ककर रक्षा करत? ताबतेमे ठाइ- ठाइ आबाज आबए लागल । कतहु गुप्त स्थानसँ प्रदर्शनकारीसभपर गोली चलए लागल । गोली चलैत देखि लोकसभ यत्र-तत्र भागि रहल छल । किछुए कालमे ओ जगह सुन्न भए गेल । किछुगोटेक लास सड़कपर पड़ल छल । किछु जीबैत लोकसभ छटपट कए रहल छल ।

सड़कक पजेबासभ खूनसँ लाल भए गेल छल। सड़कक काते-काते जूता-चप्पल खसल पड़ल छल । कैकगोटेक मोबाइल,झोरा,टाका यत्र-तत्र पसरल छल । चारूकातसँ कुकुरसभ सड़कपर जमा भेल जा रहल छल । एहनो स्थितिमे किछुगोटे मुड़ीमे नकाब बन्हने लाससभक जेबी ताकि रहल छल आ यदि किछु भेटि जइतैक तँ ओकरा नुका लैत छल । एहि भयावह दृश्यकेँ तुरंत हटबाक कोनो संभावना नहि लागि रहल छल। देखिते-देखिते ई सहर कोन स्थितिमे पहुँचा देल गेल छल? तकर जिम्मेबार के अछि? एना किएक भेल? किएक ने शासनतंत्र समय रहिते एहिसभकेँ रोकि सकल?सभक मोनमे इएह प्रश्न वारंबार घुमि रहल छल ।

अस्पतालक वार्ड दुर्गंध कए रहल छल ।एक-एक सीटपर तीन-तीनटा रोगी पड़ल छल । जतए कतहु जगह छल, आहत लोकसभ पड़ल छल । एतेक लोकक इलाज करबाक हेतु अस्पतालक पास ने डाक्टर छलैक,ने संसाधन । के ककरा देखैत? जे जीबि रहल छल सेहो करवन धरि साँस लैत रहत तकर कोनो ठेकान नहि । अस्पतालमे भर्ती भेल रोगीसभक सेवामे केओ नहि देखाइत छल । अधिकांश रोगीसभक संगे केओ पारिवारिक लोक नहि छल । ओकर सभक पहिचान सेहो नहि भए पाबि रहल छल। बेसीगोटेक सिरमामे नाम लग लिखल रहैक-“अज्ञात” । जतए जे जाही हालमे छल तकरा पुलिस आ प्रशासनक लोक ट्रकमे लादि कए अस्पतालमे फेकि देने रहए । किछुगोटे रस्तेमे दम तोड़ि देलक। किछुगोटे अस्पताल पहुँचि कए दम तोड़ि देलक । सभसँ दुखक बात जे अस्पतालमे भर्ती रोगीसभक इलाज ठीकसँ नहि भए रहल छल । पानिसँ बाहर भए गेल माँछ जकाँ लोकसभ छटपटा रहल छल । पता नहि अस्पतालसभक डाक्टर,नर्स,आ आओर सहायक कर्मचारीसभ कतए बिला गेल छल? केओ-केओ बाजए जे ओकरोसभकेँ आतंकित कए एकटा कोठलीमे बंद कए देल गेल अछि । यदि केओ जानपर खेपि कए बाँचिओ गेल तँ ओ असगर रहबाक कारण रोगीसभक किछु मदति नहि कए पाबि रहल छल ।

रोगीसभक बगलमे राखल छोट-छोट टेबुलसभ खाली पड़ल छल । पानिक बोतलसभ खाली पड़ल छल । कैकटा रोगीसभ पानि-पानि चिकरि रहल छल । केओ ओकरसभक बात सुनबाक हेतु उपलव्ध नहि छल । चिकित्सा सुविधाक बिना कैकटा रोगीसभ अस्पतालक बेडेपर पड़ल- पड़ल प्राण त्यागि रहल छल ।

जीवित रोगीक बीचमे लास पड़ल गन्हा रहल छल । मुदा केओ ओकर सुधि लेबए बला नहि छल ।

कहि नहि सकैत छी अस्पतालमे नुकाएल हमरासभक मनःस्थिति केहन छल आ हम दुनूगोटे कोन स्थितिमे छलहुँ । एहन वातावरणमे हमरसभक चेतना बाँचल छह सएह कोन कम? हम आ लोहित ई दृश्य देखि-देखि बहुत परेसान भए गेल रही । मुदा समाधान किछु फुरेबे नहि करए । ई कोनो सामान्य परिस्थिति तँ छल नहि जे समस्या भेल आ उचित व्यक्तिकेँ नजरिमे अबितहि समाधान भए जाएत ।

कोनो एकठाम ई स्थिति छल से बात नहि रहैक। सौंसे सहरमे इएह हाल छल । बहुत मजबूरी रहलेपर केओ घरसँ निकलैत छल । कारण ओकरा नीकसँ बूझल रहैक जे घरसँ निकलि गेलाक बाद वापस होएब कि नहि,वापस हेबो करब तँ कोन हालमे तकर कोनो ठेकान नहि छल । संपूर्ण सहर आइ दू दिनसँ दंगाक सिकार भए गेल छल । चारूकात भयावह दृश्य देखबामे आबि रहल छल। के रहत,के जाएत तकर कोनो ठेकान नहि छल ।

12

सलीम साफ आदमी नहि छल । बाहरसँ ओ समाजमे अपन नीक छवि बनेबाक प्रयासमे लागल रहैत छल । मुदा भीतरे-भीतर ओकर काज बहुत गड़बड़ रहैत छलैक । बहुत गलत-गलत लोकसभक संपर्कमे ओ रहैत छल । जे माहौल अखन चारूकात बनि गेल छल,ताहिमे ओकर गंभीर योगदान छलैक । असलमे

अधिक सँ अधिक टाका कमेबाक मोहमे ओ भसिआइत चलि गेल। कहाँ सँ कहाँ पहुँचि गेल । क्रमशः ओ देश आ समाजक शत्रुसभक हाथक खेलओना मात्र रहि गेल छल । ओ दंगा स्थानीय कारणसँ भरकल छल आ यदि ओहिमे बाहरी तत्वसभ नहि पैसि जाइत तँ एकाध दिनमे सभकिछु सामान्य भए जाइत । मुदा एहिठाम तँ बात किछु आओर छल ।

सलीमकेँ रहि-रहि कए देश-विदेशसँ फोन अबैत रहल । माहौल खराब होइत चलि जाए ताहि हेतु ओ सभ तरह-तरहक फरमान सलीम केँ करैत रहि गेल । सलीमक व्यक्तिगत समस्या सोझरेबाक बदलामे ओझराइते चलि गेल । मुदा जखन रस्तापर काँट रोपि देबैक तँ ओ अपनहु गड़ि सकैत अछि । सएह हाल सलीमक भए गेल छलैक । फातिमाक बिआहमे यदि ओझरा नहि जाइत तँ साइत ओकर पारिवारिक स्थिति एतेक बरबाद नहि होइतैक । मुदा आब ओकरा हाथमे किछु नहि रहि गेल रहैक । राधानगरसँ शुरु भेल दंगा आब देशक कतेको सहरमे पसरि गेल छल । सरकार परेसान छल,लोकसभ सेहो परेसान छल । ककरो कोनो फएदा नहि भए रहल छलैक । तथापि,फसाद बढ़िते जा रहल छल । तकर कारण? निश्चित रूपसँ किछु आओर छल ।

कैक दिनसँ सहरके-सहर बरबाद होइत गेल । कतेको निर्दोष आदमी मारल गेल । कतेको आहत व्यक्ति बिना इलाजकेँ दम तोड़ि देलक । कतेको घर जरा देल गेल । कतेको पूजास्थानसभ खाक भए गेल । कहि नहि एहि विध्वंससँ ककरा फएदा भेल? किएक एना कएल गेल? एहिमे ककर-ककर हाथ छल? एहिसभ विषयपर सरकारमे मंथन चलैत रहल । मुदा जे अकारण एहि

दुनिआसँ चलि गेल,अकाल मृत्यक सिकार भए गेल तकरसभक आब की भए सकैत छल? किछु नहि ।

देहसँ एकबेर प्राण छुटि गेल तकरबाद तँ ओ कोनो जोकर नहि रहि जाइत अछि। लोक जल्दी सँ जल्दी ओहिसँ त्राण पएबाक प्रयास करैत अछि । ताहि हेतु लासकेँ अग्निकेँ समर्पित कए देल जाइत अछि । मुदा परिस्थिति ततेक भयावह भए गेल छल जे लाससभ जहाँ-तहाँ सड़ैत रहल । नढ़िआ,गीदर खाइत रहल । मुदा ओकरसभक स्वजन केओ आगू नहि आएल । अंतिम संस्कारक हेतु लाससभ प्रतीक्षा करैत रहि गेल । कतेको लाससभ ततेक क्षत-विक्षत भए गेल छल जे ओकर पहिचान करब मोसकिल भए गेलैक। कतेकोगोटेक परिवारमे केओ बचबे नहि केलैक? कैकटा नेनासभ अनाथ भए गेल । तेहनमे लासक के हाल पुछैत? आखिर,सरकार आ प्रशासन एहन लाससभक सामुहिक अंतिम संसकार केलक । सौंसे सहरसभमे भयावह दृश्य लगैत छल । जतए-ततए विनाशक दृश्यसभ देखा रहल छल । पुलिस आ प्रशासन असहाय,असमर्थ भेल पड़ल छल । भगवान जानथि,एहन परिस्थितिसँ लोक कोना उबरत?

सहरसभ बेसक बरबाद भए गेल मुदा एहिसँ सलीमकेँ किछु नहि भेटलैक । भेटबो की करितैक?समाजविरोधी तत्वसभ भले उत्सव मना लिअए, सामान्य लोकक तँ सभ तरहें बरबादीए भेलैक । सभसँ क्षति भेल सामाजक । लोकसभक आपसी सौमनस्य आ सौहार्द समाप्त भए गेल । सभ एक-दोसरपर सक करए लागल । ककरो अपना दिस अबैत देखितए तँ नुका जेबाक प्रयास करैत ।

ओहि राति सलीम रातिभरि अपन शयनकक्षमे जागल रहि गेल रहए। फातिमाक कोनो समाचार नहि भेटि सकल रहैक । ऊपरसँ चारूकात भयावह दृश्य उपस्थित भए गेलैक । घरसँ निकलि ओ ओसारापर बैसबे कएल की आँखि लागि गेलैक । ताबतेमे केओ चिचिआ रहल छलैक-

"सलीम बाबू! सलीम बाबू...!"

सलीमक ध्यान ओमहर गेलैक । ओहीठामसँ चिचिआइत अछि-

"के?"

"हम छी राधानगरक थानेदार।

"की बात?"

"बाहर होउ ने । अहाँक लेल जरूरी समाचार अछि।"

सलीम ओकर बात सुनि घर खोलैत अछि । पुलिसक जीप दरबाजापर ठाढ़ छल । थानेदार जीपसँ उतरि दरबाजापर आगू-पाछू कए रहल छलाह । सलीमकेँ देखिते थानेदार दंडवत भए गेल।

"बात की छैक से कहह ।"

"फातिमा भेटि गेलि।"

"ऐँ! की सुनि रहल छी?"

"सही सुनि रहल छी । फातिमा भेटि गेलि।

"कतए अछि? केना अछि? "

"हमर आदमी ओकरा अस्पताल पहुँचा देलक अछि। अखन ओ आपातकालीन वार्डमे भर्ती अछि ।"

"से किएक? ओकरा की भेलैक?"

"पाथरसँ चोट लागल छैक।"

"ओ होसमे अछि ने?"

"बेसी समाचार तँ अस्पताल गेनहि पता लागत । हम ताही लेल आएल छी । जल्दी तैयार भए जाउ । सभगोटे संगे चलब ।"

सलीम जल्दी-जल्दी तैयार होइत अछि । संगमे किछुटाका आ डेबिट कार्ड राखि लैत अछि । अपन खास-खास लोकसभकेँ फोनपर किछु-किछु कहैत छैक । तकर बाद थानेदारक संगे अस्पताल बिदा भए जाइत अछि ।

13

अस्पतालमे भर्ती हमर पिताजी आब सुधार दिस छलाह। हमरा बेसी चिंता फातिमा आ लोहित लए कए छल । फातिमा अखनहु बेहोस छलि। हुनकर स्थिति ठीक नहि रहनि । तथापि,उचित इलाज नहि भए पाबि रहल छल । अस्पतालमे बहुत कम डाक्टर छलाह । बेसी डाक्टर घरेसँ सलाह देथि । कारण रस्तासभ वाधित छल । यदि साहस कए घरसँ बिदा भइओ जइतथि तँ प्राण भय तँ छलहे । सहरमे करवन कतए की होएत,के बम फोड़ि देत,के गोली चला देत तकर कोन ठेकान छलैक? कतेको निर्दोषलोकसभ मारल गेल छल। केओ कार्यालयसँ घर वापस जाइत काल फँसि गेल आ मारल गेल । एहन स्थितिमे डाक्टरोसभ की करितथि? सभ अपन-अपन जान बचबएमे लागल छलाह। जे

डाक्टर ,सिस्टर आ स्टाफ अस्पतालमे फँसि गेल छल से सभ परेसान छल । कैकदिनसँ सुतलो नहि छल । ओकरसभक हाल बहुत खराब भए गेल छलैक । आखिर ओहोसभ मनुक्खे अछि,कोनो लोहाक तँ बनल अछि नहि। सोचल जा सकैत अछि जे एहि स्थितिमे के ककर इलाज करैत?

सलीम थानेदारक संगे अपन घरसँ बिदा जरूर भए गेल,मुदा अस्पताल पहुँचब पराभव भए रहल छलैक । रस्तासभपर जाम लागल छल । ककरो घर जरि रहल छल तँ केओ अपन स्वजनक अकाल मृत्युपर शोक मना रहल छल,छाती पिटि रहल छल । निश्चित रूपसँ सलीम ई सभ देखि बहुत दुखी छल । मुदा आब ओकरा हाथमे किछु नहि रहि गेल छलैक। आगि लगाएब बहुत आसान होइत छैक,मुदा ओकरा मिझाएब ओतबे मोसकिल। आब जखन ओकर अपने बेटी संकटमे पड़ि गेल रहैक तँ ओकरा अफसोच होएब स्वभाविके छल । मुदा ताहिसँ होइतैक की? अस्पतालमे फातिमाक जीवन संकटमे पड़ल छलैक । मुदा ओतए कोनो सुविधा छलहे नहि । सलीमक जान-पहिचानक कोनो डाक्टरसँ ओकरा संपर्क नहि भए पाबि रहल छलैक । आओर बात तँ छोड़ू,ओकरा पुलिस जीपपर असबार रहितहुँ अस्पताल पहुँचब मोसकिल भए रहल छलैक । फातिमाक इलाजक व्यवस्था करब ओकरा वशक नहि रहि गेल छलैक । ओ बहुत निराश भए गेल छल , गुम्म छल। थानेदार ओकर मनःस्थिति बूझि रहल छल । मुदा ओहो की करितए?

अस्पताल पहुँचैत-पहुँचैत सलीमक स्थिति बहुत गड़बड़ा गेलैक । थानेदारक जीप अस्पतालक आपातकालीन गेट बाटे

सोझे आपातकालीन विभाग लग पहुँचल । मुदा सलीम जेना सुन्न भए गेल छल । ओकर हालति देखि थानेदारकेँ बहुत चिंता भेलैक।

“सलीम बाबू! सलीम बाबू...!” ओ आबाज लगेलक । सलीम आँखि खोललक । फेर बड़बड़ाइत अछि-

“हम कतए छी?”

“अस्तालमे ।”

“से किएक? हमरा की भेल जे एहिठाम आनल गेल छी? ”

“अहाँकेँ किछु नहि भेलै? अहाँ एहिठाम फातिमासँ भेंट करए आएल छी ।”

“से किएक? ओकरा की भेलैक अछि? ”

“हद भए गेल। अहाँकेँ सभटा बात बूझल अछि तैओ एना किएक बाजि रहल छी?”

“हमरा किछु नहि बूझल अछि । अहाँ हमरा ठगि रहल छी ।” फातिमा तँ बिआह करए गेल छलि, एहिठाम ओ किएक आएत?

“इएह तँ बात छैक? ओएह फातिमा अखन अस्पतालमे जान लेल झकि रहल छथि।”

थानेदार बूझि गेल जे सलीमक माथ काज नहि कए रहल अछि। ओ तुरंत एकटा सिपाहीकेँ इसारा केलक । सामनेक दोकानसँ ठण्ढा पानि मंगओलक । एक गिलास पानि निकालि कए सलीमकेँ देलक । सलीम सभटा पानि एकहि घोटमे पीबि गेल । पानि भीतर जाइते ओकरा जान मे जान अएलैक । ओ तुरंत फातिमा लग जेबाक इच्छा प्रकट केलक ।

थानेदारक सलीम बाबूकेँ जीपसँ उतारैत अछि आ संगे-संगे आपातकालीन वार्डमे प्रवेश करैत अछि । हम सलीमकेँ अबैत देखैत छी । गेटेपर सँ ओकरा हमर बाबूक शायिका देखा गेलनि । बाबू होसमे आबि गेल रहथि । हुनकर पैरमे पलस्तर भेल छलनि । तेँ उठि नहि सकलाह । पड़ले-पड़ल सलीमकेँ हाल-चाल पुछैत छथि। सलीम हुनकर स्थिति देखि बहुत दुखी छल । मुदा ओहूसँ बेसी उत्सुकता ओकरा फातिमा लेल छलैक। ओ थानेदार संगे फातिमाक शायिकापर पहुँचि जाइत अछि। फातिमा बेहोस अपन शायिकापर पड़ल छलि । लगेमे हम आ लोहित रही । हमरा तँ भेल जे सलीम लोहितकेँ कहीं फज्जति ने करैक । किछु अनट बात ने कहि दैक । मुदा ओ से सभ किछु नहि केलक । एक बेर मात्र ओकरा दिस देखलक आ मुड़ी नीचाँ कए लेलक । ओकर हाव-भावसँ लगैक जेना ओकरा बहुत अफसोच भए रहल छलैक । अनेरे ओ फातिमा आ लोहितक बीचमे पड़ि गेल । तकर परिणाम सामने छल।

सलीम कैकबेर आबाज लगओलक-

“फातिमा...! फातिमा... ”

मुदा ओकरा होस रहितैक तखन ने? ओ किछु उत्तर नहि दए सकलि ।

14

फातिमाक इलाज ठीकसँ नहि चलि रहल छलैक । ई बात हम बूझि रहल छलहुँ । मुदा समाधान किछु फुरा नहि रहल छल।

एही प्रयासमे हम अस्पतालमे सौंसे बौआइत रही जाहिसँ केओ नीक डाक्टर भेटि जाथि । संयोगसँ दोसर मंजिलपर एकटा कारी,भुट्ट मुदा बेस तेजस्वी डाक्टर देखेलाह । ओ अपन कोठरीमे किछु लिखि रहल छलाह । हम थकमकेलहुँ जरूर , मुदा साहस केलहुँ,आगू बढ़ि हुनका सामने ठाढ़े भेल रही कि ओएह पुछलथि-

“की बात?”

“डाक्टर साहेब । हमर रोगीक स्थिति बहुत खराब छनि । ठीकसँ इलाज नहि भए पाबि रहल छनि । चारूकात ताकि अएलहुँ । केओ नहि देखेलाह । बहुत मोसकिलसँ अहाँ देखेलहुँ अछि । किछु करिऔक डाक्टर साहेब । नहि तँ ओकर जान नहि बाँचत।”

“ओकर की नाम छैक?”

“फातिमा... ।”

फातिमा नाम हमरा मुँहसँ सुनिते ओ हमरा ऊपरसँ नीचाँ देखए लगलाह । जेना विश्वासे नहि भेलनि जे ओ सही सुनि रहल छथि। फेर कहैत छथि-

“हम ओहि रोगीकेँ रातिमे देखने रहिऐक । ओकरा भीतरी घाव छैक। तुरंत शल्यक्रिया होइतैक तँ साइत बचिओ जाइत । मुदा से तँ भेल नहि । आब तँ ओकर भगवाने मालिक ।”

“भगवान तँ अखन अहींसभ छिऐक । किछुओ करिऔक ।”

डाक्टर बकर बकर हमर मुँह देखए लागल, किछु बाजल नहि ।

डाक्टर थॉमस किछुए दिनपूर्व ओहि अस्पतालमे कार्यभार ग्रहण केने रहथि। ओ मूलतः केरलक कोनो छोट गामक बासी छलाह । हुनकर बाबा कुलीन ब्रह्मण रहथि । परिवारक आर्थिक

स्थित ठीक नहि छलनि । आर्थिक कारणसँ आगूक पढ़ाइ करब मोसकिल भए रहल छलनि । संघर्षक समयमे हुनका की फुरेलनि की नहि, की मजबुरी भेलनि,ओ क्रिश्चन बनि गेलाह। तकर बाद तँ हुनका स्थानीय चर्च आ बाहरी लोकसभसँ बहुत मदति भेटलनि। नीक इसकूलमे नाम लिखा गेलनि । तकर बाद हुनकर शिक्षा निर्वाध चलैत रहल । ओ डाक्टरी पास केलाह । ओ नीक डाक्टर तँ छलाहे,संगहि गरीब,असहाय रोगीसभकेँ बहुत मदति करैत छलाह । गरीब रोगीसभकेँ तँ अपना दिससँ दबाइ सेहो कीनि कए दए दैत छलखिन। डाक्टर बनलाक बाद जतए कतहु गेलाह,बहुत नाम कमओलाह ।

जहिआसँ डाक्टर थॉमस एहि अस्पतालमे अएलाह,रोगीसभक हिफाजति नीक होइत छलैक । मुदा दू-तीन दिनसँ तँ तेहन माहौल बनि गेल रहैक जे ओहो परेसानीमे रहथि। असगर कतेक गोटेकेँ देखितथि। किछु आओर डाक्टरसभ अस्पतालमे छलाह। मुदा ओ सभ हाथ बारि देने रहथि । हमर आग्रहपर डाक्टर साहेब फातिमा लग पहुँचलाह । हमहु हुनकर पाछू-पाछू पहुँचलहुँ । हमरासभकेँ अबैत देखि सलीम सेहो ओमहरे सहटि कए आबि गेल रहए । ओ तँ डाक्टरकेँ देखि कए भोकासी पारि कए कानए लागल।

“किछु करिऔक डाक्टर साहेब जाहिसँ एकर जान बाँचि जाइक।”

“हमसभ कोनो भगवान नेने छी। अस्पतालक जे स्थिति अछि से अहाँ देखिए रहल छी । हिनकर स्थिति बहुत गड़बड़ छनि । तुरंत शल्यक्रिया करबाक रहैक ।”

“तँ केलिऐक किएक नहि?

डाक्टर किछु नहि बजलथि। चुप्प रहि गेलाह ।

“फातिमाक जान कहुना बाँचि जाए से करू डाक्टर साहेब ।”

“हिनका तुरंत कोनो पैघ अस्पताल लए जाउ । ऐहिठाम एतेक सुविधा नहि अछि जे हिनकर शल्यक्रिया कएल जाए।”

“आ यदि रस्तेमे रहि गेल तखन?”

“देरी तँ भइए गेल अछि । अहिठाम यदि प्रयासो करितहुँ से कोनो बेहोसीक डाक्टर तँ अछिए नहि ।”

सलीम अपन आदमीसभकेँ बेहोसीक डाक्टर लग पठओलक। ओ सभ जेना-तेना हुनका ओहिठाम पहुँचिओ गेल । मुदा ओ तँ घर छोड़बाक हेतु किन्नहु तैयार नहि रहथि । हुनकर घरक चारूकात अग्निकांड भेल छल । संयोगसँ हिनकर घर अखन धरि बाँचल रहि गेलनि । सलीमक आदमीसभ बहुत खुसामद केलक । फातिमाक स्थितिक बारेमे सेहो विस्तारसँ कहलकनि । डाक्टर थॉमस सेहो फोन केलखीन । मुदा ओ तैयार नहि भेलाह।

आखिर सलीम अपने बेहोसीक डाक्टरक घर पहुँचि गेल ।

डाक्टर साहेबकेँ देखितहि ओ हाथ-पैर जोड़ए लागल । तरह-तरहसँ हुनका मनबएमे लागि गेल ।

“डाक्टर साहेब अहाँ नहि जेबैक तँ फातिमा नहि बाँचत । ओकर स्थिति बहुत खराब छैक ।”

“मुदा ताहि हेतु के जिम्मेबार अछि? तोरा अपन बेटीक चिंता छह । एहिठाम कतेको निर्दोष लोकक जान चलि गेल । कतेको लोक अखनहु परेसानीमे पड़ल अछि तकर की होएत?”

“अखन अहाँ अस्पताल चलू।”

"अखन चारूकात दंगा भए रहल अछि । मानि लिअ जे हम एहिठामसँ अस्पताल बिदा होइत छी आ यदि रस्तेमे किछु भए गेल तखन?

"हम अपने अहाँक संगे रहब । तैं कोनो चिंताक बात नहि ।

आखिर बेहोसीक डाक्टर मानि गेलाह । सलीमक संगे अस्पताल हेतु बिदा भए गेलाह ।

15

जाबे फातिमाक शल्यक्रिया होइत रहल ताबे सलीम कोठरीक बाहरे ठाढ़ रहि गेल । कनीके हटि कए हम आ लोहित सेहो रही । रहि-रहि कए हमर बाबू सेहो हाल-चाल लैत रहथि । एहि बीचमे सलीम कैक बेर लोहित दिस देखैत रहल । मुदा किछु बाजि नहि सकल । इहो नहि कहि सकल जे तोरे कारण एतेक फसाद भेल । ओ बस फातिमाक चिंतामे पड़ल छल ।

"पता नहि शल्यक्रिया केहन रहत? शल्यक्रियाक बाद फातिमाक स्वास्थ्य केहन रहत? ओ फेरसँ ओहिना चुस्त-दुरुस्त रहि सकत कि नहि? कहीं ओकर जीवन संकटमे नहि पड़ि जाइक ।"

तरह-तरहक प्रश्नसभ ओकरा मोनमे उठैत रहल । लगभग दू घंटा धरि शल्यक्रिया चलैत रहल । तकरबाद डाक्टर थॉमस अपने बाहर भए सलीमकें कहैत छथि-

"सभ किछु ठीक रहल । आब कोनो चिंता नहि । एक सप्ताहक बाद एकरा अहाँ अपन घर लए जा सकैत छी ।"

संगहि किछु दबाइसभ सेहो लिखि देलकनि । सलीम स्वयं कनीके फटकी दबाइक दोकानपर जा कए दबाइ कीनि लेलक । दबाइ लए कए ओ वापस आबि रहल छल कि स्ट्रेचरपर फातिमाकेँ बाहर अनैत देखलक । ओकरा नीकसँ झाँपि देल गेल रहैक । कनीके मुँह उघार रहैक । ओ बहुत कमजोर लागि रहल छलि । सलीमकेँ एही बातसँ प्रसन्नता रहैक जे फातिमाक जान बाँचि गेल ।

हमर बाबूकेँ प्लास्टर एकमास बाद काटल जइतनि । आब हुनकर स्थिति स्थिर छलनि । घरोपर इलाज चलि सकैत छलनि । तेँ डाक्टर बजा कए हमरा सभ बात बूझा देलक,दबाइसभ सेहो लिखि देलक आ अस्पतालसँ बाबूकेँ छुट्टी कए देलक । लोहितोकेँ आब अस्पतालमे रहनाइ जरूरी नहि रहैक । मुदा ओकर मोन ओतहि टांगल रहैक । फातिमा कोना ठीक होएत? पता नहि ओकर बाद की केना होएत? कहीं सलीमक ओकरा प्रतिए व्यवहार आओर खराब ने भए जाइक । एहि तरहक प्रश्नसभ ओकरा मोनमे उठैत रहलैक । हम ओकर मनःस्थिति बूझि रहल छलिऐक । मुदा फिलहाल धैर्य रखबाक प्रयोजन छलैक ।

अगुतेलासँ काज खराबे हेबाक संभावना रहैक । तेँ ओकरा हम असगरमे लए गेलहुँ आ सभ बात बुझलिऐक । जखन कि सलीम स्वयं फातिमा लग उपस्थित छल आ ओकर देखभाल कए रहल छल तँ अनेरे परेसान रहबाक कोनो प्रयोजन नहि छैक । बेसी एमहर-ओमहर केलासँ सलीम गलत माने लगा सकैत छल । आखिर लोहित हमर बात मानि हमरासभक संगे गाम बिदा भए गेल।

अस्पतालमे फातिमाक सेवाक हेतु सलीमक आदमीसभ रहैत छल । सलीम स्वयं अबैत-जाइत रहैत छल । सात दिन लगैक

जेना सात साल जकाँ बितल । ओहि बीचमे मरीजसभक संख्या बढ़िते गेल । डाक्टरसभक हेतु स्थिति बहुत विकट भए गेल रहैक। जकरे मरीजक स्थिति गड़बड़ाइत ओएह डाक्टरक जान लेबा लेल तैयार भए जाइत । एहन परिस्थितिमे डाक्टरसभ की करैत ? पहिने अपन जान बचबैत,तखने किछु आओर ।

डाक्टर थॉमस एहिसभक अपवाद छलाह । ओ जानपर खेलि कए मरीजसभक सेवा करैत रहलाह । फातिमाक प्रतिए तँ ओ बहुत सावधान रहैत छलाह । हुनकर निरंतर प्रयाससँ फएदो भेल । ठीक आठम दिन फातिमाकेँ अस्पतालसँ छुट्टी कए देल गेल। सलीमक प्रसन्नताक अंते नहि छल । ताबे बाहरक माहौल बहुत हद धरि सुधरि गेल छल । मुदा आन-आन जिलासभमे अखनहु रहि-रहि कए किछु-ने-किछु होइत रहैत छल । आब सलीम स्वयं एहि मामिलाकेँ शांत करबाक हेतु तत्पर छल,तथापि बाहरी तत्वसभ गड़बड़ी कइए रहल छल ।

सलीम कैकदिनक बाद फातिमाक संगे राधानगर स्थित अपन घर पहुँचल । फातिमाकेँ सेहो घर आबि कए मोन बहुत नीक लागि रहल छलैक । सलीम केँ सेहो उसास भेटलैक ।

ओमहर लोहित फातिमासँ भेंट करबाक हेतु बहुत व्याकुल रहैत छल। मुदा सलीम आब बहुत सतर्क भए गेल छल । फातिमाक तेहन ने किलाबंदी कए देने छल जे लोहित कोनो प्रकारसँ ओकरा लग नहि पहुँचि सकैत छल । फातिमाकेँ सेहो ई सभ बात बुझा गेल रहैक । मुदा किछु कए नहि पाबए । अखन बहुत कमजोरी लगैत छलैक । फेर ओ अपन पिताकेँ दुखी नहि करए चाहैत छलि । तेँ चुपचाप कहुना कए समय बिता रहल छलि।

16

फातिमा घर वापस आबि गेल छल । निरंतर ओकर स्वास्थ्यमे सुधार भए रहल छलैक । जेना-जेना ओकर मोन ठीक लागए लगलैक,तेना-तेना ओकरा लोहितक चिंता होमए लगलैक । ओकरा डर होइक जे कहीं सलीम लोहितक किछु क्षति ने कए दैक। ओकर भय वाजिब रहैक । मुदा ओ कइए की सकैत छलि? ओतेकटा घरमे ओ एकदम एसगरि छल । केओ ओकर बात बुझनाहर नहि रहैक,ने ककरोसँ ओ अपन मोनक बात कहि सकैत छलि । ओकरा फोन पर्यन्त सलीम लए लेने रहैक। लोहित बेर-बेर ओहि मोबाइलपर फोन करबाक प्रयास करैत छल। एहि बातसँ सलीमक ओकरा प्रतिए तामस बढ़िए रहल छलैक ।

फातिमाकेँ घर वापस आबि गेलासँ सलीमक मोनमे बहुत उसास लागि रहल छलैक । तकर माने ई नहि जे ओ लोहितकेँ माफ कए देने छल । ओकर मोनमे लोहितक प्रति बहुत क्रोध छलैक । ओ सोचि रहल छल-

"कहुना ई हटए तखनहि फातिमाक जान बाँचत।"

ओकरा लगैक जेना ओएह सभ गड़बड़ीक जड़ि थिक । ई बात ओकरा मोनमे तेना कए गड़ि गेल रहैक जे सुतैत,उठैत ओ एही समस्याक बारेमे सोचैत रहए । तँ ओकरा किछु दंड तँ अवश्य भेटबाक चाही। तकर व्योंतमे ओ लागल छल । अपन किछु लठैतसभकेँ ओकरा पाछू लगा देने छल । लठैतसभ दिन-राति लोहितकेँ पछोड़ कए रहल छल । तकर आभास ओकरा रहैक ।

कारण कैकबेर जहाँ ओ अपन दनानपर जइतए कि लगैक जेना किछु गोटे लगे-पासमे घुमि रहल अछि । से एक बेर दू बेर नहि कतेको बेर भेलैक। आखिर ओ हमरा ई बात कहलक ।

"हमरा पाछू किछु गुंडा लगा देलक अछि।"

"से तूँ कोना बुझैत छहक । अखन तँ सदिखन घरेपर रहैत छह ।"

"हम जखन कखनो दनानपर अबैत छी तँ किछु गोटे हमरा लगपासमे देखाइत अछि ।"

"भए सकैत अछि जे ओ सभ सलीमक आदमी होअए।"

"हमरो सएह बूझा रहल अछि ।"

"मुदा कएल की जा सकैत अछि? लोक अपन गाम-घर तँ छोड़ि नहि देत? आ छोड़ि कए जाएत कतए?"

"बात तँ सही कहि रहल छह। मुदा कएल की जाए? प्राण भयमे जीबैत व्यक्तिक मनोव्यथा तँ भुक्तभोगिए बूझि सकैत अछि। जखन कखनहु ओ सभ हमरा अभरैत अछि,ओहि राति हम करोट बदलिते भोर करैत छी । एना कतेक दिन चलि सकत?"

"किछु दिन बचिए कए रहह।"

"पता नहि फातिमाक की हाल अछि?"

"तूँ अपन चिंता करह । फातिमा अपन घरमे अछि । आर कतए रहत? सलीम ओकर देख-रेखमे लागल अछि ।"

ओहि दिन कैक दिनपर लोहित हमरा लग आएल छल । ओतए भेंट होइतहि लोहित अपन मोनक तरह-तरहक चिंतासभ निकालि रहल छल । ताबतेमे हमर बाबू सेहो आबि गेलाह । आब

ओ पहिनेसँ बहुत बेहतर स्थितिमे छलाह । किछुदिनक बाद हुनकर पैरक पलस्तर कटि जेतनि । तखन ओ आर नीक रहि सकैत छथि। कनी-मनी घुमि-फिरि सकैत छथि ।

लोहितकेँ आएल देखि बाबू पुछलखिन-

“कोना छह?”

“ठीक छी । अपन हाल कहू?”

“हमहु आब ठीक भेल जा रहल छी । पलस्तर हटि जाएत तँ कनी बेसी हल्लुक लागत ।”

“आब तँ कटबे करत । कतेक दिन रहत।”

“बात सही कहि रहल छह । सभ किछुक समय होइत छैक। आब कष्टक समय बीति गेल ।”

“मुदा चारू कात तँ अखनहु बहुत तनाव अछि ।”

“बहुत विध्वंश भेल अछि । एकरा ठीक हेबामे किछु समय तँ लगबे करत ।”

“हमसभ बहुत खराब समयमे आबि गेलहुँ । मनुक्ख-मनुक्खक शत्रु भए गेल अछि ।”

“समय नीक बेजाए नहि होइत छैक । हमसभ स्वयं ओकरा ओहन कए लैत छी । सभ समयमे नीक-अधलाह रहबे कएल अछि । जखन भगवान राम रहथि तँ रावणो रहए । भगवान कृष्णक समयमे कंस सन राक्षस भेवे कएल । एकरा की कहबैक? नीककेँ बचेबाक हेतु अधलाहकेँ नष्ट करहि पड़ैत अछि । तखनहि सुख-शांति रहि सकैत अछि । हम तँ सोचैत छी जे ठीक भेलाक

बाद सभटा समय लोक कल्याणमे लगाबी । समाजमे आपसी सद्भाव बनाबक प्रयास करी ।"

"बहुत नीक सोचि रहल छी ।"

एहि तरहें हमसभ आपसमे चर्चा करैत रहलहुँ । भोजनक समय भए गेल छल । सभगोटे संगे भोजन केलहुँ । लोहित बहुत थाकल लगैत छल । ओ भोजन करितहि सुति रहल । हम ताबे बाबूक संगे बतिआइत रहलहुँ ।

"लोहित कतए गेल?"

"सुति गेल अछि? बहुत परेसानीमे पड़ि गेल अछि? "

"से केओ आन थोड़े कए देलकैक अछि? कोनो काज करबासँ पहिने सोचबाक चाही । तकर परिणामपर मंथन करबाक चाही । ई कोन बात भेलैक जे बिना किछु सोचने-विचारने किछु कए लेलहुँ? "

"संयोग होइत छैक बाबू। सभ किछु अपने हाथमे थोड़े रहैत छैक। फेर जबानीक समय छैक । फातिमा ओकर पाछू पड़ि गेलैक । लोहित तँ मना कए देने रहैक । ओ कहैक जे एहि मामिलामे जल्दी नहि कएल जाए । मुदा फातिमे अड़ि गेलैक ।"

"जे हेबाक छलैक से तँ भइए गेलैक । आब जरूरी अछि जे समाजमे विद्यमान धधरापर पानि ढारल जाए ने कि आगिमे घी देल जाए ।"

"मुदा से के बूझत?"

"ककरो-ने-ककरो तँ आगू आबहि पड़तैक । हम सोचैत छी जे ठीक भेलाक बाद हम स्वयं एहि काजमे आगू बढ़ी ।"

“सुनबामे तँ बहुत नीक लागि रहल अछि । मुदा समाजो से बात बूझत तखन ने? कहीं उल्टे ने भए जाए?”

“सभ जे ऐहिना सोचए लगतैक तखन कोनो काज हेतैक कोना? प्रयास करबामे कोनो हरजा नहि छैक ।”

“अच्छा पहिने नीकसँ स्वस्थ भए जाउ । तकर बाद हमसभ निचैन भए एहि समस्यासभपर विचार-विमर्श करब ।”

ताबते लोहितो उठि कए ओतए आबि गेल । चाह बनि कए आबि गेल छल । सभगोटे चाह-पानमे लागि गेलहुँ ।

17

लगभग मास दिन धरि एहि फसादक असरि चारूकात रहल । एहि बीच जे तबाही भेल से सभ भोगलक । कतेको निर्दोष आदमीक जान चलि गेल । कतेको छोट-छोट बच्चा अपन माए-बापसँ सदा-सर्वदाक हेतु दूर भए गेल । घुमि रहल एहन अनाथ कतेको बच्चा सभक के सुधि लैत? सरकार घोषणा पर घोषणा करैत रहल । किछुगोटेकेँ मदति भेबो केलैक । मुदा सरकारोक तँ सीमा छैक। फेर सरकारी योजनासभक क्रियान्वयन तँ एक आदमीक वशक बात नहि रहैत अछि । पूरा तंत्र काज करैत छैक । कतहु सफल भेल,कतहु नहि भेल ।

एहि घटनासभक सभसँ बेसी क्षति सामाजिक सरोकार आ आपसी संबंधपर पड़लैक । लोकसभ एक-दोसरपर सक करए लागल । नीको बातकेँ सुनबाक हेतु केओ तैयार नहि छल । एहन

परिस्थितिमे हमर बाबू एहि बएसमे की कए सकितथि? मुदा ओ अड़ल रहथि । जहाँ पैर ठीक भेलनि,ओ अपन योजनाक अनुसार गामे-गाम बैसार करए लगलाह। शुरुमे हुनका पर्याप्त जन समर्थन नहि भेटलनि । मुदा ओ अपन धुनमे लागल रहलाह,पैरे-पैरे गामे-गामे घुमैत रहलाह । क्रमशः ओकर असरि भेलैक । लोकक विचार बदलए लगलैक । बैसारमे अधिक सँ अधिक लोक आबए लागल। हुनकर बात बहुत ध्यानसँ सुनल जाए लागल ।

बैसारमे हुनका अबितहि लोकसभ उत्साहित भए जाइत छल -

"टीसन बाबू आबि गेलाह, टीसन बाबू आबि गेलाह ।" जखन कि अखनहु हुनकर एकटा पैर सोझ नहि होइत छलनि । कखनहु कए दर्दो भइए जाइत छलनि । मुदा उत्साहे ततेक रहनि जे सभ किछु बिसरि काजमे लागल रहथि । कखन भोर होइत, कखन साँझ होइत से पता नहि छलनि ।

टीसन बाबू जे कए सकैत छलाह से करबे करथि । मुदा हुनकर बैसारसभमे बेसी बूढ़ेलोकसभ आबथि । युवकसभक बहुत कम उपस्थिति रहैत छल । बूढ़सभ हुनकर बात सुनि लेथि,सहमतिमे मुड़ी डोला देथि । मुदा जखन काज करबाक बेर आबए तँ केओ नहि देखाइत । एनामे केना की होइत? टीसन बाबू अपनहु कोनो जबान नहि छलाह । ऊपरसँ एकटा टांग झखाइत छलनि । किछु काल लगातार चललाक बाद जांघमे दर्द करए लागनि । कतहु बैसि कए सुस्ताएब जरूरी भए जाइत छलनि। तथापि ओ साहस बनओने रहथि । काजमे निरंतर लागल रहथि ।

टीसन बाबू एकदिन एहिना बैसारमे गेल रहथि । राधानगरसँ सटले छल गाम-कृष्णपुर । ओहिगाममे सभ जातिक लोकक बास छल । हिन्दू,मुसलमान आ किछु घर क्रिश्चनो ओतए रहैत छलाह । क्रिश्चनसभक संख्या कम छल । मुदा ओ सभ छलाह-अपन लक्ष्यक प्रतिए पूर्णतः समर्पित लोकसभ । तँ ओहि गाममे बहुत तेजीसँ क्रिश्चनसभक संख्यामे इजाफा भए रहल छल। लगेमे एकटा चर्च सेहो बनि रहल छल । मंदिर,मस्जिद तँ कहि नहि कहिआसँ ओतए छलहे ।

बैसार चलिए रहल छल कि एकाएक एकटा युवती कारसँ उतरलीह आ दनदनाइत सोझे मंचपर चढ़ि गेलीह । संयोगसँ ओहिदिन हमहु ओहि बैसारमे बाबूक संगे गेल रही । एमहर ओ महिला मंचपर पहुँचले छलीह कि लोहित सेहो सभास्थलपर आबि गेल । लगलैक जेना दुनूगोटे पुर्वनियोजित कार्यक्रमक अनुसारे आबि रहल छलाह। जखन कि बात से रहैक नहि ।

“ई के छथि? ई के छथि?”

बहुत गोटे इएह प्रश्न एक-दोसरसँ पुछि रहल छल । ताबतेमे ओ महिला स्वयं माइक थम्हलनि।

“हम बुझैत छि जे अपनेसभ की जानए चाहैत छी? हम के छी? एहिठाम अचानक कोना आबि गेल छी? की चाहैत छी? ई प्रश्नसभ ककरो मोनमे उठब स्वभाविके थिक । तँ हम स्वतः स्पष्ट कए दैत छी ।

हम छी फातिमा,सलीमक बेटी ,जकरा चलते इलाका भरिमे एतेक फसाद भेल अछि । हम एहि घटनासभसँ बहुत आहत छी । हम ई सपनोमे नहि सोचने रही जे घटनाक्रम एहन भए

जाएत। सालक-साल संगे रहि रहल लोकसभ एक-दोसरक शत्रु भए जाएत । मुदा भावी प्रवल होइत अछि। बहुत गड़बड़ भेल अछि । एहिमे ककर गलती,ककर सही कहल जाए? मुदा क्षति तँ सभक भेल अछि आ भइए रहल अछि । अस्तु,आबो हमरा लोकनिकेँ सोचबाक चाही जे एहन घटनासभक पुनरावृत्ति नहि होइक । समाजमे सद्भाव स्थापित होअए । सभ एक-दोसरक प्रतिए शुभभाव राखए ।”

फातिमाक बात सुनि-सुनि किछुगोटे बहुत आश्चर्यचकित रहए । किछुगोटे एकरा कोनो षड़यंत्रक हिस्सा बूझए । एहि तरहें केओ किछु,केओ किछु कहैत रहल । फातिमा अपन बात कहैत रहल । ओकर भाषण चलिए रहल छल कि डाक्टर थॉमस सेहो ओतए पहुँचि गेलाह । असलमे ओ तँ गेल रहथि सलीमक ओहिठाम फातिमाकक स्वास्थ्यक जाँच करए । मुदा फातिमा ओतए रहथि नहि । सलीम किछुदिन पहिनहि कतहु बाहर चलि गेल रहथि । डाक्टर थॉमस वापस अस्पताल जाइत रहथि कि फातिमाक आबाज लाउडस्पीकरपर सुनेलनि । ओ ठामहि ओमहरे घुमि गेलाह। फातिमाकेँ एना भाषण करैत देखि ओ बहुत उत्साहित भेलाह । आब ई जल्दीए ठीक भए जाएत । फातिमाक ध्यान सेहो डाक्टर थॉमसपर गेलैक । ओ इसारासँ हुनका मंचपर बजओलक। डाक्टर साहेबकेँ मंचपर पहुँचतहि चारूकात जय-जय भए गेल । ओहि इलाकामे डाक्टर थॉमसक बहुत नाम भए गेल रहनि । विपत्तिक समयमे ओ अपन जानक परबाह नहि कए लोकसभक जान बचओलाह । ताहि बातकेँ लोक कोना बिसरि सकैत छल।

ई एकटा संयोगे चल जे फातिमाक संगे लोहित ,डाक्टर थॉमस, हम आ टीसन बाबू एकहि मंचपर उपस्थित रही । सभक

लक्ष्यो एकहि छल । सभ समाजक शुभचिंतक छल । लोकसभ सेहो एहि प्रसंगसँ बहुत उत्साहित लगैत छल ।

18

सलीम बाहर अबैत-जाइत रहैत छल । ई ओकरा लेल कोनो नव बात नहि छल । एहिबेर बाहर जेबामे किछु देरी अवस्स भए गेल रहैक कारण ओ फातिमाक स्वास्थ्यक हेतु बहुत परेसानीमे पड़ि गेल। जहिना फातिमा ठीक भेलि,सलीम अपन दिनचर्यामे लागि गेल । एहिबेर सलीम गेल तँ बहुत दिन धरि नहि लौटल । कतए गेल किएक गेल से जानकारी ककरो लग नहि रहैत छलैक । कोनो आपातकाल भेल तँ ओकर एकटा खास मोबाइल नंबरपर मिसकाल कएल जा सकैत छल । इहो बात ओकर मनेजर मात्रकेँ बूझल रहैक । अपना भरि ओ बहुत गोपनीय हिसाब-किताब रहैत छल । तेँ साइत बचिओ रहल छल ।

सलीम अपना संगे फातिमाक डायरी सेहो लेने गेल छल । ओ डायरी बहुत दिनसँ ओकरा लगमे छलैक । मुदा व्यस्तताक कारण पढ़ि नहि सकल रहए । असलमे ओ फातिमाक भविष्य लए कए बहुत चिंतित रहैत छल । की करी किछु फुराइत नहि छलैक। अपना भरि ओ बहुत प्रयास केलक जे फातिमाक मोन डोलि जाइक,ओ लोहितकेँ बिसरि जाए । ओ फातिमाक बिआह अपना हिसाबसँ करितए । मुदा से फातिमा सुनबाक लेल तैयार नहि भेलैक। तकर बादे एतेक दंगा भेल । से तँ सभ देखबे केलक । आबो मामिला कोना सम्हरए से छल असली समस्या ।

विदेशमे अपन होटलक कोठरीक एकांतमे आइ पहिल बेर सलीम फातिमाक डायरीकेँ निकाललक । ओकरा खोलितहि डायरीमे किछु चिठ्ठीसभ सेहो देखेलैक । चिठ्ठीक हस्तलिपि ओ नहि चिन्हि रहल छल । मुदा ओकर अंतमे लोहितक नाम लिखल छल। डायरीमे राखल पत्र उत्सुकताक कारण बनि गेल। पहिल पत्र लोहित फातिमाक नाम लिखने छल ।

प्रियतमे!

हम कोनो नव बात की लिखब? कोनो एहन बात नहि फुराइत अछि जे अहाँकेँ बूझल नहि होअए । तथापि जखन कखनहु मोन औनाइत अछि तँ किछु लिखबाक मोन होइते अछि। ओना आब चिठ्ठीक युग नहि रहलैक । मिनटोमे समाद मोबाइलपर पठाओल जा सकैत अछि । मुदा चिठ्ठी लिखबाक आ पढ़बाक अपन आनन्द होइत छैक । फेर अहाँ लगमे तँ आब मोबाइलो नहि रहैत अछि । तखन तँ चिठ्ठीए एकमात्र सहारा रहि गेल अछि ।

हमरा विश्वास रहए जे आइ ने काल्हि अहाँक बाबूक मोन बदलि जेतनि । ओ हमरा लोकनिक बिआह करबाक सहमति दए देताह । मुदा से आब होइत नहि बुझा रहल अछि । ओ तरह-तरहक समस्या ठाढ़ कए रहल छथि । आओर किछु नहि तँ आब ओ हमर धर्म परिवर्तनक बात उठा रहल छथि । यदि हम मुसलमान भए जाइ तखन हुनका दिससँ सहमति भेटि जाएत । मुदा हुनका बुझबाक चाही जे धर्म लोकक निजी जिनगीसँ जुड़ल अछि । केओ ईश्वरकेँ कोना आराधना करत से निर्णय दोसर,तेसर कोना कए सकैत अछि ? हम तँ ई बात मानैत छी आ ओकरा व्यवहारोमे आनैत छी जे ईश्वरक कोनो रूपमे आराधना केलासँ कोनो फरक नहि पड़ए बला अछि । शृष्टिक रचयिता अपन संतानसँ कोनो

भेदभाव कइए नहि सकैत छथि । ई तँ हमरा लोकनिक मोनक निर्माण कएल समस्या अछि । हमसभ अपन स्वार्थपूर्तिक हेतु किंवा अहंकारक संतुष्टिक हेतु भगवानोकेँ नहि छोड़लिअनि । जकरा जाहिमे फएदा बुझेलैक तेहने बात करए लागल ।

ई संसार रहस्यमय अछि । आइ धरि केओ निजगुतसँ नहि कहि सकल जे एकर निर्माण केना भेल? एहि ब्रह्मांडमे असंख्य ग्रह,नक्षत्र,तारामंडल भरल पड़ल अछि । एकर तुलनामे हमरा लोकनिक पृथ्वी कतेक छोट अछि ? सोचिऔक ,साइत एकटा विंदुमात्र छी हमरा लोकनि । से बुझितहु छोट-छोट बात लेल आपसमे लड़ैत रहैत छी । एहिसभक जड़ि थिक मनुक्खक अहंकार। जाबे से नहि हटत,हमरा लोकनि एहिना दुखमे पड़ल रहब। एक फसाद खतम होएत तँ दोसर ऊपर भए जाएत । मुदा के ककरा बुझाएत?कम सँ कम ईश्वरक नामे जे झगड़ा होइत अछि से जरूर बंद भए सकैत अछि । जकरा जे श्रद्धा होइक तहिना पूजा करए,तेहने भगवानकेँ मानए ,एहिमे की दोष छैक?

आशा करैत छी जे अहाँक बाबू एहिसभ बातपर विचार करताह आ हमरा लोकनिक बिआह करबाक मार्ग शीघ्रे प्रसस्त होएत । ताबे हमसभ धैर्यपूर्वक रही, सएहटा समाधान बुझाइत अछि ।

अहींक प्रतीक्षामे,

लोहित

लोहितक पत्र पढ़ि कए फातिमा सुन्न पड़ि गेलि रहए । ओना ओहि पत्रमे कोनो नव बात नहि रहैक । ओकरा खूब नीकसँ बूझल रहैक जे सलीम ओकर बिआह लोहितसँ नहि होमए देत ।

मुदा एहि पत्रसँ लोहितक मनोदशाक जानकारी होइत छलैक । ओकरा लगलैक जेना लोहित ओकरा टारि रहल छैक,जेना ओ कहुना फसादसँ बाँचए चाहैत अछि । इहो भए सकैत अछि जे लोहित सलीमसँ डरा कए अपन जानक हिफाजतिमे लागि गेल होअए ।

19

असगरमे तरह-तरहक बात लोकक मोनमे अबैत रहैत अछि । मुदा समाधान? ओना समाधान तँ बहुत आसान छलैक,तकर ओ सभ प्रयास केबो केलक । मुदा सफल नहि भेल। उल्टे सौंसे दंगा होमए लागल । एकटा निजी समस्याकेँ समाज प्रतिष्ठाक प्रश्न बना लेलक । आब की होइत? तत्काल तँ परिस्थिति सुधरि जेबाक कोनो संभावना नहि रहैक । ओकरा मोनमे रहि-रहि कए डर होइक जे कहीं सलीम ओकर बिआह बलजोरी कतहु आन ठाम ने कए दैक । ई बातसभ ओहि डायरीक पढ़लासँ सलीमोकेँ पता लगलैक । मुदा ओकरा ई नहि बूझल रहैक जे फातिमा एहि विषयमे एतेक सोचि रहल अछि । जखन ओ डायरी पढ़लक तँ ओकर भक टुटलैक -

“हम आ ओहित नेनेसँ एक-दोसरकेँ जनैत छी । हमसभ संगे इसकूलमे रही । संगे कालेजोमे पढ़लहुँ । हमर घर ओ सदिखन अबैत-जाइत रहल । एहिसभ बातपर हमर पिताक कहिओ ध्यान नहि गेलनि । अपितु,ओ कैकबेर हमरासभकेँ काजो अढ़ा देथि । हमसभ प्रसन्नतापूर्वक हुनकर आज्ञाक पालन करी । असलमे हुनका समये कहाँ रहनि जे हमरापर ध्यान दितथि । अबैत-जाइत

जे देखि लेलहुँ,जे फुरा गेल । हुनकर तँ अपन फराक दुनिआ रहनि। कहिआ देशमे रहथि आ कहिआ परदेशमे से बूझब मोसकिल छल। ताहि परिस्थितिमे हम अपना हिसाबे समय बितबैत रहलहुं । ओ कहिओ कोनो प्रतिरोध नहि केलाह । जखन बिआहक बात उठल तँ तरह-तरहक फसाद होमए लागल । धर्मक नामपर हिंसा होमए लागल । इलाका भरिमे अशांति पसरि गेल । फोसरीसँ भोकन्नर भए गेल । नान्हिटा बात दियासलाइक काठी जकाँ सौंसे समाजमे आगि लगा देलक ।

ईश्वरक आराधना एहि लेल कएल जाइत अछि जाहिसँ लोकक विचार उन्नत होइक । ओकरामे आत्मिक विकास होइक । ओ अपनासँ उठि कए दोसरोक बारेमे सोचि सकए । जे चीज अपना नीक नहि लगैत अछि से दोसरो संगे नहि करए । कहबाक माने जे ईश्वरमे आस्था आ विश्वाससँ मनुक्ख तरह-तरहक भेद-विभेदसँ ऊपर उठि कए संपूर्ण मानवताक कल्याणक बात सोचि सकैत अछि। मुदा एहिठाम तँ उल्टे भए रहल अछि । धर्मक नामपर लोक एक-दोसरक शत्रु भए जाइत अछि । जानो लए लैत अछि । हमर भगवान पैघ तँ तोहर भगवान छोट । भगवानोक बँटबारा लोक कए लैत अछि । भगवानक नामपर मार-काट करैत अछि । सोचल जा सकैत अछि ईश्वर एहिसभ बातसँ कतेक दुखी होइत हेताह । कोनो पिताक संतान यदि आपसमे लड़ैत अछि तँ ओकर स्थिति कतेक दुखकर भए जाइत अछि? तहिना हमसभ एकहि परम पिताक संतान छी । हुनका जाहि नामे स्मरण करू ताहिसँ की फरक पड़तैक? जरूरी तँ एहि बातक अछि जे लोकमे वैचारिक उदारता होइक ,जाहिसँ आपसी सद्भाव बढ़ए । तखनहि लोक सही मानेमे सुखी रहि सकैत अछि ।

असलियत तँ ई अछि जे मनुक्ख अपन स्वार्थपूर्तिक हेतु भगवानोकेँ नहि बकसलक । ई हमर भगवान तँ ओ तोहर भगवान। जखन कि सही बात अछि जे आइ धरि भगवानक मौलिक रूपकेँ परिभाषित करबाक कोनो निश्चित आधार नहि अछि। जकरा जे मोन भेलैक से केलक । दुनिआमे एतेक तरह अन्याय होइत अछि मुदा भगवान मूकदर्शक भेल रहि जाइत अछि। समाजक अब्बल लोकक केओ संग नहि दैत अछि । सभ मुँहगरेक संग दैत अछि । आश्चर्य आ दुखक बात अछि जे ईश्वरक नामपर,धर्मक व्याख्या करबाक नामपर आइ धरि दुनिआमे कतेको निर्दोष लोक मारल गेल । कतेको युद्ध भेल । लाखों घर तबाह भए गेल । मुदा समस्या ठामहि रहि गेल । हेबो की करैत? कोनो भगवान ककरो थोड़बे कहैत छथिन जे हमरा नामपर लड़ैत जाह । कदापि नहि । ई सभ विभेद मनुक्ख स्वयं ठाढ़ केलक आ आब ओहिमे पिसाइतो मनुक्खे अछि । दुनिआक कोनो जीव-जन्तु एहिसभ चक्करमे नहि पड़ैत अछि । सभ निचैन जीबैत अछि आ मरि जाइत अछि । ने ओकरासभक कोनो धर्म छैक, ने कोनो पूजाक विधि-विधान । मुदा ओ सभ जीबैत अछि, मस्त रहैत अछि,ककरोसँ नहि लड़ैत अछि । निरंतर आनन्दमे रहैत अछि। सोचबाक बात अछि जे हमसभ अपन-अपन जीवन एतेक कठिन किएक कए लेलहुँ ?

डायरीक पन्नाक-पन्ना भरल छल । सलीमकेँ आगू पढ़बाक साहस नहि भेलैक । ओ डायरीकेँ पलटि कए राखि देलक आ सोचए लागल । ओकरा होइक जे कतहु-ने-कतहु ओ गलतीपर अछि । किछु-ने-किछु चूक ओकरासँ भेलैक जाहिसँ ओकर एकमात्र संतान एतेक दुखी अछि,परेसानीमे पड़ि गेल अछि ।

डायरी आ लोहितक पत्र पढ़ि कए सलीमक मोन बहुत अशांत भए गेलैक । ओकर मोन अपराधवोधसँ भरि गेल रहैक । ओकर बुझेबे नहि करैक जे की करए? ओकरा रहि-रहि कए फातिमा मोन पड़ि रहल छलैक । लगैक जे ओ ओकरा संगे बहुत अन्याय केने अछि । बेसक ओ फातिमाक पिता छैक,मुदा तैं की ओकर जीवनक समस्त अरमानकेँ बरबाद कए देबाक अधिकार ओकरा कतएसँ अएलैक? ओ तुरंत फातिमाकेँ फोन केलक । मुदा ओकर फोन नाट रिचेबल,नाट रिचेबल बजैत रहि गेलैक । ओकरा फातिमासँ गप्प नहि भए सकलैक । बहुत अछता-पछता कए सलीम काजपर चलि गेल । रस्ता भरि ओकर माथामे फातिमाक बातसभ घुमैत रहलैक । ओ फातिमाक कल्याण चाहैत छल । ओकर पिता छल । ओकर सोचमे बहुत यथार्थ रहैक । मुदा समाजक सोचक खिलाफ जेबाक ओकरामे साहसक कमी रहैक । सत्यकेँ बूझब आ ओहिपर कायम रहब,तदनुसार चलब फराक बात होइत छैक । बात एतहि अँटकि जाइत छल ।

20

टीसन बाबू बेसक नौकरी करए धीरपुर आएल रहथि,मुदा कालक्रमे ओतहि बसि गेलाह । ओही माटि-पानिसँ जुड़ि गेलाह । ओहि इलाकामे हुनकर अपन एकटा अलग पहिचान रहनि । जखन ओ कुर्सीपर रहथि,तखन ओ लग-पासक लोकसभकेँ बहुत मदति करथिन । ककरो यदि अकस्मात जेबाक भेलैक तँ ओ सोझे टीसन बाबू लग चलि जाइत । तकर बाद ओकर टिकटक ओरिआन करब हुनकर समस्या भए जाइत छलनि । चाहे जकरा कहए पड़ितनि ओ काज कराइए कए मानितथि । यदि ककरो कोनो समान पार्सल

करबाक अछि तँ ओकरा किछु चिंता करबाक काज नहि होइक । बस टीसन बाबूक कानमे बात जेबाक चाही । घरे बैसल सभटा काज करबा देथि । हे, ई तँ भेल सरकारी काज । अपनहु दिससँ ओ लोकसभकेँ बेर-कुबेर मदति करैत रहलाह । सभकेँ विपत्तिमे ठाढ़ रहितथि । जरूरी होइैक तँ अपन दरमाहोसँ गरीबक मदति कए दितथि । कैकबेर तँ टाका नहि रहलापर कर्जो लए कए लोककेँ मदति कए देथि । एहन आदमी कतए पाबी? एहिसभसँ हुनकर लोकप्रियता बहुत बढ़ि गेलनि । जखन लोकसभकेँ पता लगलैक जे सेवानिवृत्तिक बाद ओ एतहि बसि जेताह तँ ओकरसभक प्रसन्नताक अंत नहि रहैक ।

नियत समयपर टीसन बाबू सेवानिवृत्त भेलाह । तकर बाद धीरपुर आ नाजिरपुरक बीचमे अपन कीनल जमीनपर घरो बना लेलाह । मुदा थोड़बे दिनक बाद इलाकामे दंगा भए गेल । गामक-गाम ओहिमे सुडाह भए गेल । टीसन बाबूकेँ स्वयं सेहो चोट लागल रहनि । किछुए दिनपूर्व हुनकर टांगक पलस्तर कटल रहनि। तकर बादेसँ ओ समाजमे फेरसँ सद्भावनाक माहौल बनेबाक प्रयासमे लागि गेलाह ।

ओहीक्रममे ओहिदिन बैसार भए रहल छल । डाक्टर थॉमस सेहो फातिमाक आबाज सुनि कए ओहि बैसारमे आबि गेल रहथि । कार्यक्रम बहुत नीकसँ संपन्न भेल । तकर बादो कैकठाम बैसार भेल । टीसन बाबूक बात बहुत ध्यानसँ सुनल जाए । मुदा सभकेँ हुनकर प्रयास नीक नहि लगलैक । किछु अतिवादी लोकसभ हुनकासँ तमसाएल रहए । ओकरासभकेँ लगैक जेना टीसन बाबू ओकरसभक धंधा चौपट कए देताह । समाजमे जखन शांति भए जाएत,सभ एक-दोसरक इज्जति करए लागत,सभक

धर्मक सम्मान करत तखन ओकरासभकेँ पुछतैक के? एहि बातसँ ओ सभ बहुत चिंतित रहैत छल । ओकरासभकेँ लगलैक जेना टीसन बाबू ओकरसभक आस्तित्वे संकटमे धए रहल छथि ।

एहि तरहक कट्टर सोचक सिकार किछु अतिवादीसभ आपसमे बैसार केलक ।

“टीसन बाबू तँ खामखा एहि लफड़ासभमे पड़ल अछि ।”

“आदमी तँ ई ठीक रहैक । पता नहि सेवानिवृत्तिक बादसँ कथीमे पड़ि गेल अछि । केहन बढ़िआँ चैनसँ जीबैत छल ।”

“लोकसभक उपकारो करैत छलैक ।”

“एकरा एहि गाममे बसबाक नहि चाहैत छलैक ।”

“ओहि समयमे तँ सभ ओकर समर्थन केने रहए । सभकेँ नीक लागल रहैक जे टीसन बाबू अपने समाजक बीचमे रहि जेताह। केओ ई थोड़े सोचने रहए जे एना-ओना हेतैक ।”

“मुदा आब तँ ई बड़का फसादमे लागि गेल अछि । समाज सुधारक बनए चाहैत अछि । पता नहि एकरा की लिखल छैक?”

“बात तँ सही कहि रहल छह । कैकबेर एकरा इसारासँ बूझेबाक प्रयासो कएल गेल । मुदा ई तँ अड़ल अछि ।”

“तकर फलो तँ ओएह भोगत । हमसभ अपन धंधा चौपट तँ नहि होबए देबैक ।”

“तखन करबहक की?”

“सेहो कहबाक काज छैक?”

इसारासँ ओ सभकेँ अपन बात कहि देलक । सभ एहि बातक समर्थन केलक । योजना बनि गेल । ताहि मुताबिक ओहि रातिमे गामसँ कनीक फटकीए कलम लग ओ सभ धपाएल रहए ।

हम,टीसन बाबू, डाक्टर थॉमस आ फातिमा पैरे-पैरे अबैत रही। सभक इच्छा भेलैक जे आमक मास छैक, कलमे बाटे चली । की पता कोनो गछपक्कू आम हाथ लागि जाए । संगहि कनीकाल चलबाक आनन्दो भेटैत । लगेमे टिसन बाबूक घर रहनि। डाक्टर थॉमस अपन जीप कलमसँ सटले सड़कपर लगा देलनि । जहिना टीसन बाबू कलममे प्रवेश केलाह कि चारि-पाँचगोटे दे-दनादन,दे-दनादन हुनका ऊपर लाठीसँ प्रहार करए लागल । ओहीमे सँ केओ आनो हथिआर चला देलक । जाबे केओ बूझितए,किछु सोचितए ताबे तँ टीसन बाबू खतम भए चुकल रहथि। हुनकर लास जमीनपर पड़ल छल ।

“टीसन बाबू! टीसन बाबू!”

“दोड़ैत जाउ ओ लोकसभ! अनर्थ भए गेल, जुलुम भए गेल । केओ टीसन बाबूकेँ मारि देलक ।”

डाक्टर थॉमस चिचिआइत रहलाह । हमरा तँ बकोर लागि गेल । फातिमा गाछ तरमे नुका गेलि । मौका देखि कए लठैतसभ इएह-ले,ओएह-ले भागि गेल ।

आब तँ सभकेँ अफसोच होइक जे पैरे किएक चललहुँ,साइत जीपमे रहितहुँ तँ एना नहि होइत । मुदा भावी प्रवल। की होइत,की नहि होइत, तकर कोन ठेकान ? मुदा जे भए गेल आब तकर की इलाज छल? टीसन बाबू सन लोकप्रिय आ

समाजसेवी लोकक ई गति होएत से साइते केओ सोचने होएत। मुदा से भेल ।

21

एकरे कहैत छैक छनमे छनाक होएब । घटनाक्रम एतेक जल्दी बदलि जाएत से के सोचने छल? कनीके काल पहिने हमसभ एकहि जीपमे हँसैत-बजैत घर वापस जा रहल छलहुँ । आमक समय छलैक । गाछमे पाकल आमसभ लटकल छल। करवनहु तुबि सकैत छल । ओही लोभमे बाबू जीपसँ उतरबाक चर्च केलनि। फेर सभगोटेकेँ विचार भेलैक जे कनी काल पैरे सेहो चलि लेब । के जनैत छल जे ई महाकालक चक्र छल । एमहर हमसभ जीपसँ उतरलहुँ आ ओमहर बदमाससभ बाबूपर आक्रमण कए देलकनि । जाइत-जाइत ओ सभ आपसमे बड़बड़ाइतो छल -

"बड़ा चलल छलाह समाज सुधारए । आब भोगथु ।"

"ओ आब की भोगतैक? ओ तँ अपन गेल। जे बाँचल अछि से भोगत ।"

"आब से जे होउ । मुदा भाषणबाजीमे अगुआ तँ ई बुढ़बे छल ।"

ई सभ गप्प करैत ओ सभ घटनास्थलसँ निपत्ता भए गेल। जाबे हमसभ सम्हरलहुँ,किछु बुझलिएक,ताबे तँ ओहिठाम केओ नहि रहि गेल छल । बदमाससभकेँ गेलाक बाद फातिमा सेहो सामने आएलि। डाक्टर थॉमस हमर पिताक नारी देखलनि ।

"टीसन बाबू नहि रहलाह ।"-से बजैत ओ जोरसँ साँस छोड़लनि । हम बाबूक प्राणहीन शरीर लग भोकासी पाड़ि कए कानए लगलहुँ ।

कलम लग हल्ला सुनि कए पुलपर अबैत-जाइत लोकक कान ठाढ़ भेलैक । पुलसँ पहिने किछुगोटे आपसमे गप्प-सप्प करैत छलाह । ओहोसभ सतर्क भेलाह । कनीके फटकी लगीचक गामसँ अष्टजाममे अपन पार पूरा कए वापस आबि रहल धीरपुरक लोकसभ सेहो हल्ला सुनि थमकि गेल । ताबतेमे पाछूसँ आबि रहल नाजिरपुरक कुजरनीसभ सेहो ई दृश्य देखि बफारि तोड़ए लागलि। तकरबाद तँ जे जतहि छल,ओतहिसँ कलम दिस दौड़ल । सभ एक-दोसरक पाछू दौड़ि रहल छल । जेना उजाहि उठि गेल होइक। देखिते-देखिते घटनास्थलपर लोकक मेला लागि गेल । ओहीमे सँ किछुगोटे टीसन बाबूक लासकेँ जीपपर रखलक ।

टीसन बाबूक लास देखलासँ नहि बुझाइक जे आब ओ जीबित नहि छथि,हुनकर हत्या कए देल गेल छनि । जिनगी भरि ओहि समाजक बिना कोनो लोभ-लालचकेँ सेवा केनिहार लोकक प्रिय टीसन बाबू एहि दुनिआकेँ छोड़ि चुकल छलाह । थोड़बे कालमे जीपसँ हुनकर लास दरबाजापर पहुँचल । लासकेँ नीचाँ उतारल गेल । ओकरा तिरंगासँ झाँपि देल गेल । कनीके मुँह उघारल छल,जाहिसँ लोकसभ हुनकर अंतिम दर्शन कए सकथि, श्रद्धांजलि दए सकथि।

हमर माए अपन नैहर गेल रहथि । हुनका फोन करबाक ककरो साहस नहि होइक । कहीं ओ ई समाचार सुनि हृदयाघातक सिकार ने भए जाथि । ओहुना हुनका बहुत दिनसँ हृदय संबन्धी बिमारी छलनि । मुदा समाद तँ देनहि छलैक । आखिर डाक्टर

थॉमस हमर पितिऔत मामाकेँ फोन पर एहि घटनाक जानकारी देलखिन । इहो कहलखिन जे हुनके हेतु अंतिम संस्कारकेँ रोकल गेल छैक । तेँ ककरो संगे ओ तुरंत आबि जाथि ।

हमर माए अपन माता-पिताक एकमात्र संतान रहथि । नैहरमे आब केओ अपन नहि छलनि । तथापि कहिओ-कहिओ ओतए जाए पड़नि । जे किछु हमर नानाक संपत्ति छलनि तकर हिसाब-किताब आब हुनके करबाक रहैत छलनि । हमर पितिऔत मामासभक इच्छा रहनि जे ओ सभ चीज-वस्तु हुनकासभकेँ छोड़ि देल जानि । हुनकर पुरखाक संपत्तिपर हुनके हक हेबाक चाही । से ओ सभ गाहे-बगाहे बजबो करथि । आब जखन टीसन बाबू स्वर्गबासी भए गेलाह तँ इहो विषय तय हेबे करत । ओ सभ से सोचि संतोष केलनि । हमर माएकेँ जेना-तेना फुसला कए कारपर बैसओलथि । ओ बेर-बेर पुछथिन-

“बात की छैक? हमरा एना अचानक किएक लए जा रहल छी? हम तँ अखन किछु दिन नैहरमे रहए चाहैत छलहुँ । हम अचानक एना वापस जा रहल छी से अहाँसभकेँ नीक नहि लागि रहल अछि की?”

सभ हुनका बुझओलकनि । किछु-किछु बहाना बनाबनि । असली बात कोना कहितनि? जखन ओ बहुत जीद्द करैत रहि गेलखिन तँ एतबे कहल गेलनि-

“टीसन बाबू जीपपरसँ खसि पड़लाह अछि ।”

“की कहलहुँ? की भेलनि टीसन बाबूकेँ? केओ किछु कए देलकनि की? ओ नीके छथि ने? हम तँ हुनका सदिखन मना

करिअनि जे अहिसभमे नहि पड़ू । मुदा ओ हमर बात नहि मानलनि।”

जेना-तेना हुनका धीरपुर आनल गेल । ओहिठाम पुलेपरसँ लोकक भीड़ देखेलनि । जीपकेँ कनीक आगू बढ़ितहि किछुगोटेक कनबाक आबाज सुनेलनि । एहिसभसँ माए बहुत क्षुव्ध छलीह । हुनका होनि-

“संभवतः ई सभ हमरासँ किछु नुका रहल अछि? पता नहि ओ केना छथि?” रहि-रहि कए हुनकर दहिना आँखि फरकि रहल छलनि । एहिसँ मोन सशंकित रहबे करनि ।

आखिर जीप हमर दरबाजापर पहुँचल । संगमे हमर पितिऔत मामा रहथि । हमसभ सेहो जीप लग पहुँचि गेल रहथि । हमरा देखितहि ओ पूछि बैसलथि-

“की भेलैक? बाबू कहाँ छथुन?”

हम किछु उत्तर नहि दए सकलिऐक । माएकेँ देखितहि आओर जोरसँ कानए लगलहुँ । माए बूझि गेल जे बात बहुत गड़बड़ अछि ।

“साफ-साफ किएक नहि बजैत छह?”

“बाबू नहि रहलाह।”

हम एतेक बजले छलहुँ कि ओ धराम दए दरबाजापर खसलीह । चारूकातसँ लोकसभ दौड़ल । हुनकापर पानिक झोंका देबए लागल । मुदा ओ टस सँ मस नहि भए रहल छलीह । हुनका दाँती लागि गेल रहनि । एमहर बाबूक लास आ ओमहर माए बेहोस। ई दृष्य देखि हम गुम्म पड़ि गेलहुँ ।

आखिर फातिमा आगू बढ़लि । लोहित पानि अनलक । डाक्टर थॉमस माएकेँ कोनो सुइआ देलखिन । थोड़े कालक बाद माएकेँ होस आबि गेलनि । ओ उठि बैसलीह । हम हुनका बाबूक लास लग लए जाइत छी । एतबहिमे किछुगोटे चिचिआ उठल- "फातिमा एतए की कए रहल अछि? सभ फसादक जड़ि ओएह अछि । नीक चाहैत अछि तँ ओ एहिठामसँ तुरंत हटि जाए ।"

22

टीसन बाबूक हत्याक समाचार इलाकामे बिजलौका जकाँ पसरि गेल । मास दिनसँ बेसीएसँ पूरा इलाका तनावमे छलहे । ई घटना तँ जेना आगिमे घी देबाक काज केलक । अतिवादीसभक हेतु ई स्वर्णिम अवसर छल । ओ लोकसभकेँ उत्तेजित करबामे कोनो कसरि नहि छोड़लक । गाम-गामक युवकसभ टीसन बाबूक घर दिस बिदा भेल । ककरो हाथमे लाठी,ककरो हाथमे बरछी ,तँ केओ भाला लेने छल । किछु नवयुवक अपन-अपन हाथमे तिरंगा झंडा सेहो लेने छलाह । लगैक जेना ओ सभ कोनो शत्रु देशपर आक्रमणक हेतु जा रहल होथि । ओ सभ बीच-बीचमे तरह-तरहक नारा लगबैत छलाह ।

"इनकिलाब! जिंदाबाद !"

"टीसन बाबू जिंदाबाद!"

जाहि-जाहि गामसँ ओ सभ जाइत छलाह ओहिठामक किछुगोटे हुनकासभक संगे अबस्स जुड़ि जाइत छल । एहि तरहें लोकक जबरदस्त हुजुम टीसन बाबूक दनान लग एकत्रित भए

गेल। देखिते-देखिते ततेक लोक जमा भए गेल जे ओकरासभकेँ ठाढ़ हेबाक जगह नहि रहैक । सभगोटेमे एकटा विचित्र उत्तेजना छलैक । टीसन बाबूक हत्याराकेँ तुरंत दंडित करबाक संकल्प छलैक । सरकारी आदमीसभक कान ठाड़ भेल । एक सँ एक अधिकारी लोकनि ओहिठाम पहुँचि गेलाह । मीडिआ बला सभकेँ तँ पहुँचबेक छलनि । लगैक जेना मेला लागि गेल होअए ।

अधिकारी लोकनि कतबो बूझेबाक प्रयास केलाह,मामिला नहि सम्हरलनि। लोकसभ पंडितजीक हत्याक उदाहरण देबए लागल । मास दिनसँ बेसीए भए गेल छलैक । मुदा ककरो किछु नहि भेलैक। केओ पकड़ल नहि गेल । एहू बेर सएह नहि होएत तकर कोन ठेकान? लोकसभकेँ अधिकारीलोकनिक बातपर विश्वास नहि होनि। सभ अड़ल रहए जे जाबे टीसन बाबूक हत्यारासभ पकड़ल नहि जाएत,ओकरासभकेँ दंड नहि भेटत,ताबे ओ सभ टस सँ मस नहि होएत । मामिला बहुत गंभीर भए गेल छल । युवकसभ टीसन बाबूक लासकेँ घेरि कए जोर-जोरसँ नारा लगा रहल छलाह ।

ओमहर हमर माएक स्थिति खराब होइत गेलैक । हल्लामे लोकक ध्यान ओकरा दिस नहि रहलैक । ओ फेर बेहोस भए गेलि। हमरा होअए जे ओ निन्न पड़ि गेल अछि । तेँ हम ओकरा ओहिना छोड़ि देलिऐक । भने कनी विश्राम कए रहल अछि । ताबतेमे डाक्टर थॉमस ओतए अएलाह । माएक स्थिति देखि हुनका चिंता भेलनि। ओ माएक छातीमे आला लगबैत छथि । तकर बाद हमरा दिस देखि सुन्न पड़ि जाइत छथि ।

“की भेल?”

मुदा ओ किछु बाजि नहि सकलाह । हम फेर पुछलिअनि ।

“बात की छैक?”

“माए नहि रहलीह ।”

ई बात सुनि हमरा माथपर जेना ठनका खसि पड़ल । किछु फुरेबे नहि करए जे की करी? देखिते-देखिते हमर माए आ बाबू दुनूगोटे हमरासँ छिना गेल छलाह । हम अनाथ भए गेल छलहुँ । आब ककरा लग अपन मोनक बात करब? के दिन-राति हमर कल्याण हेतु व्यग्र रहत ? साइत केओ दोसर एहन भइए नहि सकैत अछि । एहि संसारमे माता-पिता ईश्वरक रूप होइत छथि जे बिना कोनो अपेक्षाकेँ संतानक कल्याण सोचैत रहैत छथि,ओकर हित करैत रहैत छथि । एहन निर्दोष लोकक एहन अंत होएत से केओ नहि सोचि सकैत छल । हमरा तँ स्वप्नोमे एहन आशा नहि छल । मुदा समय जखन खराब होइत छैक तखन एहिना सभकिछु प्रतिकूल होइत चलि जाइत छैक । नहि तँ अपन इलाकामे ,घर लग पहुँचि कए हुनकर हत्या किएक होइतनि? ओ सभ अनेरे आमक लोभमे पड़ि जीपसँ उतरि पैरे किएक चलितथि ? तरह-तरहक बात मोनमे अबैत रहल । ऊपरसँ माहौल से बहुत खराब भए गेल छल । युवकसभ तुरंत बदला लेबाक हेतु आतुर छलाह । हुनकासभमे प्रतीक्षा करबाक धैर्यक अभाव रहनि । तकर किछु वाजिब कारण रहैक । पंडितजीक हत्या भेला मास दिनसँ ऊपर भए गेल मुदा किछु नहि कएल गेल । केओ नहि पकड़ल गेल । तखन की आशा लोक करैत?जखन बात हाथसँ निकलैत बूझेलैक आ अधिकारीलोकनिक आग्रहक कोनो अनुकूल असरि नहि भेल तँ ओ सभ हमरा लग आबि कहैत छथि-

“अहींकेँ किछु करबाक होएत । ओ सभ तँ किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि छथि । एहन माहौलमे बहुत भारी दुर्घटना भए सकैत अछि । भीड़ हिंसात्मक भए रहल अछि । एहिसभसँ तँ समस्या आओर कठिन भए सकैत अछि । पुलिसकेँ हारि कए वलप्रयोग करए पड़ि सकैत अछि ।

आखिर हम लोकसभकेँ बूझेबाक प्रयास केलहुँ -

“अहाँसभक तामस वाजिब अछि । किछु विभ्रमित लोकसभ निर्दोष लोकक जान लए रहल छथि । हिंसा कए रहल छथि । एहने कुचक्रमे हमर बाबू सेहो फँसि गेलाह । मुदा हमर सभक हुनका प्रतिए सही मानेमे इएह श्रद्धांजलि होएत जे हुनकर विचारकेँ आगू बढ़ाबी । समाजमे फेरसँ सद्भाव स्थापित करी । प्रतिशोधसँ करवनहु समाधान नहि होएत । अरवन हमरा लोकनि हिनकरसभक अंतिम संस्कार करी आ ओतहि संकल्प करी जे समाजसँ गलत विचारकेँ उखारि कए रहब । हम अपन आगूक संपूर्ण जीवन एहि काजकेँ समर्पित करबाक संकल्प करैत छी । हमर माता-पिताक प्रतिए हमर इएह सभसँ नीक श्रद्धांजलि होएत ।”

हमर कहबाक असरि भेलैक । युवक लोकनि शांत भेलाह। हमर माए-बाबूकेँ एकहि संगे अंतिम यात्रापर बिदा करबाक तैयारी प्रारंभ भेल । लोकसभ निरंतर पुष्पवर्षा करैत रहलाह । भगवानक कीर्तन करैत रहलाह । थोड़बे कालमे हमसभ अपन कलम पहुँचि गेलहु । बाबू ओहि कलमकेँ कीनने रहथि । आमक मासमे बहुत यत्नपुर्वक ओकर रखबारी करितथि । जखन बेसी आम फरितैक तँ ओकरा सहर्ष लोकसभमे बँटितथि । आइ ओ कलमो उदास लागि रहल छल । जेना गाछसभक एक-एकटा पात अश्रुपूर्ण नेत्रसँ हुनका बिदा कए रहल छल ।

हम लगीचक पोखरिमे स्नान केलहुँ । ओ पोखरि कि छल,चभच्चा छल । ओहिमे स्नान केलासँ तँ आओर अशुद्ध भए गेल होएब । मुदा लोकाचारक निर्वाह करबाक हेतु ई सभ करब जरूरी छल । तकर बाद कोहामे पानि भरलहुँ आ हुनका लोकनिक लास लग ओकरा रखलहुँ । ओही पानिसँ दुनूगोटेकेँ स्नान कराओल गेल। हुनका लोकनिकेँ पीताम्बरीसँ झाँपल गेल । तकर बाद बहुत आदर आ श्रद्धासँ दुनूगोटेक लासकेँ चितापर राखल गेल । लोकसभ एक-एक कए ओहिपर जारनि रखैत गेल । थोड़बे कालमे चिता तैयार भए गेल । पंडितजी द्वारा मंत्रोच्चारक बीच हम चितामे आगि लगेलहुँ ।

देखिते-देखिते माए आ बाबू एकहि संगे धू-धू कए जरि रहल छलाह । हम चुपचाप कोनमे ठाढ़ देखि रहल छलहुँ । एहन दृश्य देखए पड़त से स्वप्नोमे नहि सोचने रही । मुदा अपना हाथमे की छल? नियतिक आगू हमसभ विवश छलहुँ । हमरा मोन पड़ए माएक बात । ओ सदिखन कहैत रहैत छलि-

"हम हुनकर संगे जेबौ । हुनका बिना एक क्षण नहि रहि सकब ।"

से बात ओ सही साबित कए देलनि । माए आ बाबूकेँ एकहि दिनमे संग छुटि गेलाक बाद आइ हमरा लगैत छल जेना सही मानेमे अनाथ भए गेलहुँ । मुदा मोने-मोन इहो भाव अबैत छल –

"हमर माए-बाबू भने चलि गेलाह । मुदा मातृभूमिक ऋण तँ अछिए। राष्ट्रक प्रति अपन कर्तव्य चुकेबाक अछिए । तखने माता-पिताक हमरा जन्म देब सफल रहतनि । तखनहि बाबूक आत्माकेँ शांति भेटतनि । तेँ कठिन परिस्थितिसँ भागबाक नहि छैक ।

अपितु, आओर द्दढ़तासँ संघर्षमे जुटबाक छैक । तखनहि अपनो आ समाजोक कल्याण संभव अछि ।”

हमरा मोनमे एहि तरहक विचार अबिते रहल । हम माए-बाबूक साराक तिरपेक्षण करैत काल ई संकल्प बेर-बेर दोहरेलहुँ । मोने-मोन निश्चय केलहुँ जे हिनका लोकनिक श्राद्ध संपन्न केलाक बाद ओही संकल्पक पूर्णताक हेतु काज करब । जाधरि हमर जीवन रहत,हम समाज आ राष्ट्रक प्रति समर्पित रहब ।

23

हिमेश बाबूक समय आब बेसी काल इसकूलेपर बीतैत छलनि । इसकूलमे विद्यार्थीसभक पढ़ाइ-लिखाइ नीकसँ चलैत रहए ,ताहि हेतु ओ दिन-राति एक केने रहैत छलाह । मुदा जखन सौंसे समाजक माहौल गड़बड़ाएल तँ तकर प्रभाव इसकूलपर कोना नहि पड़ैत? शिक्षक लोकनि सेहो जातीय-धार्मिक गुटमे बँटि गेल रहथि । विद्यार्थीसभ सेहो शिक्षकेसभक अनुसरण करैत पढ़ाइ छोड़ि गोलैसीमे व्यस्त रहैत छलाह ।

टीसन बाबूक हत्याक समाचार सुनि ओहि दिन इसकूलमे दू मिनटक मौन राखल गेल । हुनका श्रद्धांजलि देलाक बाद जल्दीए छुट्टी कए देल गेलैक । हिमेश बाबू ठोकले हमरा ओहिठाम पहुँचि गेलाह । ओतए केओ नहि भेटलनि । ताबे सभगोटे कलम पहुँचि गेल छल । ओतएसँ ओ कलम दिस बिदा भेलाह । रस्तामे तरह-तरहक बात मोनमे सोचाइत रहलनि ।

"केहन भए गेल ई समाज? जखन टीसन बाबू सन परोपकारी आ इमानदार व्यक्तिक ई गति भए सकैत अछि, ततए की उमीद कएल जाए? कारण ओ तँ सौंसे जिनगी लोकक उपकारे करैत रहि गेलाह। ई इलाका एहिठामक लोक,एतुका माटि-पानि हुनका ततेक प्रियगर भए गेलनि जे ओ अपन गाम छोड़ि एतहि बसि गेलाह । एकरे अपन गाम बना लेलाह । एहि ठामक समाजक लोको हुनका तहिना मानैत छल । ककरो कोनो कष्ट होइतैक,हुनका लग परामर्श हेतु पहुँचि जाइत । पहिने तँ ओ टीसने बाबू धरि सीमित रहथि । मुदा क्रमशः ओ एहि समाजक सर्वमान्य आ अत्यंत लोकप्रिय समांग भए गेल रहथि । सभक जीवन-मरणमे संगे रहथि । तथापि के एहन पतित भेल जे हिनकर हत्या कए देलक? जरूर ओ केओ बाहरी लोक रहल होएत? जरूर ओकर मोनमे किछु आओर योजना रहल होएतैक ।"

इएहसभ सोचैत-सोचैत ओ श्मशान पहुँचि गेलाह । मुदा देरी भए भए गेलनि। ताबे हमसभ दाह-संस्कार संपन्न कए स्नान करबाक हेतु पोखरिपर पहुँचि गेल रही।

हिमेश बाबू बड़ी काल धरि चितासँ निकलैत धुँआकेँ देखैत रहलाह । फेर हाथ जोड़ि दिवंगत आत्मासभकेँ श्रद्धांजलि देलनि आ वापस भए गेलाह । एमहर हिमेश बाबू हमर दलानपर पहुँचले छलाह कि हमहुसभ पोखरिमे स्नान कए दनानपर पैर रखलहुँ । ओ हमरा एकटक देखैत रहि गेलाह । ओ ततेक दुखी बुझेलाह जे हम अपन दुखकेँ दाबि लेलहुँ । हुनका शांत रहबाक प्रयास केलहुँ । मुदा ओ तँ बच्चा जकाँ कनिते जा रहल छलाह । बूझेबे नहि करए जे हुनका कोन तरहें शांत कएल जाए?

हिमेश बाबू क्रमशः शांत भेलाह । ओ नीकसँ बुझैत छलाह जे एहि संसारमे लोक अबिते अछि,जेबाक लेल । जखन जकर समय पुरि जाइत अछि ओ बिदा भए जाइत अछि । टीसन बाबू शृष्टिक एहि शाश्वत नियमक अपवाद कोना होइतथि? आइ धरि केओ नहि भए सकल । इहो कम संतोषक बात नहि छलैक जे ओ अंत-अंत धरि समाजक कल्याण सोचैत रहलाह , ताहि प्रयासमे लागल रहलाह आ ओही क्रममे एहि दुनिआकेँ छोड़ि गे लाह । अनेरे केओ अपन माथपर हुनकर हत्याक कलंक थोपि लेलक । ओ तँ निमित्त मात्रे छल । समयकेँ अपन काज करबाक छलैक,से केलक।

हमर दनानपर जमा भेल लोकक भीड़ क्रमशः छटि रहल छल । ओहिठाम रहिओ कए केओ की करैत? जे हेबाक छल,से भए गेल छल । आगूक कारबाइ माहौल शांत भेलाक बादे कएल जाएत । किछुगोटेक कहब रहनि जे तुरंत कारबाइ हेबाक चाही। समय बीति गेलाक बाद लोक बिसरि जाइत अछि । पंडितजी मामिलामे से लोक देखि चुकल अछि । किछुगोटे पुलिसमे सिकाइत करबाक हेतु उद्यत छलाह। किछुगोटेक विचार जे हत्याक उत्तर ओही तरहे देल जा सकैत अछि । मुदा फातिमा ओकरासभकेँ बुझेबाक प्रयास केलक । लोहित सेहो ओकर समर्थनमे आगू आएल ।

हिमेश बाबूक नजरि फातिमा आ लोहितपर पड़लनि। संभवतः पहिल बेर ओ फातिमा आ लोहितकेँ एक संगे देखि रहल छलाह ,सेहो एहन माहौलमे । फातिमा अपन घर वापस जेबाक प्रयासमे छलि । लोहित ओकरा अरिआति रहल छल ।

दुनूगोटे हल्ला-गुल्ला सुनि कए कतहु कात भए गेल रहए। आब माहौल किछु शांत भेल छल । टीसन बाबूक सपत्नीक दाह संस्कार संपन्न भए गेल छल । तैं ओ सभ ओहिठामसँ सकुशल निकलि जेबाक प्रयासमे छलाह कि अचानक हिमेशकेँ कनैत देखि थमकि गेलाह । लोहितकेँ मोन होइक जे हुनकर पैरपर खसि कए क्षमा मांगि लिअए। मुदा साहस नहि होइक । फेर संगे फातिमा सेहो छलैक । ओकरा कोनो कष्ट नहि होइक से ओ भरिसक प्रयासमे लागल छल। ओ पहिनहिसँ बहुत तनावमे छलि । तैं ओकरा बचाएब बहुत जरूरी छल । मुदा अपन पिताकेँ ओहि हालमे छोड़ि निकलि जाएबो ओकरा उचित नहि बुझाइक,संभवो नहि रहैक । तैं ओ रूकल । हुनका प्रणाम केलकनि । फातिमा कातमे सहटि गेलि । हिमेशकेँ से नीक नहि लगलनि । ओ इसारासँ फातिमाकेँ अपना दिस बजओलनि आ बहुत सिनेहसँ ओकर माथपर हाथ राखि देलनि ।

“अहाँ हमर बेटीए छी । कोनो चिंता करबाक काज नहि । हम सलीमकेँ बूझा देबैक । ई विवाद आब एतहि खतम हेबाक चाही ।”

हिमेश बाबूक हाथ अपन माथपर देखि फातिमाक संपूर्ण शरीर रोमांचित भए गेलैक । हिमेशक मुँहे ई बातसभ सुनि कए फातिमा बहुत आश्वस्त लगैत छलि । ओकरा लगलैक जेना ओकर तपस्या आब पूर्ण भए कए रहत । आब ओकरा लोहितसँ केओ फराक नहि राखि सकत,सलीमो नहि। कारण ओकरा हिमेश आ सलीमक दोस्ती बूझल रहैक । ओ नीकसँ जनैत छलि जे सलीम हुनकर बात कदापि नहि काटि सकत । आइ बहुत दिनक बाद ओकर मोन कनीक हल्लुक भेल छल । ओकरा मोन भेलैक जे

हिमेश बाबूक पैरपर खसि पड़ए आ कहनि जे हम जे छी से आब अहींक छी,अहाँक परिवारक अंग छी । आब एहिमे कोनो सोच-विचारक प्रयोजन नहि रहि गेल छैक । मुदा आगू नहि बढ़ि सकलि। मुरुत जकाँ ठामहि रहि गेलि । संभवतः सही समयक प्रतीक्षामे.. छलि ।

असलमे लोहित तँ पहिनेसँ ई बात बूझैत छल जे हिमेश बाबू ओकरासभकेँ अपन आशीर्वाद अबस्स देताह । ओ किछु होथि,कठोर नहि छलाह । हुनकामे मनुष्यता भरल छलनि । फेर लोहित हुनकर एकमात्र संतान छलनि । तकरेसँ मनभेद ओ केना आ किएक करितथि ? मुदा एहिठाम तँ तेसरे लोकसभ अगिआ बेताल भए गेल छल । अपना-आपकेँ समाजक संरक्षक घोषित कए देने छल आ रक्षाक नामपर विध्वंस कए रहल छल । तेँ ई समस्या एतेक भयानक रूप धए लेलक । फोंसरीसँ भोकन्नर भए गेल ।

किछुगोटे ओकरासब दिस बढ़ल आबि रहल छल । संभवतः ओ सभ टीसन बाबूक हत्यासँ बहुत उत्तेजित छल । ओकरासभक हाथमे तरह-तरहक बैनर सभ छलैक । ओकरासभकेँ देखि लोहित फातिमाक कानमे फुसफुसाएल , जल्दीसँ फातिमाकेँ जीपपर बैसओलक आ बिदा भए गेल । हिमेश बाबू टुकुर-टुकुर देखैत रहि गेलाह। जोर-जोरसँ हाथ हिला कए हुनका लोकनिकेँ आश्वस्त करैत रहलाह । जीपक चलबाक आबाज सुनि हम ओमहरे बढ़लहुँ । हम ओकरासभकेँ किछु कहए चाहलिऐक । मुदा ताबे जीप बहुत आगू बढ़ि गेल छल ।

हिमेश बाबूक स्वास्थ्य अनुकूल नहि रहैत छलनि । तेँ ओ अपन गतिविधि इसकूले धरि सीमित कए लेने छलाह । बँकिए

काज लोहितपर छोड़ि देने रहथि । मुदा लोहित उचित ध्यान नहि दए पाबथि । परिणामतः खेती-बारीसँ उपजा कम होइत गेल । बहुत रास जमीनसभ बिका गेल । परिवारक आर्थिक स्थिति गड़बड़ाइत गेल । लोहितक बेसी समय सलीमक ओहिठाम बीति जाइत छल । बात ओतबे नहि रहल । क्रमशः ओ फातिमाक संगे ओझराइत गेल । तकर जे परिणाम भेल से सभगोटे देखलक । इलका अशांत भए गेल । चारूकात हिंशा, घृणा भरि गेल छल । लोक एक-दोसरसँ डराइत छल । टीसन बाबूक हत्याक बाद माहौल आओर खराब होमए लागल । मुदा हम जी-जानसँ स्थितिकेँ नियंत्रण करबाक प्रयास केलहुँ । हम अपन माए-बाबूक श्रद्धांजलि स्वरुप समाजकेँ एक बेर फेर पुरने हालमे आनबाक हेतु कृतसंकल्प रही । एजि काजमे फातिमा,लोहित, डाक्टर थॉमस सेहो जी-जानसँ जुटि गेल रहथि । मुदा समाजमे विद्यमान अतिवादी लोकनिकेँ हमर विचार पसिंद नहि आबि रहल छलैक । ओ सभ विध्वंशक गतिविधि आगू बढ़ेबाक हेतु अड़ल छल ।

24

हिमेश बाबू बड़ीकाल धरि लोहित आ फातिमाकेँ जीपसँ जाइत देखैत रहि गेलाह । हुनका अफसोच होनि जे ओहो संगे किएक नहि चलि गेलाह । किएक नहि ओहि भीड़मे एक बेर चिचिआ कए कहि देलनि-

“फातिमा आ लोहित ओकर परिवारक अंग अछि । ककरो एहि बीचमे अएबाक प्रयोजन नहि अछि । ओ अपन पारिवारिक समस्याक समाधान करबामे स्वयं सक्षम छथि ।”

जाधरि जीप अदृश्य नहि भए गेल ओ ओतहि ठाढ़ रहि गेलाह । किछु-किछु सोचैत रहलाह । फेर एकाएक पाछू घुमलाह,हमरा देखि बाजि उठलाह-

“आब हम चलैत छी । तूँ धैर्यसँ अपन काजमे लागल रहह जाहिसँ टीसन बाबूक वलिदान व्यर्थ नहि जाए ।”

ओहिठामसँ निकलि हिमेश बाबू अपन घर वापस नहि गेलाह । ओ सोझे सलीमक कोठीपर पहुँचलाह । ओ मोनमे निश्चय कए लेने रहथि जे आइ सलीमसँ स्पष्ट रूपसँ अपन बात कहताह जाहिसँ फातिमा आ लोहितक जिनगी आसान होइक ।

हिमेश बाबू सलीमक घर लग पहुँचैत छथि । ओहिठाम गेटपर ताला लागल छल । प्रहरीसभ मकानक बाहर चारूकात पहरा दए रहल छल । ओहिठामक माहौल देखि हुनका बुझा गेलनि जे साइत सलीमसँ भेंट नहि होएत । ओ एहि बातसँ बहुत दुखी भेलथि । हुनका परेसान देखि एकटा प्रहरी पुछलकनि-

“बाबा! कतए जेबाक अछि?”

“सलीमसँ भेंट करबाक छल ।”

“ओ तँ बाहर गेल छथि ।”

“कहिआ धरि वापस अएताह?”

"से हमसभ की जाने गेलिऐक? अपने हुनकर मनेजर सँ भेंट कए लिअ । साइत ओ एहि विषयमे किछु जानकारी दए सकताह ।"

"ठीक छैक । हमरा हुनकेसँ भेंट करा दएह ।"

एकटा प्रहरी हमरा संगे मनेजरक कोठरी दिस बिदा भए जाइत अछि ।

सलीमकेँ नहि रहने मनेजर मौज मना रहल छल। कार्यालय अएलाक बाद चढ़ा देलक आ सोफापर सुति रहल । हिमेश संगे प्रहरी गेटपर पहुँचि कैकबेर केबार ठकठकओलक । मुदा मनेजर टस सँ मस नहि भेल । ओ गहन निद्रामे छल । आखिर,प्रहरी घंटीक स्वीच दबओलक आ दबेने रहि गेल । मनेजर घंटीक आबाज सुनि तमसाइते उठल-

"के अछि?"

"हिमेश बाबू आएल छथि?"

"तँ की भए गेलैक? कोन अन्हड़ उठि गेलैक जे तूँ एतेक जोरसँ घंटी बजा रहल छैं। कनीको मनुष्यता तोरामे नहि छौ? देखि रहल छैं जे हम सुतल छी । तखनहु एतेक उपद्रव करबाक की औचित्य अछि? तोरा सन-सन लोककेँ नौकरीमे रखबाक कोनो प्रयोजन नहि अछि । अपन हिसाब-किताब करबा ले । काल्हिसँ अएबाक कोनो काज नहि । हमरासभकेँ तोरा सन मूर्ख प्रहरी नहि चाही ।"

प्रहरीक स्थिति बहुत खराब भए गेलैक । ओकरेपर परिवार चलि रहल छलैक । यदि ओकर नौकरी छुटि गेल तँ ओकर परिवार तँ बरबाद भए जाएत ।

"गलती भए गेलैक श्रीमान्। आगूसँ एहन गलती नहि होएत। माफ कए देल जाए ।"

"एकर कोन प्रमाण अछि जे तूँ फेर एहन काज नहि करबैं।"

"एकटा मौका देल जाए सरकार! यदि फेर गलती होइत अछि तँ जे दंड उचित बुझाए से देब ।"

"ठीक छैक । मुदा अखन जे परेसान केलैं, हमर काँच निन्न तोड़ि देलैं तकर ...?"

"जे कहबै सरकार!"

"साँझमे एकडाबा टटका दूध घरपर पहुँचा दिहैं... ।"

"ठीक छैक सरकार!"

मनेजर हिमेश बाबूकेँ नीकसँ जनैत छल । मुदा ओकरापर निसाँक असरि माथ धरि पहुँचि गेल रहैक । हिमेश बाबूपर ध्यान जइतहि ओ बाजि उठल-

"अहाँ आब की करए अएलहुँ अछि? जखन हमर बेटाकेँ अहाँक इसकूलमे फेल कए देलक तखन तँ कान पथने रही । मोन अछि कि नहि? हम अहाँक कतेक खुसामद केने रही जे कम सँ कम थर्डो डिबिजनमे पास करबा दिऔक । मुदा अहाँ हमरे ऊपर तमसा गेलहुँ । की-की ने कहलहुँ । शिक्षकसभ हमरापर हँसैत रहि गेल।"

"तँ हम की करितिऐक? तोहर फेल बेटाक बदलामे हम पढ़ि दितिऐक की? "

"अहाँ जे चाहितिऐक से शिक्षकसभकेँ करए पड़ितैक । आर-आर विद्यार्थीसभ जे पास केलक से केना भेलैक?"

"केना भेलैक? कोनो अहाँकेँ बूझल नहि अछि जे घत काढ़ि रहल छी ? "

"जे मोनसँ मेहनति केलकैक तकरा नीक नंबर कोना ने अबितैक?"

"हमरा लग खिस्सा नहि गढ़ू । चुपचाप रस्ता पकड़ू । अखन काज लगलनिहैं तँ बकड़ी जकाँ मिमिआ रहल छथि ।"

हिमेश बाबूकेँ मनेजरक बात बहुत खराब लगलनि । बहुत मोन खिन्न भेलनि । कारण ओ अनरगल बाजि रहल छल । मुदा प्रहरी इसारा केलकनि । ओकर बात बूझि ओ चुप्पे रहि गेलाह ।

"सलीम साहेब कहिआ धरि अएथिन? - जाइत-जाइत प्रहरी पुछलक।"

"ओ कोनो हमर कुटुम्ब नहि छथि जे सभटा बात पता रहत। एतबा बूझल अछि जे ओ बाहर गेल छथि । आब तूँ सीआइडी जकाँ प्रश्न-उत्तर केनाइ बंद कर आ हिनका संगे शीघ्र एहिठामसँ प्रस्थान कर । हमरा बहुत निन्न लागल अछि ।"

मनेजर बेसक पीने छल ,मुदा ओकरा मुँहे सभटा बात अकस्माते नहि बहरा गेल रहैक । ई बातसभ ओकरा मोनमे बहुत दिनसँ घुरिआइत रहैक । फातिमा प्रकरणमे ओ बहुत सक्रिय छल। तखनहिसँ अतिवादी तत्वसभक लगीच सेहो आबि गेल रहए । मोने-मोन ओ लोहितकेँ दोषी बुझैत छल । तेँ हिमेश बाबूकेँ सामने देखि ओ मोने-मोन बहुत आक्रोशित छल । जाइत-जाइत ओ हिमेश बाबूकेँ कहिए देलकनि-

“सभटा आगि अहींक बेटा लगओलक । तहिआसँ सलीम साहेब परेसान छथि । साइत एही विषयमे गप्प करए चाहैत छलाह।”

हिमेश बाबू मनेजरक व्यवहारसँ बहुत दुखी भेलाह । सलीमक ओ पुरान दोस्त छलाह । कहि नहि कहिआसँ हुनका सलीमक ओहिठाम आबाजाही रहनि । मुदा बूझा गेलनि जे अखन ओ पीने बुत्त अछि । तेँ ओकरासँ बात केनाइ बेकार थिक ।

हिमेश बाबू प्रहरीक संग ओहिठामसँ बिदा भए गेलाह । कनीके आगू बढ़ल हेताह कि मनेजर दौड़ल आएल ।

“हिमेश बाबू! हिमेश बाबू!”

“आब की भेलह?”

“सलीम साहेबक फोन आएल छल । हम हुनका अपने बारेमे कहलिअनि । ओ तुरंत गप्प करेबाक हेतु कहलाह । अहाँ ताबे निकलि गेल रही । हम ई बात हुनका कहबो केलिअनि । तँ हमरेपर तमसाए लगलाह -

“हुनका हमरासँ फोनपर गप्प किएक नहि करेलैं? हुनका वापस आन । हमरा बहुत जरूरी गप्प करबाक अछि ।”

“तूँ तँ पीने बुत्त छलह । एकाएक एतेक होसमे कोना आबि गेलह?”

“गलती माफ करू । जिनगीक प्रश्न छैक । सलीम साहेब बहुत तमसाइत रहथि । अहाँ हुनकासँ फोनेपर गप्प कए लिअ । हुनका किछु जरूरी बात करबाक छनि ।”

मुदा हिमेश बाबू नहि घुमलाह । तखन मनेजर ओतहि फोन लगेबाक प्रयास केलक । मुदा सलीमक फोन नहि लगलैक । आखिर हिमेश बाबू ओहिठामसँ आगू बढ़ि गेलाह।

25

फातिमा-सलीम प्रकरणमे जे किछु भेल तकर मार्गदर्शक मनेजरे छल । मुदा केओ ओकरा कतहु नहि देखलक । ओ ककरो सामने नहि आएल । अखनहु साइते केओ अनुमान लगा सकत जे ओ एहनो कए सकैत अछि । मुदा सत्य तँ ओएह छल । अखनहु ओ चैनसँ बैसल नहि छल । सलीमकेँ बाहर चलि गेलाक बादो ओ फातिमा-लोहित प्रकरणमे बहुत रूचि लए रहल छल । कारण जाइत-जाइतो सलीम ओकरा कहि गेल रहैक-

“कोनो उपायसँ फातिमाकेँ लोहितक चाङुरसँ बाहर निकालह ।”

एहि परिस्थितिमे हिमेश बाबूकेँ देखि ओकरा किछु करबाक विचार अएलैक,मुदा देरीसँ । तखन तँ ओ निसाँमे मातल छल । ओ तँ सलीमक फोन जखन अएलैक तँ ओकर भक टुटलैक। अफसोच होमए लगलैक जे हिमेशकेँ हाथसँ निकलि किएक जाए देलक? मनेजरक मोनमे कोनो योजना अएलैक । ओ मोने-मोन हँसल । फेर ककरो फोन लगओलक आ ओकरासँ गप्प करबाक हेतु एकांतमे चलि गेल।

हिमेश बाबू सलीमक ओहिठामसँ खाली हाथ लौटि रहल छलाह । ओ बहुत आशासँ सलीमक ओहिठाम गेल रहथि । हुनका

पूरा विश्वास रहनि जे यदि ओ सलीमकेँ किछु कहथिन तँ ओ मना नहि करत । मुदा सलीम रहबे नहि करए । ओ कतए गेल अछि आ कहिआ धरि वापस आएत सेहो पता नहि चलि सकलनि । बादमे सलीमक फोन अएबो कएल तँ गप्प नहि भए सकलनि । अस्तु, एहिबातसँ हुनका मोनमे बहुत निराशा भेलनि । ओ कारपर बैसलाह आ वाहन चालककेँ कहलखिन-

"महादेव मंदिर लए चल ।"

ओहिठामसँ चारि-पाँच कोसपर महादेवक प्रसिद्ध मंदिर छल । हिमेश बाबूकेँ जखन करवनहु कोनो परेसानी होइतनि ओ महादेवक शरणमे चलि जइतथि । महादेव मंदिर पहुँचि हुनकर आराधना करितथि । दान-पुण्य करितथि । मंदिरक पंडासभ हुनकर आगमनक प्रतीक्षा करैत रहैत छल । कारण ओ बहुत उदारतासँ ओतए सभकेँ यथासाध्य मदति करैत छलखिन । हिमेश बाबूक कार जहाँ मंदिर दिस बिदा भेल,हुनकर मोन प्रसन्नतासँ भरि गेलनि । ओ मोने-मोन भगवान शिवक आराधनामे लागि गेलाह । "एहि परिस्थितिसँ महादेवे उबारि सकैत छथि"-से हुनका दृढ़ विश्वास रहनि ।

कार अवाध गतिसँ चलि रहल छल आ हिमेश बाबू महादेवक आराधनामे लीन छलाह कि अचानक कोनो दोसर कार सामने आबि गेलैक । सड़कक कातमे सटले किछुगोटे जा रहल छल । ओकरा बचेबाक हेतु वाहन चालक अचानक ब्रेक लेलक । कार बहुत तेज गतिसँ चलि रहल छल । अचानक ब्रेक लेलासँ ओ एक सए अस्सी डिग्री घुमि गेल । ओहीक्रममे सड़कक कातक गाछसँ टकड़ा गेल । गाछपर ततेक जोरसँ धक्का लगलैक जे ओ बीचसँ टुटि कए खसए लागल । कनी काल तँ लागल जेना प्रलय

आबि गेल । लग-पासक लोकसभ इएह-ले,ओएह-ले भागल । गाछमे तेज गतिसँ चलैत कारकेँ टकड़ा गेलासँ कारक अग्रभाग नीकसँ थकुचा गेल छल । एहन परिस्थितिमे वाहन चालक आ हिमेश बाबूकेँ बचबाक कोनो संभावना नहि रहैक । मुदा कारमे एअर बैग रहैक । आपातस्थितिमे ओ खुजि गेलैक ,जाहिसँ दुनूगोटेक जान बचि गेलनि, मुदा ओसभ कारेमे फँसल रहि गेलाह।

कनीकालक बाद लग-पासक लोक ओतए जमा होमए लागल । हिमेश बाबू सुरक्षित छलाह । कारसँ निकलबाक कोनो व्योंत नहि बुझाइक । आखिर ओहीमेसँ केओ मिस्त्रीकेँ बजओलक। थोड़बे कालक बाद मिस्त्री मोटर साइकिलसँ ओतए पहुँचल । तकर बाद कारकेँ काटि कए हिमेश बाबूकेँ निकालल गेल। ओ बचि तँ गेलाह मुदा तनावसँ हँफैत रहथि । लोकसभ पानिक जोगार केलक । ओ दू गिलास पानि गटर-गटर पीबि गेलाह। तकर बाद मोन कनीक हल्लुक भेलनि ।

हिमेश बाबू कारसँ हटि कए ठाढ़ भेलथि कि अचानक पाछूसँ एकटा कार आएल । हिनकासँ सटले ओ कार ठाढ़ भेल । ओहिमेसँ चारि-पाँचटा लठैत उतरल आ हिमेश बाबूकेँ जबरदस्ती कारमे बैसा लेलक । जाबे केओ किछु बूझितए ताबे तँ ओ कार बहुत आगू चलि गेल रहए ।

26

मनेजर सलीमकेँ फोन लगओलक-

"सर! काज भए गेल ।"

“की भेल?”

“हिमेशकेँ अपना कब्जामे आनि लेलहुँ।”

“से की?”

“हमर आदमी हुनकर कारमे टक्कर मारि देलकैक । ओ जेना-तेना जान बचा कए कारसँ बाहर भेल छलाह कि हमर आदमीसभ हुनका अपन कारमे बैसा लेलक।”

“मुदा हम तोरा ई सभ करए तँ नहि कहने रहिअह?”

“मुदा आब जखन हुनका आनिए लेलिअनि अछि तँ तुरंत तँ छोड़लो नहि जा सकैत अछि। से केलासँ तँ हमहीसभ दिक्कतिमे पड़ि सकैत छी।

“से किएक?”

“कही ओ सभ पुलिस लग चलि गेल आ केस कए देत तखन?”

“हमर ओ पुरान मित्र छथि । हुनका संगे कोनो बेअदबी नहि हेबाक चाही । हुनका पूरा हिफाजतिसँ राखल जाए । हम वापस आएब तखन अपने हुनकासँ गप्प करब । ओ तँ अपने हमरासँ भेंट करए आएल रहथि । हमही नहि रही । तखन तोरा ई सभ करबाक कोन प्रयोजन छलह? हम तँ एतबे कहने रहिअह जे हुनका अपन अनुकूल रखिअह जाहिसँ बदमास सभ फएदा नहि उठा सकए । आब जखन हुनका आनिए लेलहुन अछि तँ परेसान नहि करिअहुन । जरूरी होइक तँ डाक्टरसँ देखबा दिअहुन ।”

“ठीक छैक सरकार! जे अपने कहबैक सएह हेतैक । हमरा तँ भेल जे यदि ओ अपन कब्जामे आबि जेताह तँ युवकसभक आन्दोलन ठमकि जाएत ।”

“गलत सोचि रहल छह । एहिसँ तँ माहौल आओर खराबे होएत । तूँ जेना-तेना लोहितकेँ खबरि करबा दहक जे हिमेश बाबू सुरक्षित छथि जाहिसँ ओ सभ बेसी उग्र नहि होएत ।”

“ठीक छैक । हम हुनका फोन करबा दैत छिअनि ।”

“अहाँ कहिआ धरि अएबैक ।”

“अखन किछु नहि कहल जा सकैत अछि । बहुत काजसभ बाँकी अछि । देखा चाही आगू की-कोना होइत अछि? हम तँ चाहैत रही जे फातिमा अपना ओहिठाम आबि जाइत । किछु समय बीततैक तँ साइत ओकर मोन बदलि जाइत ।”

“तकर संभावना बहुत कम बुझा रहल अछि । ओ तँ दिन-राति लोहितेक संगे घुमैत रहैत अछि । आओर कैकगोटे ओकर संग रहैत अछि ।”

“से की?”

“फोनपर की-की कहू? अहूँक मोन खराब भए जाएत ।”

“मुदा तूँ ओहिठाम कइए की रहल छह? खाली उल्टा-पुल्टा समाचार देबए लेल थोड़े तोरा रखने छिअह?”

लोहितकेँ कोनो अज्ञात मोबाइल नंबरसँ फोन अएलैक । आइ-काल्हि ओकरा एहन फोनसभ अबिते रहैत छलैक । बेसी फोनमे ओकरा चेतौनी देल जाइक,डराओल जाइक । खबरदार कएल जाइक । सभक मूल ई जे ओ फातिमाक चक्करमे नहि पड़ए,

नहि तँ ओकर विनाश निश्चित अछि । तेँ ओ आब बेसी काल फोन उठेबे नहि करए । तहिना एहूबेर फोनक घंटी बजैत रहल । मुदा लोहित ओकरा नहि उठओलक । किछु कालक बाद फेर घंटी बाजल । जखन कैकबेर घंटी बजिते रहि गेल तँ अकच्छ भए ओ फोन उठा लेलक-

“के छी?”

“नीकसँ सुनि लएह । हम छी? तोहर... । तोहर पिताजी हमरा लोकनिक कब्जामे छथि । हुनकर स्वास्थ्य ठीक नहि छनि । हमसभ यथासाध्य इलाज करबा रहल छी ।”

“मुदा तूँ सभ के छह आ हुनका एना किएक पकड़ने छहुन...?”

“पहिने सभटा बात सुनि तँ लएह ।”

“ठीक छैक, कहह... ।”

“हमसभ हुनकर पूरा हिफाजति कए रहल छिअनि । तखन तँ बूढ़ छथि । यदि किछु भइए जेतनि तँ हमसभ की कए सकैत छी?”

“खबरदार! यदि हुनका किछु भेलनि तँ तोहरसभक कल्याण नहि छह ।”

“पहिने अपन कल्याणक रस्ता निकालह । तकरबाद हमरासभक चिंता करिअह ।

“साफ-साफ बाजह जे की चाहैत छह?”

“इएह तँ तोरामे गड़बड़ी छह । धैर्य छहे नहि । तेँ एतेकटा कांड भेल आ साइत आगूओ होएत?”

"माने?"

"माने जे तूँ बिना विचारने जल्दबाजीमे काज कए लैत छह। तकर कुपरिणाम के भोगत? ने तूँ फातिमाक चक्करमे पड़ितह आ ने तोहार पिताक ई हाल होइतनि? ने समाजमे ई स्थिति बनैत। तूही कहह जे अएिसभ सँ तोरा भेटलह की? दुनिआमे कोनो कनिआँक अकाल तँ नहि पड़ि गेल अछि । तखन तूँ फातिमाक चक्करमे अनेरे ने पड़ल छह। आबो समय अछि । नीकसँ सोचि लएह । फातिमाक चक्कर छोड़ह । नहि तँ तूँ जानह आ तोहर काज जानए ।"

"एहन-एहन फोनसँ हम डरएबला नहि छी।"- लोहित ओकरापर चिकरए लागल ।

"से तँ हमसभ बूझैत छी । तँ ने तोहर पिताकेँ..."

"की भेलनि हमर बाबूकेँ...?"

"अखन धरि किछु नहि भेलनि अछि । मुदा किछु भए सकैत अछि।"

"की कहि रहल छह?"

"सही कहि रहल छिअह। ओ हमरासभक कब्जामे छथि। यदि तू आबो नहि सुधरलह तँ... ।"

"तँ की?"

"तखन देखिअहक की होइत अछि ।"

तकर बाद फोन कटि गेल । ओहि अज्ञात आदमीक फोन अएलासँ लोहित बहुत चिंतित भए गेल छल ।

लोहितकेँ परेसान देखि फातिमा टोकलकैक-

“बात की छैक? तूँ बहुत परेसान बूझा रहल छह?”

“की कहिअह? एहन-एहन फोन तँ अबिते रहैत अछि । मुदा एहि बेर...|”

“की भेल एहिबेर...?”

“बाबूक अपहरण भए गेलन अछि । सएह ओ बता रहल छल ।”

“मुदा ओ छल के?”

“से थोड़े कहलक?”

“तखन...”

दुनूगोटे गप्प कइए रहल छल कि डाक्टर थॉमस चाह लए कए अएलाह ।

“पहिने चाह पीबि लएह । फेर हमसभ समाधान सोचब ।”

“आ ताबे यदि बाबूकेँ किछु भए गेलनि ।”

“एतेक अगुताह नहि । समस्या अएलैक अछि तँ समाधानो हेबे करतैक । ओ सभ हुनका किछु नहि करतनि । बस तोरासभकेँ डरबए चाहैत छह जाहिसँ फातिमा वापस अपना ओहिठाम चलि जाए, तोहर संग छोड़ि दिअए ।”

“ओकर सभक मनोरथ कहिओ पूरा होमए बला नहि छैक ।”-लोहित बाजल । स्वीकृतिमे फातिमा हँसि देलक । डाक्टर थॉमस सेहो ओकरसभक समर्थनमे मुड़ी हिला देलनि ।

27

पंडितजीक हत्या अकारण कए देल गेल छल । आइ कैक मास बीति गेल,ने केओ पकड़ल गेल ने ककरो जहल भेलैक । युवकसभ बेसक एहि मामिलाकेँ बेर-बेर उठबैत रहल । मुदा शासन-प्रशासनक लोकसभ किछु-किछु कहि टारैत रहल । टीसन बाबू सन समाजसेवी आ लोकप्रिय व्यक्तिकेँ मारि देल गेल । लोकसभ विरोध केलक । युवकसभ टीसन बाबूक वलिदान व्यर्थ नहि जाए देबाक संकल्प केलनि । कैकठाम बैसारो भेल । लगलैक जेना समाज जागि रहल अछि । मुदा तकर बाद की भेल? फेर एकटा अनर्थ भेल। हिमेश बाबूकेँ अपहरण भए गेलनि । ओ गेल छलाह अपन दोस्त सलीमक ओहिठाम । सोचने रहथि जेना-तेना सलीमकेँ मना लेताह । मामिलाकेँ सभदिनक हेतु खतम कए देल जाएत । मोने-मोन ओ फातिमाकेँ स्वीकार कए लेने रहथि । ओ शुरुएसँ उदार विचारकेँ रहथि । धर्मक अर्थ सही माने बुझैत छलाह। कोनो नियम ,कोनो विधि-विधान जीवनसँ बढ़ि कए नहि भए सकैत अछि । यदि लोहितकेँ फातिमा पसिंद छनि आ फातिमा सेहो से स्वीकार केने छथि तँ सएह सही । एहि मामिलाकेँ अनेरे नमरेलासँ किछु हासिल होबए बला नहि छल । ताही प्रयासमे ओ सलीमक ओहिठाम निधोख पहुँचि गेलाह । ओतए हुनका गेलासँ कोनो तरहक विवाद होएत वा हुनका केओ क्षति करतनि से तँ ओ सोचिओ नहि सकैत छलाह । मुदा जे भेल से सामने अछि ।

आब समस्या छल जे हुनका कतए ताकल जाए? की कएल जाए जाहिसँ हुनकर जीवन आ सम्मानक रक्षा होनि। एही विषयसभपर आइ डाक्टर थॉमसक ओहिठाम बैसार छल । डाक्टर

थॉमसक डेरा अस्पतालक परिसरमे रहनि । ओहिठाम केओ बाहरी लोक नहि आबि सकैत छल । अस्पतालक आवासीय परिसर चारूकातसँ घेरल छल । चारूकात आ बीचोमे जहाँ-तहाँ सीसीटीभी लागल छल । परिसरक गेट बाहर प्रहरी ठाढ़ छल । कोनो आगन्तुककेँ अंदर जेबासँ पहिने बहुत सावधानी राखल जाइत छल । ओ कतए जाएत? किनकासँ भेंट करत? ओकर नाम,पता,मोबाइल फोन लिखल जाए । रजिष्टरमे ओकरासँ दस्तखत करओल जाइक । जकरासँ ओ भेंट करत,तकरा फोन लगा कए पुछल जाइक । जखन ओ अनुमति दैक ,तकर बादे केओ ओहि परिसरमे प्रवेश करैत । ई नियम कोनो नव नहि छलैक । पहिनहु इएह व्यवस्था रहैक । मुदा ठीकसँ लागू नहि कएल जाइक ।

किछुदिन पूर्व जे फसाद भेल छल तकरे कुपरिणाम ओहिठामक समाज भोगि रहल छल । मुदा लोकक मोनक घाव हरिआइते गेलैक । तकर एकटा प्रमुख कारण रहैक निर्दोषलोकनिक हत्या । कतेको परिवार उजड़ि गेल । कतेको बच्चासभ अनाथ भए गेल । कतेकोगोटेक घर जड़ा देल गेलैक । परिवारक सदस्यसभक हत्या ओकरे धिया-पुताक सामने कए देल गेलैक । सोचल जा सकैत अछि जे ओहि नेनासभक मोनपर केहन दुष्प्रभाव पड़ल हेतैक?

दंगा भेलाक बाद माहौल बदलि गेल । सभ एक-दोसरकेँ सकक दृष्टिसँ देखए लागल । तकर बाद तँ परिसरमे प्रवेशक नियम अक्षरशः लागू कएल जाइत छल । तेहन परिस्थितिमे डाक्टर थॉमसक ओहिठाम भए रहल गोपनीय बैसारमे भाग लेनिहारसभ कोना अबितथि । ओतेक प्रक्रियाक पालन करएमे तँ सभकिछु देखार भए जाइत । बातसँ बतंगर भए सकैत छल । डाक्टर थॉमस

एकर ओरिआन केने रहथि । फातिमा,लोहित आ हम बाहरे हुनकर कारमे बैसि गेलहुँ । डाक्टर थॉमस स्वयं कार चला कए पाछूक गेट बाटे अंदर प्रवेश केलाह । हुनका तँ सभ जनिते छलनि । कारमे पर्दा लागल छल । तेँ बाहरसँ केओ हमरासभकेँ देखि नहि सकल। सभगोटे सकुशल डाक्टर थॉमसक डेरापर पहुँचि गेलहुँ ।

हमरासभकेँ डाक्टर थॉमसक ओहिठाम स्वागत करबाक हेतु एकटा सरदारजी बाहर अएलाह । बेस नमगर,गोर-नार,मजगूत कद-काठी,माथमे केसरिआ पगड़ी पहिरने सरदारजी हमरा लोकनिक स्वागत मधुर मुस्कानक संग केलाह ।

“ई छथि हमर वालसखा सरदार पूरन सिंघ ।”

सभगोटे हाथ जोरि हुनका नमस्कार करैत छथि । बेरा-बेरी सभगोटे ड्राइंग रूममे बैसि जाइत छथि । हमसभ सरदारजीक उपस्थितिसँ असोकर्जमे छी । ई बात डाक्टर थॉमस बुझलनि ।

“सरदारजीकेँ अपनासभक बारेमे सभकिछु बूझल छनि । ओहो अपनेसभक विचारक लोक छथि । हुनकर पूर्वजो राधानगरक बासी रहथि । बादमे व्यापारक क्रममे केरलमे हमरे गाम लग बसि गेलाह । हमसभ संगे-संगे इसकूल, कालेज केने छी । तकर बाद हम डाक्टरीमे लागि गेलहुँ । सरदारजी व्यापारमे । मुदा हमरा लोकनिक संपर्क अखनहु ओहिना बनल अछि ।

जखन फातिमाक समस्या लए कए चारूकात फसाद भेल छल तँ कैकदिन धरि सरदारजी हमरे ओहिठाम नुकाएल रहि गेल रहथि । करितथि की? जान तँ बचेबाक छलनि । ओहुना राधानगर सहरसँ हुनका बहुत सिनेह छनि । अपन पूर्वजक स्थानक मोह ककरा नहि होइत अछि? सएह हाल हिनको छनि । कालक्रमे ओ

अपन व्यापारक एकटा शाखा राधानगरमे सेहो खोलि लेलनि । मुदा अफसोचक बात जे दंगामे हुनकर किछु नहि बँचलनि । सभकिछु बदमाससभ अग्निकेँ समर्पित कए देलकनि । एहि बातसँ ओ बहुत आहत भेल रहथि। बात आर्थिक क्षतिक नहि अछि । भगवान हुनका बहुत देने छथिन । कैकटा सहरमे हुनकर व्यापार चलि रहल अछि । मुदा राधानगरकेँ तँ ओ सभसँ सुरक्षित बूझैत छलाह । हुनकर योजना रहनि जे एहिठाम आओर काज बढ़ाएल जाए जाहिसँ स्थानीय लोकसभकेँ नौकरी भेटितैक । मुदा भेल उल्टा। लोकसभ अपने हाथे अपन भविष्यमे आगि लगा लेलक । हिनकर योजना फिलहाल चौपट कए देलकनि ।

ई बातसभ सुनि हमरा लोकनि बहुत प्रभावित भेलहुँ । हम कहलिअनि-

"कोनो बात नहि । सरदारजीकेँ हतोत्साहित हेबाक नहि छनि । हमसभ पूरा तरहसँ हुनकर संग छिअनि ।"

"ईहो कहबाक काज ।"-डाक्टर थॉमस बजलाह ।

28

ओहि कोठरीमे असगर पड़ल-पड़ल हिमेश बाबू तंग भए गेल रहथि । ओना हुनका केओ किछु कहनि नहि,कोनो चीजक अभाव नहि रहए दनि । जे खाइ,जतेक खाइ । केओ चुपचाप हुनका कोठरीमे सभ किछु सड़का दैत छल । असलमे ओ कोठरी एकटा सुरंगसँ जुड़ल छल । कोठरी आ सुरंगक बीचमे तेहन सीसा लागल छल जे बाहरसँ तँ सभकिछु देखाइक मुदा हिमेश बाबू किछु

नहि देखि पाबथि । सीसा बाटे दिन-राति हिनकापर नजरि राखल जाइत छलनि । ओहि कोठलीमे छोटसन रंगीन टेलीबीजन सेहो छल। भोरे केओ अखबार सेहो फेकि दैत छल । मुदा मनुक्खक दर्शन नहि होनि । एकदिन-दूदिन तँ कहुना कए समय कटलाह । तकर बाद लागनि जे पागल भए जाएब । मोन होनि जे यदि सलीम भेटितए तँ ओकर मुँह नोचि लितहुँ । मुदा से अवसर भेटबाक कोनो संभावना नहि छल ।

ओ कोठरी हिमेशकेँ काल कोठरीसँ कम नहि लगैत छल । तमाम सुविधा अछैत ओतए एक-एक क्षण बिताएब मोसकिल भए रहल छल । करवनो-करवनो तँ हुनका होनि जे माथ फाटि जाएत । सोचैत-सोचैत राति बीति जानि । एकहु पल निन्न नहि होनि । एहिसँ हुनकर स्वास्थो खराब होमए लागल । एकांत प्रवासमे हुनका रहि-रहि कए बीतल बातसभ मोन पड़ैत छलनि । केना ओ दुनू बेकती एकटा संतानक हेतु बेकल रहथि । होनि जे कोनो उपायसँ एकटा संतान भए जाए जाहिसँ वंशक रक्षा भए सकत । एहि लेल ओ कोन-कोन तीर्थ नहि गेलाह । बाबा बैद्यनाथकेँ कैकबेर जल चढ़ेलनि । अंततोगत्वा, हुनकरसभक मनोकामना महादेव पूर्ण केलखिन । लोहितक जन्म भेलनि । हिमेश बाबूक प्रसन्नताक अंते नहि रहए । हुनकर पत्नीकेँ तँ होनि जेना पुनर्जन्म भए गेल अछि ।

ओहिदिन कतेक आनन्दक वातावरण छल । सौंसे गामक लोक एहि आनन्दमे हुनकर संग देने छल । दनानपर बड़का सामिआना लगाओल गेल छल । दू सएसँ बेसी कुर्सी राखल गेल छल । चाह-जलखैकेँ के पुछैत अछि? हिमेश बाबूक मोन होनि जे की लुटा दी, की नहि । ककरा की दए दिऐक? ओहि उत्सवमे जे केओ आएल से खाली नहि गेल । ई उत्सव कैकदिन धरि चलैत

रहल । छठिहार दिन तँ जबार नोतल गेल । नृत्य-गीतक आयोजन तँ भेवे कएल । लगैक जेना सौंसे गाम स्वर्गमे बदलि गेल अछि । की धीरपुर,की नाजिरपुर, परोपट्टाक लोक उमड़ि पड़ल छल । जकरे पता लगितैक सएह बिदा भए जाइत । तकर बाद तँ समय-समयपर उत्सव होइते रहल । नामकरण , मुड़न,उपनयन,सभ अवसरपर विशेष आयोजन होइत रहल । कोनो मौका हिमेश बाबू खाली नहि जाए देथि । मुदा बिआहक बेरमे मामिला फँसि गेल । यदि हिमेश बाबूक चलितनि तँ एहूबेर ओ कमाल कइए कए रहितथि । मुदा समय-समयक बात होइत अछि । ई समय ककरो छोड़लक अछि? ककरो नहि । तँ ओ कतएसँ बचितथि । अखन तँ जेना समय हिनका अपन चाङुरमे तेना कए लेने छनि जे ओहिसँ निकलि पाएब मोसकिल भए गेल अछि ।

जेना-जेना लोहित बढ़ैत रहलाह,तेना-तेना नव-नव मनोकामना जुड़ैत गेल । मुदा फातिमा प्रसंगसँ हुनकर सभटा योजना धएले रहि गेलनि । की सोचने छलाह आ की देखि रहल छलाह । ताहूसँ ओ समझौता करबाक हेतु तैयार भेलाह । सोचलाह जे कहुना लोहित प्रसन्न रहथि । हुनके सुखमे अपन सुखकेँ देखए लगलाह । मुदा हालत बेकाबू भए गेल आ से ततेक गड़बड़ा गेल जे ओकरा सम्हारब ककरो वशमे नहि रहि गेलैक ।

सलीम तँ अपन काजमे लागल छल । सभटा गड़बड़ीक जड़ि छल मनेजर । ओकर सोचब रहैक जे यदि हिमेश बाबूपर दबाब बनाओल जाएत तँ लोहित मानि जाएत आ फातिमाक चक्करमे नहि पड़त । मुदा ओसभ अड़ल रहल । एहि प्रश्नपर कोनो समझौता नहि करत । से बात ओ सभ बेर-बेर स्पष्ट करैत रहल ।

एकदिन साँझमे झमाझम पानि होइत रहैक । जोर-जोरसँ हवा बहैत रहैक । चिड़ै-चुनमुनसभ जहाँ-तहाँ नुका गेल रहए । सड़कसभपर एकटा लोक नहि देखाइत । कैकटा गाछसभ अन्हड़मे खसि पड़ल रहैक । वर्षा खतम हेबाक नामे नहि लैक । एहन परिस्थितिमे केओ हिमेश बाबूकेँ भोजन देबए अएलनि । ओ सुरंग बाटे भोजन राखि वापस भए गेल । अन्हारमे ओकरा किछु नहि देखेलैक । सीसा बला केबार खुजले रहि गेल । हिमेश बाबू मौकाक फएदा उठबैत सुरंगमे पैसि गेलाह । सुरंगमे चलैत-चलैत ओ बाहरक सड़कपर पहुँचि गेलाह ।

अखनहु वर्षा भइए रहल छल । चारूकात अन्हार गुज्ज छल । रातिक समय आ एहन खराब मौसम । किछु नहि देखाइत छल । रहि-रहि कए बिजलौका चमकि जाए । सुरंगसँ निकललाक बाद हिमेशकेँ किछु फुरेबे नहि करनि जे की करी? ओ चुपचाप ठामहि बैसि गेलाह ।

रातिभरि झमाझम वर्षा होइत रहल । हिमेश बाबूक सेवादार एहन मौसमक फएदा कोना ने उठबैत? भोजन केलक,भरि छाँक दारू पिलक आ सुति रहल । भोर भेने वर्षा बंद भए गेल रहैक। चारूकात माहौल एकबेर फेर शांत भेल । सेवादारक निन्न टुटलैक नहि, तोड़ल गेलैक । हिमेश बाबूक हेतु चाह बनि कए आएल रहनि। सेवादारकेँ हुनका लग चाह लए जेबाक रहैक । ओ उठल,चाह लेलक आ तहखाना बाटे हिमेश बाबूक कोठरीमे प्रवेश केलक । मुदा कोठरीमे भम्ह पड़ि रहल छल । ओहिठाम हिमेश बाबू नहि रहथि । सेवादारक माथ घुमि गेलैक । हाथसँ चाहक ट्रे खसि पड़लैक। कोठरीमे किछु खसबाक आबाज बाहर धरि

पहुँचल। लगपासमे काज केनहार प्रहरीसभ ओतए पहुँचल । ओकरासभकेँ देखि कए सेवादारकेँ होस अएलैक ।

"की भेलैक?"-ओहीमे सँ केओ पुछलकैक।

"हिमेश बाबू तँ छथिहे नहि ...। आब की होएत?"

थोड़बे कालमे ई बात सौंसे पसरि गेल । मनेजरकेँ सेहो पता लगलैक ।

"की कहि रहल छह?"

"हिमेश बाबू अपन कोठरीमे नहि छथि।"

"सही कहि रहल छह?"

"बिल्कुल सही कहि रहल छी।"

"जुलुम भए गेल । एहि बातक प्रचार नहि करह । हम आबि रहल छी । तरवन एकर समाधान कएल जाएत ।"

29

रातिभरि हिमेश बाबू वर्षा,अन्हड़मे भिजैत,तितैत रहलाह। कतहु अएबाक-जएबाक कोनो संभावना नहि छलैक । बहुत काल धरि प्रकृतिक एहि प्रकोपकेँ नहि सहि सकलाह । ओ सड़कक कातमे बेहोस भए गेलाह । भोर भेने डाक्टर थॉमस पूरनक संगे टहलए निकलल रहथि । हुनकासभकेँ सड़कक कातमे बेहोस पड़ल ओ वृद्ध देखेलनि । लग अबितहि डाक्टर थॉमस हुनका चिन्हि जाइत छथि । एकबेर तँ भेलनि जे ओ मरि चुकल छथि । मुदा जखन लगीचमे आबि कए नाक लग हाथ देलथि तँ साँस नहु-

नहु चलैत बुझेलनि । ओ तुरंत सरदार पूरन सिंहकेँ सतर्क करैत छथि ।

"ई तँ हिमेश बाबू बुझाइत छथि।"

"के हिमेश?"

"लोहितक पिता ।"

"ओ ...। मुदा एहि हालमे एतए कोना पड़ल छथि?"

"से की जाने गेलिऐक?"

"अहाँ ताबे हिनका लग रहू । हम कार लेने अबैत छी । हिनका तुरंत अस्पताल लए जाएब बहुत जरूरी अछि।"

"ठीक छैक ।"

डाक्टर थॉमस अपन घर वापस जाइत छथि । ओतएसँ स्वयं कार चला कए वापस घटनास्थलपर पहुँचैत छथि । ताधरि पूरन हिमेश बाबूक हाथ-पैर जँतैत रहलाह । पानिक ओरिआन कए हुनका पानि पिऔलाह । पानि पिलाक बाद ओ आँखि खोललनि,करौट बदललनि । ओ अतीव कष्टमे बुझाइत छलाह ।

डाक्टर थॉमस आ पूरन सिंघ हिमेश बाबूकेँ कारक पछिला सीटपर रखैत छथि । पूरन हुनके लग बैसि जाइत छथि । डाक्टर थॉमस कार चला रहल छथि । रस्तामे कैकठाम कार रोकए पड़ैत अछि । कारण सौंसे रस्तामे किछु-ने-किछु अवरोध अबैत रहल । कार अस्पतालक गेटपर पहुँचि रहल अछि । संयोगसँ मनेजर ओही समय अस्पतालसँ बाहर निकलि रहल छल । ओकर नजरि कारक पछिला सीटपर पड़ल हिमेश बाबूपर पड़लैक ।

"ई तँ हिमेश बाबू बूझा रहल छथि?"

“मुदा एहिठाम कोना पहुँचि गेलाह? संगमे के सभ अछि?”

ओ अपन कार रोकलक आ हिमेश बाबूक पछोड़ करए लागल । रस्तेसँ डाक्टर थॉमस हमरा फोन केलथि ।

“हिमेश बाबू भेटि गेलाह ।”

“से कोना?”

“हमसभ भोरे टहलए निकलल रही । हुनका सड़कक कातमे बेहोस पड़ल देखलिअनि ।”

“की हाल छनि? जान बँचतनि कि नहि? ”

“किछु नहि कहल जा सकैत अछि । होसमे नहि छथि । हमसभ सोझे अस्पताल जा रहल छी । संगमे पूरन अछि । लोहितकेँ सेहो सूचित कए दिऔक आ दुनूगोटे जल्दीए सोझे अस्पताले चलि आउ ।

“ठीक छैक । हमसभ जल्दीए अस्पताल आबि रहल छी ।”

हम लोहितकेँ फोन करैत छी । ओकर फोन व्यस्त आबि रहल अछि । बूझा गेल जे डाक्टर थॉमस फोनपर छथि । बातो सएह रहैक । जहाँ हुनकर फोन खतम भेलनि कि लोहित मिसकाल देखि स्वयं फोन केलाह । हुनकर आबाज भारी लागि रहल छल । ओ फोन करिते कानए लगलाह ।

“एतेक परेसान नहि रहह । पहिने जा कए देखिऐक तँ जे बात की छैक? ओ कोना सड़कपर बेहोस पड़ल छलाह?के हुनका एहि हालमे पहुँचओलक?”

“आओर के? ई सभ सलीमेक काज थिक । ओ चारूकात गुंडासभकेँ लगा देने अछि । अपने नुकाएल अछि ।”

एतेक बाजि कए ओ फेर कानए लागल । हम लाख बूझेबाक प्रयास करिऐक ,मुदा ओकरापर असरि नहि होइक ।

"धैर्य राखह । पहिने तँ हमरा लोकनि हुनकर इलाज कराबी, जाहिसँ जान बाँचि जानि । तकर बाद आन विषय सभपर गप्प कएल जाएत । हम तोरे ओहिठाम आबि रहल छी । तोरा संग कए अस्पताल चलब ।"

"ठीक छैक । आउ । हमहु ताबे तैयार भए जाइत छी ।"

रस्ताभरि हम हिमेश बाबूक बारेमे सोचैत रहि गेलहुँ । "आखिर हुनकर की दोष छलनि जे हुनका संगे एहन व्यवहार कएल गेलनि? केओ हुनकर अपहरण किएक केलक? आ यदि केबो केलक तँ एहन हालतमे किएक पहुँचा देलक । आइ यदि डाक्टर थॉमस नहि देखितथि तँ ओ गेल घर छलाह ।"

इएहसभ सोचेत हम लोहितक ओहिठाम पहुँचैत छी । ओ अपन मकानक गेटपर ठाढ़ हमर प्रतीक्षा कए रहल छल । हम ओकरा अपन कारमे बैसबैत छी आ अस्पताल दिस बिदा भए जाइत छी ।

डाक्टर स्वयं बाबूक चिकित्सामे लागल रहलाह । आइ तेसर दिन थिक । मुदा हुनकर स्थितिमे अपेक्षित सुधार नहि भए सकलनि । हम आ लोहित दिन-राति अस्पतालेमे बैसल रहलहुँ,जे डाक्टर कहथि से दबाइ तुरंत आनल जाए । अपना भरि कोनो कसरि नहि राखल गेल ।

हिमेश बाबूक स्थिति गड़बड़ाइते गेलनि । हुनकर जिज्ञासामे के-के नहि अएलाह । सलीमक कहलापर मनेजर सेहो हुनकर स्थितिपर नजरि रखने रहए। बेर-बेर अपन आदमीसभकेँ

अस्पताल पठबैत रहल । हुनकर स्थितिक जानकारी सलीमकेँ दैत रहल । तेसर दिन साँझमे हिमेश बाबू सभदिनक हेतु आँखि मुनि लेलनि । ओहि समयमे डाक्टर थॉमस ओतहि छलाह । हम,लोहित,फातिमा सेहो बाहर ठाढ़ रही। डाक्टर थॉमस इसारासँ हमरा अंदर बजबैत छथि । लोहित आ फातिमा सेहो हमर अनुसरण करैत छथि । डाक्टर थॉमस किछु बाजि नहि पबैत छथि । मुदा हुनकर हाव-भावसँ हमसभ परिस्थितिक अनुमान लगा लैत छी । सामने हिमेश बाबूक लास उज्जर वस्त्रसँ झाँपल राखल छल । हुनकर मुँह उघारैत छी । देखलासँ कतहुसँ नहि लगैत अछि जे ओ आब नहि रहलाह ।

लोहित आ फातिमा हुनकर ई दशा देखितहि जोर-जोरसँ कानए लगैत छथि । लगपासमे ठाढ़ लोकसभ सेहो बहुत दुखी छथि । मुदा उपाय की छल । हुनका एही तरहें जेबाक छलनि,से चलि गेलाह । मुदा जाइत- जाइतो सही काजमे लागल रहलाह । सलीम एतेक बदलि जाएत वा ओकरा ओहिठाम गेलासँ किछु गड़बड़ होएत तकर कोना कतहुसँ संका नहि रहनि । ओ सोचलथि किछु आ भेल किछु ।

अपहरण भेलाक बाद हिमेश बाबूकेँ तेहन परिस्थितिसँ सामना भेलनि जे ओ बचि नहि सकलाह। ने हुनकर अपहरण होइत,ने ओ एना जान बचा कए भगितथि,ने हुनकर ई दुर्दशा होइत। मुदा अखन धरि केओ पकड़ल नहि गेल । दंड भेटबाक बात तँ छोड़ू । तकर कारण सलीमक शासनपर प्रभाव छल । ओ जकरे-तकरे टाकाक बदौलत कीनि लैत छल । गवाहसभ ओकरा डरे छीह कटैत छल। कैकटा गवाह तँ कतए गेल,कहाँ गेल कोनो अता-पता नहि छलैक। एहनमे ककरो साहस नहि रहैक जे आगू

बढ़ि कए न्यायक प्रयास करत । केओ अपन जान खतरामे किएक दैत?

सलीम हिमेश बाबूक अहित नहि चाहैत छल । ओ साइत करवनहु नहि सोचने छल जे एहि तरहें हुनकर मृत्युक दोषी ओ भए जाएत । मुदा भावी प्रवल । संभवतः सलीमक नियंत्रण सेहो ओकर अपन हाथमे नहि छलैक । एहिना ओ अकूत संपत्तिक मालिक नहि भए गेल छल । ताहि लेल ओकरा बहुत किछु मूल्य चुकाबए पड़ल रहैक। ओ चाहिओ कए आब ओहि जालवृत्तसँ निकलि नहि सकैत छल । ओहो चाहैत छल जे फातिमाक मामिलाक शांतिपूर्ण समाधान कए ली। संभवतः तेँ ओ मनेजरकेँ हिमेश बाबूपर नजरि रखबाक हेतु इसारा केने छल । मुदा भए गेल गड़बड़ ।

30

आन बेर जखन कखनहु सलीम बाहर जाइत छल तँ मास-दू मासक भीतरे राधानगर वापस आबि जाइत रहए। राधानगर वापस अएलाक बाद अपन छवि नीक बनेबाक हेतु ओ बहुत रास रचनात्मक काज करैत छल । कतेको गोटेक बच्चाक इसकूलमे बिना फीसकेँ नाम लिखा दैत छल,कतेको गरीबक बेटीक बिआहक हेतु खर्चा दैत छल,कतेको बेसहारा वृद्ध लोकनिक चिकित्सा, आ सेवाक व्यवस्ता करैत छल। तेँ कतेको लोक ओकर आगमनक प्रतीक्षा करैत रहैत छल । जहिना ओ आबए कि ओकरा ओहिठाम चारि बजे भोरेसँ आगन्तुक सभक पाँति लागब शुरु भए जाइत छल। सभक जबानपर बस ओकरे नाम रहैत छल । सभ ओकरे

चर्चा करैत रहैत छल । सलीम ई केलक,सलीम ओ केलक,सलीम परिवार एहन छैक,ओ कतेक उदार अछि .. माने तरह-तरहक बात मुदा सभक जड़िमे सलीमे रहैत छल । ककरो एहि बातसँ कोनो मतलब नहि रहैत छलैक जे असलमे ओ एतेक धन कतएसँ अनैत छल । मुदा बीचमे जे थोड़े दिन खराब माहौल बनल,जाहि प्रकारसँ आपसी विद्वेषकेँ स्थान देल गेल,तकर बाद लोकक मोनमे एक प्रकारक डर बैसि गेलैक ।

अखनहु गरीबसभक ओकर जिज्ञासा रहबे करैक,मुदा सलीमक ओहिठाम जेबासँ डर होइक । ओना एहनो माहौलमे सलीम कखनहु सामने नहि आएल । ओकर सभटा गलत काजसभ मनेजरक मारफत होइत रहल । मुदा ताहिसँ की फरक पड़ैत अछि? लोकक दुर्गति तँ भेवे केलैक । समाजक पुरोधासभ एहि कुचक्रमे फँसि अपन जानो नहि बचा सकलाह । प्रशासन असहाय भए देखैत रहि गेल किंवा जानि बूझि कए मूकदर्शक बनि गेल । एहन परिस्थितिक सामना करबाक ककरो कल्पना नहि छलैक । मुदा समय वलबान होइत अछि । ओ ककरो छोड़ैत थोड़े अछि । तहिना धीरपुर,नाजिरपुर,आ लगपासक स्थानसभ समयक चपेटमे आबि गेल छल । जकरे देखु,सएह परेसान छल ,त्राहि माम कए रहल छल ।

आब किछु दिनसँ लोक सलीमक प्रतीक्षा नहि करैत छल। बस मनेजरेटा ओकर सुधि लैत रहैत छल । अंदर की गतिविधि होइत छल,बाहर जा कए सलीम की करैत छल से तँ मनेजरोकेँ नीकसँ नहि बूझल रहैक । मुदा ओएहटा सलीमसँ अखनहु जुड़ल छल,ओकरासँ समय-कुसमय विशेष फोन नंबरपर बतिआ लैत छल ।

सलीम एकटा रहस्य छल,अपनो लेल आ आनोक लेल । ओ बाहर कतए जाए,ककरा-ककरासँ भेंट करए,कोन एहन व्यापार करए जाहिमे टाका झहरैत रहैक,से ककरो नहि बूझल रहैक,मनेजरोकेँ नहि । सलीम घरसँ बाहर डेग देलक आ राधानगरक लोकक हेतु दुर्लभ भए जाइत छल। आपात परिस्थितिमे मनेजरेटा ओकरासँ विशेष फोनपर संपर्क कए सकैत छल । ओहो फोन करवन खुजल रहत आ करवन बंद तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल ।

मनेजर सलीमक एहि परिस्थितिक खूब फएदा उठबैत छल। ओकरा नामे जे से करबैत रहैत छल । केओ चाहिओ कए तकर सत्यापन सलीमसँ नहि कए सकैत छल । जे मनेजर कहलक से सलीमक आज्ञा मानल जाइत छल । पहिने राधानगरक हेतु ओ बहुत गुणकारी छल । जाबे ई दंगा नहि भेल छल,साइते केओ ओकरा खिलाफ किछु बजितए । मुदा आब ओ बात नहि छल । सलीमक प्रतिष्ठा बहुत झूस भए गेल छल । गाहे-बगाहे ई बात सभ कहैत छल।

हिमेश बाबूक देहान्त बाद इलाकाक माहौल सलीमक खिलाफ भए गेल छल । लोक ओकरासँ बहुत तमसैल छल । बातो वाजिब रहैक । समाज कोनो एक व्यक्तिसँ नहि चलैत छैक। ताहि हेतु सभक सहयोग आ समन्वय चाही । आपसी सहमति चाही । जाहिसँ सभ विचारक लोक समाजमे सुखपूर्वक जीवन-यापन कए सकए । सभ अपना हिसाबसँ अपन धर्मक अनुसरण कए सकए । एहन नहि हेबाक चाही जे लोक एक-दोसरकेँ नीचाँ देखबए लागए । ओ जे कहैत अछि सएहटा अंतिम सत्य अछि,एहन बात स्वीकार्य नहि भए सकैत अछि । यदि कनी कालक

हेतु लोक चुप रहिओ जाएत तँ मौका पबिते तकर विरोध करबे करत।

एक-एक कए समाजक सम्मानित लोकसभ एहि दुनिआसँ असमयमे चलि गेलाह । प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ सलीम एहि लेल जिम्मेबार मानल जाइत छल । तेँ सामान्य लोककेँ सलीममे रूचि नहि रहि गेलैक वा ओकरसभक मोन सलीमक प्रतिए सकारात्मक नहि रहि गेलैक । मनेजरकेँ तँ मजबूरी रहैक । सलीमक बिना ओकर कोनो आस्तित्व नहि छलैक । ओ रहि-रहि कए कैक दिन धरि सलीमक फोन लगबैत रहल । मुदा ओकर फोन स्विच आफ अबैत रहलेक । "आब की कएल जाए?" -एहि चिंतासँ मनेजर परेसान रहए लागल । समाधान किछु फुरेबे नहि करैक । ककरा कहितैक, के मदति करितैक? ककरो किछु बूझले नहि रहैक । आखिर अछता-पछता कए ओ चुप भए जाइत छल ।

ओहिदिन अपन घरक ओसारापर बैसल मनेजर बेर-बेर सलीमकेँ फोन लगा रहल छल । बीच-बीचमे चाह सेहो पिबैत रहैत छल । ताबते सामने सड़कपर लोकक हुजुम देखेलेक । आगू-आगू फातिमा आ तकर पाछू हम,डाक्टर थॉमस आ लोहित छलहुँ । तकर पाछू राधानगर आ लगपासक गामसँ आएल दू-तीन सए लोक चलि रहल छल । केओ किछु बाजि नहि रहल छल । कोनो नारा नहि लगा रहल छल । लोकसभक हाथमे भारत माताक चित्र छलैक । फातिमाक हाथमे सेहो बैनर छल –

"धर्मक नामपर हिंसा बंद होअए । हमसभ भारत माताक संतान छी। हमसभ एक छी, एक रहब ।"

हमरोसभक हाथमे बैनर छल । सभमे ओएह बात लिखल छल ।

मनेजर ई दृश्य देखि छगुन्तामे पड़ि गेल । आखिर,ई की भए रहल अछि?

"हमर सभक समस्त प्रयास पर के पानि फेरि रहल अछि?"

लोकक हुजुम शांतिपुर्ण ढंगसँ आगू बढ़ल जा रहल छल। मनेजर चुपचाप देखैत रहल । लगलैक जेना ओ बैसले-बैसल मुरूत बनि गेल । लोकक हुजुम आगू बढ़ि गेल, क्रमशः अदृश्य भए गेल। मनेजर ओहिना कुर्सीपर बैसल रहल कि एतबहिमे कोनो अज्ञात नंबरसँ फोन अएलैक-

"के?"

"सलीम साहेबक आदमी बाजि रहल छी?"

"बात की छैक? अहाँ एतेक परेसान किएक बूझा रहल छी?"

"सलीम साहेब नहि रहलाह... ।"

ई बात सुनितहि मनेजर उठि कए ठाढ़ भए गेल । बहुत मोसकिलसँ ओ अपनाकेँ सम्हारैत फुछलक-

"से केना भेलैक?"

"के हुनकर जान लेलक? की हुनका कोनो बिमारी भए गेलनि?..." मनेजर बजिते रहि गेल आ फोन कटि गेल ।

31

लोककेँ अपन पूर्वजक भूमि अपना दिस खिचैत छैक । कतए-कतएसँ प्रवासी लोक जखन अपन स्थानपर पहुँचैत अछि तँ ओकर सुखक अनुमान तँ भुक्तभोगीए लगा सकैत छथि । पूरन तेहने लोक छल । बहुत मनोरथसँ राधानगरमे अपन व्यापारक केन्द्र खोलने छल । मुदा से नष्ट कए देल गेलैक । मुदा तेँ की? ओकर उत्साहमे कोनो कमी नहि भेलैक । ओ जनैत छल जे ई सभ क्षणिक छैक । आइ ने काल्हि जा कए लोककेँ सदवुद्धि अएतैक,आपसी विश्वास फेरसँ स्थापित होएत । धीरपुर,नाजिरपुर आ लगपासक आन-आन गाममे फेर ओएह सौहार्द देखबामे आएत । एहने सोच हमरो लोकनिक छल ।

ओहिदिन डाक्टर थॉमसक ओहिठाम हम,लोहित,फातिमा,डाक्टर थॉमस आ पूरन बड़ी काल धरि आपसमे चर्चा करैत रहि गेल रही । समस्या तँ सभकेँ बूझले छैक। समाधान की हेबाक चाही? कएल की जाए जाहिसँ धर्मक नामपर कएल जा रहल अधर्म बंद होअए? जाहिसँ लोकसभमे आपसी विश्वास फेरसँ स्थापित होइक । सभ जनैत छल जे एकटा साधारण घटना केहन भारी उत्पातमे बदलि गेल । फातिमा लोहितसँ बिआह कइए लैत तँ ककरा की क्षति होइतैक? हिमेश बाबू तँ मानिए गेल रहथि । सलीमकेँ मनाबक बात रहैक । मुदा तेसर-चारिम आदमीसभ एहि मामिलामे टपकि गेल । बातकेँ बतंगर बना देलक। निश्चित रूपसँ एहिसभमे बाहरी तत्वक हाथ छल जे समाजमे आपसी बैमनस्व स्थापित कए देशकेँ दुबर करए चाहैत अछि । जे नहि चाहैत अछि जे हमर देश दुनिआमे प्रतिष्ठित होअए ।

एहिसभमे सलीम तँ एकटा मोहरा मात्र छल । मौका ताकि कए ओकर फएदा उठाओल गेल । अंततोगत्वा, सलीमोकेँ कात कए देल गेल । आखिर ओकर ई हाल भेल कोना? तकर जनतब तँ ककरो लग नहि रहैक , मनेजरो लग नहि ।

ओहिदिन डाक्टर थॉमसक ओहिठाम भेल बैसारमे राष्ट्र निर्माण मंचक स्थापना कएल गेल । सर्वसम्मतिसँ फातिमाकेँ ओहि संस्थाक अध्यक्ष बनाओल गेल । फातिमा,लोहित,थॉमस आ पूरन कें सेहो महत्वपूर्ण काज देल गेल । संस्थाक एकमात्र उद्देश्य समाजमे सद्भाव स्थापित करब छल जाहिसँ समाजक सभवर्गक लोक एकमतसँ अपन देशकेँ मजगूत करथि । जाति,धर्मक नामपर भेद-भाव नहि कएल जाएत । हालमे भेल दुर्घटनासँ शिक्षा लैत भविष्यमे एहन बात नहि होअए ताहि लेल गाम-गाम जन जागरण अभियान चलाओल जाएत । एहि निर्णयकेँ सभगोटे स्वागत केलनि । ओहि बैसारेमे फातिमा घोषणा केलक-

“जे यदि हमर बिआह लोहितसँ हेबाक कारणे समाजमे एतेक तनाव भेल अछि तँ हम आजीवन बिआह नहि करब । मुदा ई जरूर चाहब जे समाजमे लोकसभ फेरसँ सुखी रहए, शांतिपूर्ण ढंगसँ जीवन-यापन करए ।”

लोहित सहर्ष एहि बातकेँ समर्थन केलक । पूरन आ थॉमस एकस्वरमे बाजि उठल-

“जाहि समाजमे फातिमा सन लोक अछि ताहि ठाम सभकिछु नीके रहत । तकर बादे प्रात भेने लोकक हुजुम संगे हमसभ राधानगरक सड़कपर निकलि गेल रही । तकर परिणति राधा नगरक प्रसिद्ध पोलो मैदानमे विशाल जनसभामे भेल ।

अपन अध्यक्षीय भाषणमे फातिमा बजैत अछि-

"ई बहुत प्रसन्नताक बाद अछि जे राष्ट्र निर्माण मंचक तत्वावधानमे आयोजित एहि बैसारमे एतेक लोक उपस्थित छथि । एहिसँ साबित होइत अछि जे अखनहु बहुत लोक समाजमे सद्भावना चाहैत छथि,एकताक संपोषक छथि। अपन समाजमे किछुदिनसँ तरह-तरहक फसाद देखल गेल । कतेको निर्दोष लोक तकर सिकार भए गेलाह । टीसन बाबू,पंडितजी, आ हिमेश बाबूक सन-सन नीक लोक अपन जानो नहि बचा सकलाह आ समाजक कल्याण सोचैत-सोचैत एहि दुनिआसँ चलि गेलाह । केओ कहि सकैत अछि जे ओ सभ अपन स्वार्थसँ ऊपर उठि कए समाजक कल्याणक हेतु काज कए रहल छलाह । मुदा किछुगोटेकेँ से पसिंद नहि भेलनि । ओ सभ षड़यंत्र कए हुनकर सभक अकालमृत्युक कारण बनि गेलाह । ताहिसँ पहिने जे सभ भेल से सभ जनिते छी। तकरा फेरसँ दोहराएब,अनेरे कष्टकेँ मोन पाड़ब होएत । ओहिसँ एतबे सबक लेबाक चाही जे एहि तरहक घटनामे ककरो फएदा नहि होइत छैक। आगि केओ लगबैत अछि,पकैत निर्दोषै लोक अछि ।

आखिर हमसभ एही माटि-पानिमे उत्पन्न भेल छी । हमर पुरखा एकहि रहल छथि । तत्कालीन समाजक परिस्थितिवश ओ सभ यदि अपन धर्म बदलि लेलनि तँ ओहिसँ हुनकर सभकिछु बदलि गेलनि से संभव नहि अछि । केओ अपन इतिहास नहि बदलि सकैत अछि । हमसभ हजारो सालसँ एकहि ठाम रहि रहल छी । एही माटि-पानिमे जन्म लेने छी,पोसल गेल छी । तेँ हमसभ एक बेर फेर एक भए जाइ । बिसरि जाइ ओ बात सभ जे दुर्भाग्यवश समाजक शत्रुसभ द्वारा प्रचारित कएल गेल अछि ।

हमसभ एक छी आ एक रहब । यदि हमर देश सुरक्षित रहत,तखनहि हमहुसभ सुरक्षित रहि सकब । ताहि हेतु जरूरी अछि जे आपसी मतभेदकेँ बिसरि सभगोटे अपन देशकेँ मजगूत करबामे लागि जाइ ।”

फातिमाक भाषण चलिए रहल छल कि ओही मैदानक दोसर भागमे एकटा हेलीकप्टर उतरल । सभक ध्यान ओमहर चलि जाएब स्वभाविके छल । लोकसभ पुछि रहल छल-

“ई कतएसँ आएल? एहिमे के बैसल छथि?”

किछुगोटे तँ पहिल बेर हेलीकप्टरकेँ खसैत देखि रहल छल। चारूकात अफरा-तफरीक माहौल भए गेल । लोकसभ उठि -उठि हेलीकप्टर दिस जाए लागल । आखिर,फातिमा अपन भाषण रोकि देलक । उत्सुकतावश, लोकसभ हेलीकप्टर लग जमा होइत गेल ।

32

आकाशमे उड़ैत हेलिकप्टरकेँ फातिमा सेहो मंचपरसँ देखलक । मुदा ओ की जाने गेलैक जे एहिमे ओकरा लेल बहुत अशुभ समाचार राखल छैक । हमरा लोकनि सेहो किछु अनुमान नहि लगा सकैत छलहुँ जे आखिर बात की छैक? हमसभ एही गुनधुनमे छलहुँ की किछुगोटे फटकिएसँ फातिमाकेँ इसारा केलकैक । मुदा फातिमा जस-के-तस छलि । कोनो प्रतिक्रिया नहि दए सकलैक । ओ अकचकाएले रहि गेलि । नहि बूझि सकलि जे ओ आदमी की कहए चाहैत अछि । ओ व्यक्ति मंचक लगीच आबि

गेल छल । फातिमाकेँ किछु कहए चाहैत छल । मुदा बाजल नहि होइक । आखिर हमही ओकरा पुछलिऐक-

"बात की छैक? तूँ बजैत किएक नहि छह?"

"मनेजर फातिमाकेँ हेलीकप्टर लग बजा रहल छथि। एहिसँ बेसी हमरो किछु नहि बूझल अछि ।"

हमरा लोकनिकेँ अंदेसा भेल । किछु गड़बड़ बुझाएल । हमसभ गोटे ओहि व्यक्तिक अनुसरण करैत हेलीकप्टर लग पहुँचैत छी । ताबे ओ जमीनपर उतरि चुकल छल ।

मनेजर ओकर गेटेपर ठाढ़ छल । फातिमाकेँ अबैत देखि ओ नीचाँ उतरि जाइत अछि । किछुगोटे हेलीकप्टरसँ एकटा बेस नाम बाकस उतारैत छथि । ओहि बाकसकेँ जमीनपर रखितहि ओकरा फूलसँ लादि देल जाइत अछि । देखिते-देखिते किछुगोटे ठोह पारि कए कानए लगैत अछि । मनेजर फातिमा लग पहुँचि कहैत छथि-

"सलीम साहेब नहि रहलाह ।"

फातिमा एहिबातपर विश्वास नहि कए सकलि। ओ पुछैत अछि-

"हम ई की सुनि रहल छी?"

"अहाँ ठीके सुनलहुँ अछि।"

"मुदा हुनका की भेलनि? ओ तँ केहन स्वस्थ छलाह ।"

"से सभ किछु नहि बूझल अछि । हमरा केओ फोन केलक। सलीम साहबक मृत्युक सूचना देलक । तकर बाद आइ भोरे केओ कहलक जे हुनकर लास थोड़बे कालमे राधानगर

हेलीकप्टरसँ पहुँचि रहल अछि । हमरो एहिसँ बेसी किछु नहि बूझल अछि । की भेलैक, केना भेलैक से किछु जनतब नहि अछि ।”

पिताक मृत्युक समाचारसँ फातिमा बहुत भाव विह्वल भए गेल छलि । ओकरा संगे-संगे हमहुसभ दुखी छलहुँ । सभक मोनमे एतबे प्रश्न उठैक जे आखिर ई कोना भेलैक? तकर उत्तर मात्र मनेजरटा दए सकैत छल । मुदा ओहो चुप्प छल, किछु नहि कहि रहल छल। पता नहि,ओकरो ठीकसँ बूझल छलैक कि नहि?

एमहर मनेजर हमरासभसँ गप्पमे लागल छल ,ओमहर हेलीकप्टर अपन काज कए वापसी यात्राक हेतु आकाशमे उड़ि चुकल छल । ई सभटा घटना ततेक तेजीसँ आ अप्रत्यासित रूपसँ घटित भेल जे मनेजरो अबाके रहि गेल । के ओहि हेलीकप्टरकेँ पठओलक,कतएसँ आएल,सलीमक मृत्यु कोना भेलैक,ई सभ रहस्ये बनल रहि गेल । मनेजर नहि सोचि सकल जे ओ हेलीकप्टर एतेक जल्दी वापस उड़ि जाएत । तेँ सलीमक लास राखि ओ फातिमा लग पहुँचल छल । फातिमा संगे वापस लास लग जएबाक रहैक । फेर हेलीकप्टरमे सबार लोकसभक हाल-चाल लैत । एक तँ ओकर सभक भाषा फराक रहैक । सलीमक लास उतारैत काल ओ सभ मनेजरकेँ किछु कहलकैक जरूर मुदा ओ बूझि नहि सकल । ओ सभ एकटा छोटसन पेटी सेहो देलकैक । से जस-के-तस मनेजर लग राखल छलैक । ओकरा खोलि कए देखबाक उसास ओकरा नहि भेटि सकल रहैक ।

फातिमाक हाल बहुत बेहाल छल । ओकरा रहि-रहि कए अफसोच होइक जे ओकरे चालिसँ सलीमक ई हाल भेलैक । ने ओ लोहितक संग धरैत ,ने ई सभ होइतैक । मुदा आब ई सभ सोचिए कए की होमए बला रहैक? जे हेबाक छलैक,से भए गेलैक । बहुत

किछु एहन भेलैक जकर कल्पनो ओ नहि केने रहल होएत । सभ किछु तँ ओ बरदास्त कए गेलि,मुदा सलीमक मृत्यु तँ जेना ओकरा समुद्रमे धकेल देलकैक । ओहिसँ उबरब ओकरा लेल बहुत कठिन छलैक । हमसभ अपना भरि फातिमाकेँ सम्हारि रहल छलहुँ । मुदा ओ किछु बूझबाक स्थितिमे नहि रहि गेल छलि । एहन परिस्थितिमे कएल की जाए से किछु बुझा नहि रहल छल ।

सलीमक लास राधानगर स्थित ओकर कोठीपर पहुँचाओल गेल । पाछू लागल हमसभ फातिमाक संगे कोठीक गेट धरि पहुँचलहुँ । मुदा लोहित ओतए नहि देखाएल । रस्तामे ककरो एहिपर ध्यान नहि गेलैक । सभ अपनेमे परेसान रहए । हमरो भेल जे लोहित पाछू-पाछू आबि रहल अछि । अपन घर लग पहुँचि फातिमा आओर भावुक भए गेलि । ओकर ई दशा देखि मनेजर ओकरा लग पहुँचल । अपना भरि ओकरा बुझेबाक प्रयास केलक । मुदा फातिमा ककरो सुनबाक स्थितिमे नहि रहए । मनेजर ओकरा सलीमक लास दिस लए गेल । हमसभ कनीक पाछू भए गेल रही । ताबतेमे कोठीक गेट बंद कए देल गेल । हमसभ लाख प्रयास केलहुँ,गेट नहि खोलल गेल । हारि कए हमसभ ओहिठामसँ वापस भए गेलहुँ ।

सलीमक अंतिम संस्कार बहुत रहस्यात्मक तरीकासँ कए देल गेल । राधानगर सहर आ लगपासक लोकसभ अहुरिआ काटि कए रहि गेल । स्थानीय लोकसभ बाटे तकैत रहि गेल । आखिर एना किएक कएल गेल? किछु नहि कहल जा सकैत अछि। मुदा ओहि दिनक बाद मनेजर कतहु नहि देखाएल । बादमे सुनबामे आएल जे ओ सलीमक कोठीसँ बहुत रास मूल्यवान बस्तुसभ लए कए नेपाल दिस भागि गेल । ओहि कोठीमे फातिमा आ ओकर

किछु नौकर-चाकरसभ रहि गेल रहैक । असगरे रहैत-रहैत ओकर दम फुलि रहल छलैक । लोहितक से अता-पता नहि चलि रहल छलैक । कोनो रस्ता नहि फुराइक । कैकदिन ओ एहिना रहि गेलि ।

सलीमक मृत्युक कैक दिन बाद धरि फातिमाकेँ सुधि-वुधि नहि रहलैक । ओ नहि सोचि पाबि रहल छलि जे आगू कोना की कएल जाए? ओकर पिता अकूत संपत्ति छोड़ि गेल रहथि । तकर कोना-की कएल जाएत? मनेजरेटा केँ तकरसभक हिसाब-किताब बूझल रहैक । मुदा ऐन मौकापर ओहो चंपत भए गेल छल । फातिमा नितान्त असगरि भए गेल छलि । एहिनेमे किछु दिन समय बितल ।

एक दिन भोरे ओकरा मनेजर द्वारा देल गेल पेटी निकाललक । ओ पेटी खोलैत अछि । ओहि पेटीमे सलीमक वसीयत छलैक । फातिमा ओकरा पढ़ैत अछि । सलीम अपन आधा संपत्ति हिंसामे मारल गेल लोकसभक अनाथ बच्चासभक कल्याण हेतु खर्च करबाक इच्छा व्यक्त केने छल । शेष आधा संपत्तिक उत्तराधिकारी ओ फातिमाकेँ बना गेल छल । ओही पेटीमे फातिमाक नाम एकटा छोटसन चिठ्ठी सेहो राखल छल । फातिमा चिठ्ठी पढ़ि-पढ़ि कानए लगैत अछि । सलीम लिखने छल-

“प्रिय बेटी फातिमा,

हम सभ दिन फसादमे पड़ल रहलहुँ । तोरासभ केँ कोन कथा ककरो अपन जीवनक बारेमे नहि बूझए देलिऐक । अकूत धन जमा करेबाक लिप्साक कारण हम दल-दलमे फँसैत चलि गेलहुँ । ओहीक्रममे हमर नियंत्रण समाजविरोधी तत्वसभक हाथमे चलि गेल । तकर बाद तँ हम मात्र ओकरसभक हाथक एकटा

खेलओनाटा रहि गेल रही । व्यक्तिगत रूपसँ हम लोहित संगे तोहर बिआहक समर्थनमे रही । मुदा ओएहसभ बीचमे पड़ि मामिलाकेँ ओझरा देलक । तरह-तरहसँ ओकर व्याख्या करए लागल । अनेरे धर्मकेँ बीचमे आनि कए बड़का फसाद करबा देलक । हमर मनेजर सेहो ओकरेसभक संग भए गेल छल । ई बात जाबे हम बूझलिऐक,ताबे बहुत देरी भए गेल छल । मामिला हमर हाथसँ बाहर भए गेल छल । बादमे तँ ओ सभ जएह चाहए सएह होइक। असलमे ओ सभ हमर सभटा संपत्ति हथिआबए चाहैत छल । हम तकर विरोध केलहुँ तँ हमरापर तरह-तरहक दोषारोपण करए लागल।

हमरा बहुत अफसोच अछि जे धनीक बनबाक चक्करमे तोरा प्रतिए अपन कर्तव्यक पालन नहि कए सकलहुँ । हम सोची जे धन रहत तँ सभकिछु भए जाएत । मुदा से सही नहि छल। धनक एकटा सीमान अछि । ओ मनुक्खकेँ शांति नहि दए सकैत अछि। मनुष्यताक विकास नहि कए सकैत अछि । ताहि लेल तँ त्याग करब बहुत जरूरी अछि । सभकिछु रहितहुँ हम एकटा नीक पिता नहि बनि सकलहुँ । एहि हेतु हम क्षमा प्रार्थी छी ।

पता नहि हम बचि सकब कि नहि? तेँ ई बसीयत आ चिठ्ठी छोड़ने जाइत छी ।

तोहर अभागल पिता

सलीम”

चिठ्ठी पढ़ि कए फातिमा उदास भए गेलि ।

“हमरा लेल ई बसीयत, ई धन, संपत्ति आब कोन काजक?”-ओ मोने-मोन सोचैत छलि ।

33

समय-साल बदलैत देरी नहि लगैत अछि । जे आइ उत्कर्षपर अछि,तकर कए बेर नामो निसान नहि रहि जाइत छैक । परिवर्तन जीवनक नियम छैक । प्रकृति स्वतः संतुलन बनबैत रहैत अछि । जकरा जे करबाक होउक से करओ । एक सीमा धरि प्रकृति ओहिसँ आँखि मुनने रहैत अछि । फेर एकहि क्षणमे छनाको भए जाइत अछि । मनुक्खक घमंड व्यर्थ अछि,निर्थक अछि। से साबित करबाक प्रयोजन नहि रहि जाइत अछि । सलीमक उदाहरण सामने छल । ओना ओ सभदिन रहस्यात्मक जीवन जीबैत रहल । ओ एकदिस स्थानीय लोकसभक हेतु अत्यंत उदार व्यवहार रखैत छल तँ दोसर दिस सहर-के-सहर कीनने चलि जा रहल छल। कतएसँ अबैत छल एतेक धन? रहि-रहि कए ओकर कतहु बिला जएबाक रहस्य तँ अंत-अंत धरि मनेजरो नहि बूझि सकलैक । के ककरा ठगि रहल छल से नहि कहल जा सकैत छल।

आब तँ ओ बातसभ बीति गेल । आगू की कएल जाए जाहिसँ समाजमे लोकसभ फेरसँ सुखी जीवन जीबि सकए। आपसी सद्भाव फेरसँ स्थापित होअए? हमसभ डाक्टर थॉमस ओहिठाम एही विषयपर चर्चा करबाक हेतु पहुँचल रही । बैसारमे हम,पूरन आ डाक्टर थॉमस पहिनेसँ रही । फातिमा सेहो जेना-तेना ओतए पहुँचि गेलि । हमसभ ककरो हाथे ओकरा धरि समाद पहुँचा देन रहिऐक । तकर अनुकूल प्रभाव भेल। फातिमा स्वनिर्मित एकांतसँ बहराएलि । लोहितसँ संपर्क करबाक सेहो प्रयास कएल गेल छल । मुदा से सफल नहि भए सकल । ओकरा

अनुपस्थितिएमे बैसार शुरु भेल। सभसँ पहिने सरदार पूरन सिंघ बजैत अछि-

"समाजमे पुनर्जागरण जरूरी अछि । धर्म मनुक्खक कल्याणक हेतु होइत अछि । दुनिआक कोनो धर्म होअए, ओकर एकमात्र उद्येश्य मनुष्यताक स्थापना होइत अछि । बँकिए विधि-विधान लोक अपन स्थिति-परिस्थितिक अनुसार बनबैत अछि । ओहिमे की ठीक आ की अधलाह अछि तकर कोनो सर्वमान्य व्याख्या नहि कएल जा सकैत अछि। तेँ जरूरी अछि जे लोक एक-दोसरक पूजा पद्धति आ जीवन दर्शनक प्रति आदरक भाव राखए। एहिमे छोट-पैघक कोनो बात नहि भए सकैत अछि । सभ अपना-अपना हिसाबे ठीके अछि।

सभ सरदारक बिआह रवि दिन कए दूपहरमे गुरुद्वारामे होइत छैक। ताहि हेतु कोनो फराकसँ दिन नहि ताकल जाइत छैक। यदि दिने तकेलासँ किछु होइतैक तँ केओ सरदार जीबे नहि करैत,वा ककरो बिआह ठीके नहि रहितैक। मुदा से नहि होइत छैक। ओ सभ केहन हृष्ट-पुष्ट होइत छथि आ सुखी जीवन जीबैत छथि । कहबाक माने जे लोक व्यवहारक स्थानीय महत्व भए सकैत अछि । मुदा ओएह ततेक कठिन नहि भए जाए जे जीवन मोसकिल भए जाए।

बहुत रास समय बीति गेल । जे सभ चलि गेलाह से वापस नहि हेताह । मुदा आब जे सभ बाँचल छथि आ जे आगू अओताह तिनका जीवनमे एहन घटना सभ नहि होनि, ओ सभ सुखी रहि सकथि ताहि हेतु हमसभ कृत संकल्प छी, अपन सर्वस्व अर्पित करबाक हेतु तैयार छी । हम अपन सभटा संपत्ति राष्ट्र जागरण

मंचकेँ समर्पित करैत छी । संगे अपन आगूक जीवन एहि संस्थाक हेतु देबए चाहैत छी।"

पूरनक एहि त्यागसँ हमसभ आप्लावित रही । सोचनो नहि रही जे एहनो होएत । बात एतहि नहि रूकल । डाक्टर थॉमस एहि बैसारकेँ आगू बढ़बैत कहैत छथि-

"हम आब नौकरी नहि करब । हमरा जे हुनर भगवान देने छथि ताहिसँ राष्ट्रमंदिरकेँ सुसज्जित करब । सभकेँ काया निरोग रखबामे मदति करब जाहिसँ ओ सभ संपूर्ण शक्तिसँ सुंदर समाजक सृजन कए सकथि। हमर आगूक जीवन समाजक लेल समर्पित अछि।"

फातिमा बड़ीकाल धरि गुमसुम छलि । ओ किछु सोचि रहल छलि । मुदा बाजल नहि होइक । अहूँ अपन विचार रखिऔक। सरदार पुरन सिंघ फातिमासँ आग्रह करैत अछि । आखिर ओ बाजलि -

"हमरा पिताक जे किछु संपत्ति प्राप्त भेल अछि से एहि माटि-पानिक कल्याण हेति खर्च होअए । असलमे ई सभ संपत्ति एहीठामक लोकक अछिओ । तेँ एकर उपयोग एही समाजक कल्याण हेतु कएल जाए । धर्म आ जातिक नामपर विवाद समाप्त होअए । मनुक्खक जीवनमे आओर बहुत रास समस्या अछि । सभसँ जटिल समस्या गरीबी अछि, अशिक्षा अछि । हमसभ मिलि कए गरीबसँ गरीब लोकक जीवनमे प्रकाश आनबाक प्रयास करब। सभसँ ऊपर देश अछि । यदि देश बाँचत तँ हमहुसभ बाँचब । तेँ हमसभ राष्ट्र जागरण मंचक माध्यमसँ एहि काजसभमे लागि जाइ सएह हमरो इच्छा अछि ।"

फातिमाक साहस आ दृढ़तासँ सभ प्रभावित रहए । मुदा लोहितक अनुपस्थिति सभकेँ परेसान केने रहैक,सभक मोनमे एकटा जिज्ञासा रहैक जे ओ गेल कतए ?

बैसार चलिए रहल छल कि डाक्टर थॉमसक फोनक घंटी बाजि उठल । ओ फोनकेँ बंद कए देलनि । फेर घंटी बाजल । आखिर ओ फोन निकालि कए देखैत छथि । लोहितक फोन छल। से जानि हमरासभक आश्चर्यक कोनो ठेकान नहि रहल । ओ कहैत अछि-

“सुनैत छी, अहाँसभ हमरा लेल बहुत चिंतिति छी । तकर कोनो प्रयोजन नहि अछि । हम जतए छी, ठीक छी । हमरा लेल अहाँसभ चिंता नहि करू ।”

“मुदा अहाँ छी कतए? एना हमरासभकेँ छोड़ि कए किएक चलि गेलहुँ? हमसभ अहाँ बिना बहुत दुखी छी। घर छोड़बासँ पहिने कम सँ कम फातिमासँ तँ अहाँकेँ गप्प कए लेबाक छल । यदि कोनो बात मोनमे छल तँ तकरा प्रकट करितहुँ । हमसभ आपसमे चर्चा करितहुँ,किछु समाधान निकालबाक प्रयास करितहुँ।”

“हमरा एहि बातक बहुत अफसोच अछि जे हमरे कारण समाजमे एतेक तरहक समस्या उत्पन्न भेल । एतेक हिंसा भेल । कतेको निर्दोष लोकक जान चलि गेल । टीसन बाबू आ हिमेश बाबू सन -सन कतेको निर्दोष लोकसभक अकाल मृत्यु भए गेल । हमरे चलते फातिमाक जिनगी तबाह भेल, नहि तँ ओ ठाठसँ जीबि रहल छलि । तेँ प्रायश्चितस्वरूप आत्म शांतिक हेतु हम हिमालयमे रहि तपस्या करबाक निर्णय केलहुँ अछि ।”

"ओना अहाँक मरजी अछि । मुदा ई कोनो समाधान नहि भेल? यदि सभ केओ एहिना अपने धरि सीमित रहि जाएत तँ आखिर अपन देशक रक्षा कोना होएत? समाजमे नीक लोकक दायित्व बहुत होइत छैक । यदि नीक लोकसभक अभाव भए जाएत तँ अधलाहसभ अपने समाजपर कब्जा कए लेत ।"

लोहित किछु उत्तर नहि देलक । तकर बाद ओकर फोन स्वतः बंद भए गेलैक । हमसभ एहीसँ प्रसन्न रही जे कम सँ कम लोहित सुरक्षित तँ अछि ।

34

बिना कोनो पूर्व विचार विमर्शकेँ भावनाक प्रवाहमे लोहित अपन गाम-घर छोड़ि कए अज्ञात स्थान दिस बिदा भए गेल छल । जाइत काल ओकरा एतबो सुधि नहि रहलैक जे कम सँ कम फातिमाकेँ कहि दिऐक । हमरा लोकनिकेँ तँ किछु पता नहिए चलि सकल रहए। लोहितक मानसिक स्थितिए तेहन भए गेल रहैक जाहिमे आओर किछुक हेतु स्थान नहि रहि गेल रहैक । ओ अन्हरोखेमे बस एकटा धोती आ अंगोछा लेने बिदा भए गेल । फरीछ होइत-होइत तँ ओ कैक कोस आगू जा चुकल छल ।

एहन बात नहि छैक जे गाम छोड़ैत काल ओकरा मोनमे उठा-पटक नहि भेल रहैक । कैकदिनसँ ओ गुनधुनमे पड़ल छल। राति-राति भरि सोचैत रहि गेल छल । अंततोगत्वा, ओ चलि पड़ल- एकदम अज्ञात दिसामे । भोर होइत-होइत एकटा बस जाइत देखलैक । ओ हाथ उठओलक । बस ठाढ़ भए गेल । बस हरिद्वार

जा रहल छल । बसमे असबार भेलाक बाद बस चालक ओकरासँ गंतव्य पुछलकैक,टिकट हेतु टाका मंगलकैक । ओ साफ-साफ कहि देलकैक-

“भाइ! हमरा लग किछु नहि छौ । हम कतए जाएब से हमरो नहि बूझल अछि । तूँ किछु मदति करबह तँ हम थोड़ेक आगू धरि ससरि जाएब । तकर बाद भगवान मालिक ।”

“मुदा तूँ जेबहक कतए? बिना टाका-पैसाकेँ तूँ कैकदिन रहि सकबह? हम तँ कहबह जे बससँ उतरि जाह आ अपन घर वापस चलि जाह । व्यर्थमे बौएलासँ कोनो फएदा नहि हेतह?”

“हमरा तूँ बससँ भने उतारि दएह, मुदा हम आब घर वापस तँ नहि जा सकैत छी?”

“से किएक?”

“छोड़ह ओ बातसभ । तोरा यदि हमरा बससँ उतारि देबाक छह तँ रोकह बस आ हम उतरि जाएब । मुदा घर वापस नहि जाएब । चाहे जान रहए कि जाए ।”

“जखन तूँ अड़ले छह तँ चलह । हरिद्वार धरि हम तोरा छोड़ि देबह ।”

बस चालकक उदारतासँ लोहित बहुत प्रभावित भेल ।

“आइओ-काल्हि एहन लोक होइत अछि ।” -ओ मोने-मोन सोचैत छल ।

बस तेजीसँ चलि रहल छल । जाबे ओ बसमे बैसल छल लोहितक मोन सदिखन किछु-किछु सोचैत रहि गेलैक । करवन रस्ता बीति गेल से ओ नहि बूझि सकल । हरिद्वार पहुँचतहि बस चालक चिकरल-

"आबि गेल, हरिद्वार आबि गेल, उतरैत जाउ । बस यात्रीसभ एक-एक कए उतरए लगलाह । मुदा लोहित जस-के-तस बैसल रहल । जखन सभ यात्री उतरि गेल आ ओ ओहिना रहि गेल तँ बस चालक ओकरा लग आबि कहैत अछि-

"तूँ एहीपर रहबह की?"

"की करू से किछु बुझाए नहि रहल अछि?"

"हम तँ तोरा पहिने कहि देने रहिअह। आबो कोनो देरी नहि भेलैक अछि । हमसभ दू घंटाक बाद वापस जाएब । तूँ एही बससँ वापस भए जइअह ।"

"वापस तँ नहि जेबैक चाहे जे होउक ।"

"तखन उतरह । हमरासभकेँ बसमे पेट्रोल भरेबाक अछि। यदि तोहर मोन बदलैत अछि तँ दू घंटाक बाद एतहि आबि जइअह।"

लोहित बससँ उतरि गेल आ बिदा भेल । जँ जँ ओकर डेग बढ़ैत गेलैक ,जेना आगूक रस्ता भेटैत गेलैक । सभसँ पहिने ओ गंगामे स्नान केलक । गंगामे डूब दैते लगलैक जेना माथपरसँ सभटा भार गंगेमे बहि गेलैक । ओ बहुत आनन्दित अनुभव कए रहल छल। स्नानक बाद समानेमे भंडारा चलैत देखेलैक । ओ भरि पेट पूरी,तरकारी,खीर,पेन्तोआ खेलक । ओकरा पहिल बेर अनुभव भेलैक जे भविष्यक चिंता करब मूर्खता थिक । आगूक ओरिआन भगवान स्वयं करैत छथि । ओहि दिनुका बाद ओ चिंता केनाइ साफे छोड़ि देलक ।

भंडारा खेलाक बाद लोहित सामनेक मंदरिमे विश्राम केलक । ओतहि एकटा बाबा भेटलखिन । गप्प-सप्पक क्रममे पता

लगलैक जे हुनकर आश्रम हिमालयमे छनि । ओ लोहितकेँ अपने संगे चलबाक हेतु प्रेरित कएलाह । ओ सहर्ष हुनकर आग्रह स्वीकार कए लेलक । दोसर दिन भोरे लोहित बाबा संगे हुनकर आश्रम बिदा भए गेल ।

35

लोहित बाबा संग आगू बढ़ल । बाबाक तेजोमय स्वरुप देखि केओ आकर्षित भए सकैत छल । गेरुआ वस्त्र पहिरने,दाढ़ी बढ़ओने,ओ कोनो परम तपस्वी लगैत छलाह । लोहित हुनकर संगतिमे अपनाकेँ धन्य बूझैत छल। बाबा बहुत कम बाजथि । मुदा अपन दृष्टिएसँ ओ बहुत किछु कहि जाइत छलाह । ओ बेर-बेर लोहित दिस देखि रहल छलाह । ओ बूझि गेल छलाह जे लोहित किछु विशेष कारणसँ गाम-घर छोड़ि पहाड़ चढ़ि रहल छल । ई तँ एकटा संजोगे छल जे बाबा ओकरा भेटि गेलखिन । हुनका संगे चलैत-चलैत प्रकृतिक अनुपम सौंदर्यक अवलोकन सेहो ओ करैत रहैत छल । चारूकात हरिअर कंचन,तरह-तरहक फल-फूलक गाछ देखाइत रहैत छल । ओहि एकांतमे रहि-रहि कए मंदिरमे बजैत घंटी सुनाइत रहैत छल । कनीके फटकी गेलापर कोनो मस्जिदसँ अजानक मधुर ध्वनि सुनाइत छल ।

चलैत-चलैत जखन लोहित थाकि गेल तँ बाबा एकटा गुरुद्वारा लग बैसि गेलाह। ओहिठाम अनवरत भए रहल शबद कीर्तनक आनन्द लेबए लगलाह । ताबतेमे केओ हुनकासभ लग पहुँचल आ आग्रहपूर्वक लंगरमे लए गेल । लोहितकेँ भूख लागि

गेल छलैक । ओ भरि पेट लंगर छकलक। ताबे बाबा भजन-कीर्तन सुनैत रहलाह । दुनूगोटे ओहिठाम थोड़ेकाल विश्राम केलाह । तकर बाद बाबा लोहितकेँ उठओलथि-

"चलह-चलह । आब अपन सभक आश्रमो लगीचेमे अछि। ओहिठाम पहुँचि नीकसँ विश्राम करिअह ।"

लोहित बाबा संगे बिदा भेल । घंटा भरि चललाक बाद दुनूगोटे आश्रम पहुँचलाह । आश्रम तँ स्वर्गे छल । ओहिठाम पैर रखिते जेना लोहितक सभटा कष्ट हरा गेलैक। ओ निश्चिन्त भावसँ बाबाक आश्रममे बैसि गेल । बाबा अपन एकटा चेलाकेँ लोहितक संग लगा देलखिन आ स्वयं स्नान करबाक हेतु चलि गेलाह।

आश्रममे लोहित बहुत आनन्दमे छल । बाबा अपन धुनमे मस्त रहैत छलाह । हुनका ककरोसँ कोनो मतलब नहि रहनि । मुदा ओ एकदिन इसारासँ लोहितकेँ बजओलाह ।

"तोरा अपन माटि-पानिक कर्ज चुकेबाक चाही ।"

"हम की कए सकैत छी? ओहिठामक स्थिति बहुत खराब छैक । ओहिठामसँ तंगे भए कए हम भागल रही।"

"सभ यदि एहिना अपन कर्तव्यसँ भागि जाएत तँ ई दुनिआ चलत कोना?"

"तखन की करी?"

"से तँ तूँ जानह । मुदा तोरा एतहु शांति नहि हेतह? आइ ने काल्हि फेर तोरा ओतुका माया धरबे करतह।"-से कहि बाबा चुप भए गेलाह ।

लोहित सहटि कए आश्रमक घासपर बैसि गेल आ बड़ी काल धरि सोचैत रहि गेल जे आखिर बाबा ओकरा से सभ किएक कहलखिन?

36

ओहि दिनुका बैसारक बाद फातिमा अपन घर लौटि गेलि। आइ ओकर मोन बहुत हल्लुक लगैत छलैक। ओकरा लगैक जेना पहिल बेर ओ सही निर्णय केलक अछि । असलमे तँ ओ सलीमक इच्छाक प्रतिपूर्तिए कए रहल छलि । ताहि क्रममे ओ एक डेग आगूए बढ़ि गेलि । पिताक देल गेल अपनो हिस्साक संपत्तिकेँ सेहो ओ दान कए देलक । ओकरा मोनमे आब कतहु कोनो असमंजस नहि रहैक । ओ कोनो दुविधामे नहि रहि गेल छलि । ओकरा आब गृहस्थी नहि बसेबाक छलैक । संपूर्ण समाजे ओकर परिवार बनि गेल छलैक । मुदा लोहितकेँ एहि तरहें कात भए जेबाक दुख ओकरा रहबे करैक। ओ बिआह नहि करत तँ नहि करओ । फातिमा स्वयं आब तकर पक्षमे नहि रहि गेल छलि । ई बात नहि रहैक जे आब ओ समाजक आगू दूबर बनि गेल छलि । मुदा ओकर जीवनक लक्ष्य बदलि गेल छल । आब ओ किछु संकल्पक संग जीबए चाहैत छलि ।

संयोगसँ ओहि दिन लोहितक फोन नंबर ओकरा भेटि गेल रहैक । ओ बैसलि-बैसलि लोहितक नंबर लगा देलक । ओकरा कोनो उम्मीद नहि रहैक जे लोहित ओकर फोन उठओतैक । मुदा ओकर अनुमान गलत साबित भेलैक । लोहित ओकर फोन एकहि

घंटीक बाद उठा लैत अछि । तकर बाद दुनूगोटेमे बड़ी कालधरि गप्प होइत रहल । गप्पक क्रममे फातिमा कहैत अछि-

"मानलहुँ जे एहि दुनिआमे बहुत तरहक कष्ट अछि, परेसानी अछि । मुदा ताहिसँ भागि जाएबो तँ उचित नहि अछि । आखिर अन्यायक विरोध नहि करबो तँ महापाप थिक । यदि तोरा एकांतमे रहि कए शांति भेटिओ जेतह तँ ताहिसँ की होएत? एक-ने-एक दिन तँ सभकेँ शांत हेबेक छैक । जीवन जाबे बाँचल छैक,ताबे संसारमे रहिए कए एकर समस्याक न्यायपूर्ण समाधानक चेष्टा करबे उचित थिक,कर्तव्य थिक । हमरा तोरासँ जानि कए वा अनजानमे यदि किछु गलती भइए गेल तँ तकर प्रायश्चितो तँ हमरे सभकेँ करबाक अछि । कोनो जरूरी नहि अछि जे कतहु फटकी चलि गेलाक बाद मोन मुक्त भइए जाएत । परेसानी तखनहु रहिए सकैत अछि । तेँ हमरा विचारसँ तँ हमसभ एहि समाजे मे रहि कए एकरा सही रस्तापर अनबाक प्रयास करी ।

हम सभ ताही क्रममे राष्ट्र जागरण मंचक स्थापना कएल अछि । हमसभ गोटे ओहि संस्थाक हेतु समर्पित भए चुकल छी । हमरा प्रसन्नता होएत जे तूहुँ एहिमे अपन योगदान करह । एहिसँ बढ़िआँ किछु नहि भए सकैत अछि । रहल हमर तोहर बिआहक बात । आब तँ ओ प्रश्ने समाप्त अछि । हम बिआह नहि करबाक निर्णय कए चुकल छी । एहि लेल जे हमर समस्त शक्ति एहि देशक सेवामे लागि सकए ।"- एतेक बाजि फातिमा चुप्प भए गेलि ।

"ठीक छैक । तोहरसभक विचार बहुत उत्तम अछि । हमरा किछु समय दएह । हम एहिपर शांत मोनसँ विचार करब ।"

"कोनो बात नहि । तूँ नीकसँ विचारि लएह आ यदि हमरसभक रस्ता सही बुझाह तँ लौटि जाह आ लागि जाह एहि राष्ट्र आराधना यज्ञमे ।"

फातिमाक बातपर लोहित कैकदिन धरि विचार करैत रहि गेल । ओकरा लगलैक जे ओ पहाड़मे एकांत जीवन बिता कए भने कनी काल लेल चैनसँ जीबि लिअए,मुदा ओ अपन कर्तव्यसँ भागि रहल अछि । पहाड़पर रहि कए शांतिक अनुभव करब कोन आश्चर्यक बात भेल । समाजमे,समस्यासभक बीचेमे,तमाम मोसकिलक अछैतो शांतिक अनुभव करी आ दोसरोकेँ सुख पहुँचा सकी तखन ने । लोहित एहिसभ बातपर कैक दिन धरि विचार करैत रहल । ओकरा फातिमाक बात बहुत वाजिब बुझेलैक ।

एक दिन ओ भोरे उठल । बाबकेँ प्रणाम केलकनि । ओहि समय बाबा पूजापरसँ उठले छलाह । ओ लोहितक मोनक भाव तारि गेलाह । तैओ पुछलखिन-

"आइ भोरे-भोर केमहर बिदा भए गेलह?"

"हम जा रहल छी बाबा ।"

"कतए?"

"अपन गाम । अपन माटि-पानि हमरा बजा रहल अछि ।"

"एकदम सही निर्णय अछि । हमर आशीर्वाद सदिखन तोरा संगे रहत ।"

लोहित पहाड़सँ नीचाँक यात्रा पर बिदा भए गेल । ओकरा लगैक जेना रस्तामे चिड़ै-चुनमुन,सभ ओकर निर्णयसँ प्रसन्न भए स्वागत गान कए रहल होइक । ओ एक डेग बढ़ए तँ दू डेग चला

जाइक । सही कहल गेल अछि जे उत्साहमे बहुत शक्ति होइत अछि । ओतेकटा रस्ता ओ कोना टपि गेल से नहि पता लगलैक । आखिर ओ साँझ होइत-होइत अपन गाम वापस आबि गेल ।

37

आइ कतेको साल बीति गेल । मुदा धीरपुर आ नाजिरपुरक लोकक मुँहे फातिमा आ लोहितक त्यागक खिस्सा सुनाइते रहैत अछि । केना ओ सभ राष्ट्र जागरण मंचक आवरणमे समाजक पुनर्निर्माण करबाक हेतु सालक-साल संघर्ष करैत रहल। डाक्टर थॉमस,सरदार पूरन सिंघ, केना भोरे-भोर हमरा दनानपर आबि जइतथि आ ओहिठामसँ हमसभ लोहितकेँ संग करितहुँ । तकर बाद हमसभ फातिमाक ओतए पहुँचितहुँ । तकर बाद हमरसभ राष्ट्र निर्माणक काजे चलि पड़ितहुँ । यद्यपि ओ मार्ग कष्टपूर्ण छल,तद्यपि ओ सभगोटे दिन-राति अपन मार्गपर अविरल चलैत रहैत गेल । नहि रूकल,ने विश्राम केलक । सालक-साल ओहि काजमे लागल रहि गेल । अपन जीवनक समस्त सुख आ व्यक्तिगत आकांक्षाकेँ वलिदान कए देलक । तकर अनुकूल परिणामो भेल । गामक-गाममे फेरसँ हरिअरी देखबामे अबैत छल । लोकसभ निधोख सभठाम अबैत-जाइत छल । हुनका लोकनिक प्रयास सामाजिक पुनर्निर्माणक बाट पर एकटा मीलक पाथर साबित भेल ।

राष्ट्र जागरण मंचक तत्वावधानमे सभगोटे टीसन बाबू आ हिमेश बाबूक स्मारकक स्थापना केलनि । ओ स्मारक नहि

छल,अपितु सर्व धर्म समभावक ज्वलंत उदाहरण छल । ओ एकटा एहन साधना स्थल छल जतए सभ धर्मक लोक निश्चिन्त भावसँ अपना-अपना हिसाबे अपन भगवानक आराधना करैत छलाह । सही मानेमे ओ एकटा राष्ट्र मंदिर बनि गेल छल ।

अखनहु ओ स्मारक ठामहि अछि । ओहि इलाकाक लोक ओतए जाए अद्भुत शांतिक अनुभव करैत अछि । लोकसभ तँ इहो कहैत अछि जे फातिमा आ लोहितक देहान्तक बाद ओकरसभक स्मारक सेहो ओहीमे बना देल गेल रहैक । ओकरसभक द्वारा कएल गेल एहि त्यागेक परिणाम अछि जे कोनो प्रकारक भेद-विभेद नहि रहि गेल। ओ इलाका स्वर्ग बनि गेल ।

“हमसभ भारत माताक संतान छी । हमरसभक ओएह आराध्य, ओएह अभिष्ट छथि ।”

-गामक-गाम इएह भाव पसरि गेल आ अखनहु सदिखन ई बात लोकक मोनमे गुंजित होइत रहैत अछि ।

(समाप्त)

समय-समयपर खास कए नवीन पुस्तकक प्रकाशनक बाद फेसबुक/व्हाट्सएपपर चर्चा होइत रहल अछि । तकर किछु महत्वपूर्ण अंश संदर्भक हेतु पुनःप्रेषित कए जा रहल अछि ।

प्रकाशित पुस्तकः**बदलि रहल अछि सभ किछु**

प्रसिद्ध विद्वान एवम् मैथिलीक महाकवि माननीय श्री बुद्धिनाथ झाजीक टिप्पणी (व्हाट्सएपक अरुणिमा साहित्यिक गोष्ठीसँ उद्धृत):-

“मैथिली साहित्यक एहेन 'एकांत सेवक' इएह टा। हिनक पोथी सब मात्र गनतीक लेल नहि, ओकर गुणवत्ताक संग आवरण, छपाइ, सफाइ, सब किछु उपरि-जुपरि।

सभ कीर्ति संग्रहणीय/ पठनीय अछि। जय मैथिली”

प्रोफेसर डाक्टर भीमनाथ झा:

नव उपहारक स्वागत ।

श्री लक्षमण झा सागर:

दू दर्जन सं बेसी मैथिलीक पोथी प्रकाशित छनि जकर कियो गोटे नोटिस नै लैत छथि। मैथिली साहित्य के अभगदशा लिखल छैक।जे समाज अपन साहित्य आ साहित्यकारक सुधि बुधि नै लेत। चर्चा धरि करबा मे कन्छी काटत तकर भगवाने मालिक।

Dr Raman Jha:

रवीन्द्र नारायण मिश्रपर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालयसँ शोधकार्य भऽ रहल अछि। सूचनार्थ ।

Dr Umesh Mandal

मैथिली साहित्यक उपन्यास विधा, जेकर भण्डार बहुत पैघ नहि अछि, ताहिमे अपनेक अनवरण लेखन बहुत किछु अछि। की अछि, केहेन अछि ओ तँ समीक्षक लोकनि कहता मुदा असाधारण ओ ह्लादकारी अछि, से तँ सबहक मुहसँ निकलिए सकैए। सादर हार्दिक बधाइ...

https://www.facebook.com/photo/?fbid=3022436554698002&set=a.1388340294774311

प्रकाशित पुस्तकः**बीति गेल समय**

https://www.facebook.com/photo/?fbid=2932602210348104&set=a.1388340294774311

प्रोफेसर डाक्टर भीमनाथ झा:

हम तँ एकरा उपन्यासक 'उपन्यासे' बुझै छी। कथा जा पूर्णताकेँ नहि प्राप्त क' लिऐ ताधरि बढैत रहय, अर्थात् वार्ता सय राउंड तँ चलबेक चाही । समर्थन आ शुभकामना अपनेक संग अछि ।

प्रोफेसर डाक्टर बिभूति आनन्द

एहि ऊर्जा केँ नमन

प्रोफेसर डाक्टर रमण झा:

बहुत-बहुत शुभकामना आ बधाइ !

डाक्टर उमेश मंडल:

' बीति गेल समय' बहुत नीक शीर्षक...! हार्दिक बधाइ..!

प्रकाशित पुस्तकः**प्रलयक परात**

https://www.facebook.com/photo/?fbid=2831911753750484&set=a.1388340294774311

प्रोफेसर (डाक्टर) भीमनाथ झाः

अहाँक लेखन ऊर्जाक अभिनन्दन...

श्री हितनाथ झा:

संख्यात्मक दृष्टिएँ तँ हिनक पोथी डेढ़ दर्जन अछिये , गुणात्मक दृष्टिसँ सेहो हिनक लेखनी महत्वपूर्ण अछि । एकान्त साधक श्री रवीन्द्र नारायण मिश्रजी संप्रति लिखिए रहल छथि से अनवरत । स्वागत ।

Kedar Kanan

हिनक रचनाशीलता मोहित आ प्रेरित करैत अछि ।

प्रकाशित पुस्तकः'**ढहैत देबाल**'

https://www.facebook.com/photo?fbid=2615244298750565&set=a.1388340294774311

प्रोफेसर डा. भीमनाथ झा

'ढहैत देबाल' भने नाम राखि लियौ अपने, हम तँ जोड़ाइत देबाल सैह मानब । तीन-चारि मासपर एक पोथी--- मैथिली साहित्यक देबाल अपने जोड़ि रहलहुँ अछि । बधाइ!

प्रोफेसर **डा.रमण झा:**

गद्यमे उपन्यास आ पद्यमे महाकाव्य जँ केओ एकहुटा लिखि लैत छथि तऽ ओ यशस्वी साहित्यकार कहबैत छथि आ जे जतेक अधिक संख्या बढ़बैत छथि से ततेक----। मैथिलीमे हमरा जनैत विदितजी उपन्यासक संख्यामे सभसँ आगाँ छथि आ लगैए जेना अहीँ हुनका पकड़ि सकबनि। बहुत बहुत **बधाई** आ शुभकामना।

Dr.**Bibhuti Anand**

मैथिलीक सौभाग्य जे अहाँ सन ऊर्जावान लेखक प्राप्त भेलै..

https://www.facebook.com/photo?fbid=2615244298750565&set=a.1388340294774311

मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार आदरणीय श्री लक्ष्मण झाजी लिखैत छथि(Whatsapp सँ उद्धृत):-

22/3/2022

बरका काज क रहल छी। असली मैथिलीक सेवा इएह छी। हमरा जानकारी अनुसार मैथिली साहित्यक उपन्यास विधाक एतेक पोथी आर किनको नै छनि। से एक पर एक।

भगवती अहाँ के असीम उर्जा देथि आ हमरा साहित्य के अहाँ आर अपन अनुपम कृत सब दैत रही। हमर असीम मंगल कामना!

24/07/2022(Whatsapp) **प्रोफेसर(डा.) विजयेन्द्र झा:**

मैथिली साहित्य अपनेक एहि 19 गोट पोथीसँ समृद्ध भेल आ' जहिआ कहियो मैथिली साहित्यक इतिहास लिखल जाएत, तँ मैथिली- साहित्यकारक श्रेणीमे अपनेक नामकें अवश्य अमरत्व प्रदान करत। किओ एकटा उपन्यास लिखि साहित्य मध्य अपन स्थान सुरक्षित करबा लैत छथि। ई तँ संख्यामे चौदह गोट अछि। एहि सुकृतिक लेल सदा मैथिली साहित्य अपनेक ऋणी रहत।बहुत-बहुत शुभकामना।

प्रणाम!👏

---

cover---पाथेय2.pdf

आदरणीय श्री आर एन मिश्र जी,

नमस्कार,

अपनेक आलेख, जे अपनेक पुस्तक "पाथेय" सँऽ उद्धृत छल, खूब नीक लागल। प्रथम तऽ ओकर भाषा एवं शैली आ दोसर अपनेक सहृदयता, विचारक सकारात्मकता, जे ओहि में प्रतिबिंबित होईत छल, से सब आनन्द आ प्रेरणा दायक छल।

पढ़ब आरम्भ कयलोपरांत हम सौंसे पढ़ैत गेलहुँ ताधरि, जाधरि सम्पन्न नहिं भऽ गेल। एकर कारण जे अपने सरिपहुं लिखलहुँ अछि जे आनों लोक सभ कें जीवन में एही प्रकारक अनुभव भेल होन्हि। अनकर तऽ नहिं कहि सकब, परंच हमर तऽ मिलैत छल। अपने अपन अनुभव पर आधारित कर्म-जीवन यात्राक अंश केर बहुत नीक जेकाँ लिपि बद्ध कयलहुँ अछि।

बाल मुकुन्द चौधरी
ग्राम : बसैठ चानपुरा (पछवारि टोल)
प्रवास : न्यु पनवेल (नवी मुम्बई)

13:07

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन किनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)(पेपरबैक)

https://pothi.com/pothi/node/195476.

भोरसँ साँझ धरि (सजिल्द)

https://pothi.com/pothi/node/209754.

प्रसंगवश(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195527.

स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)

https://pothi.com/pothi/node/195487.

फसाद(कथा संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195510.

नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)

https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795

लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208632.

बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/209281.

राष्ट्र मंदिर(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/210181.

संयोग(कथा संग्रह)

https://rb.gy/edit6k.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन किनल जा सकैत अछि ।